हिन्दी दैनिक पटना (बिहार) तथा लुधियाना (पंजाब) से एक साथ प्रकाशित

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com/Email:-Newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना, गुरूवार | 13 फरवरी 2025 | वर्ष : 03 | अंक : 43 | पृष्ठ - 12 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर में पूजा-अर्चना की

एजेंसी

दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने बुधवार को समाज सुधारक रविदास की जयंती पर यहां करोल बाग स्थित मंदिर में पूजा-अर्चना की। भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के साथ नड्डा मध्य दिल्ली में श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर गए और वहां आयोजित कीर्तन में भी शामिल हुए।केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने समाज सुधारक गुरु रविदास की जयंती पर सभी को बधाई दी। उन्होंने ह्यएक्सह्न पर एक पोस्ट में कहा, ह्यह्यसंत शिरोमणि गुरु रविदास जी की जयंतीके पावन अवसर पर नई दिल्ली स्थित श्री गुरु रविदास विश्राम धाम मंदिर में दर्शन व पूजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सौहार्दपूर्ण, समृद्ध एवं न्यायप्रिय समाज की रचना में उनके महान विचार हम सभी के लिए प्रेरणादायक हैं।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार संत रविदास के विचारों को चरितार्थ करते हुए समाज के सभी वर्गों के विकास में भागीदारी तय करने और उनके जीवनस्तर में सुधार लाने के लिए कृतसंकल्पित है।

फ्रांस से अमेरिका दौरे के लिए रवाना हुए पीएम मोदी, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से करेंगे मुलाकात

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने विदेश दौरे के दूसरे चरण के लिये अमेरिका के लिये रवाना हो गये। प्रधानमंत्री, अमेरिका दौरे पर अमेरिका के नये राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप से मुलाकात करेंगे। ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की शुरूआत के बाद यह उनकी पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी

एजेंसी

नई दिल्ली:मोदी फ्रांस से अमेरिका की यात्रा के लिए रवाना हो गए हैं। यहां उनकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने विदेश दौरे के दूसरे चरण के लिये अमेरिका के लिये रवाना हो गये। प्रधानमंत्री, अमेरिका दौरे पर अमेरिका के नये राष्ट्रपति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने विदेश दौरे के दूसरे चरण के लिये अमेरिका के लिये रवाना हो गये। प्रधानमंत्री, अमेरिका दौरे पर अमेरिका के नये राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप से मुलाकात करेंगे। ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की शुरूआत के बाद यह उनकी पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य भारत-अमेरिका रणनीतिक संबंधों को मजबूत करना होगा, खासकर व्यापार, रक्षा और ऊर्जा सहयोग के क्षेत्रों में। अधिकारियों ने सोमवार को इस यात्रा की घोषणा की, हालांकि यात्रा की तारीख अभी तक निर्धारित नहीं की गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस दौरे के दौरान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक्शन समिट की सह-अध्यक्षता की और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री के अनुसार, दोनों नेताओं ने पेरिस से मारसेई की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति विमान में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने

कहा कि भारत-फ्रांस संबंधों ने एक नई ऊंचाई छू ली है।फ्रांस में मीडिया को जानकारी देते हुए विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों ने यूरोप, पश्चिम एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में हालिया भू-राजनीतिक घटनाक्रमों पर विचार-विमर्श किया। इसके साथ ही, दोनों नेताओं ने वैश्विक और क्षेत्रीय महत्व के मुद्दों पर भी चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने पेरिस में आयोजित एआई एक्शन समिट की सह-अध्यक्षता की और भारत-फ्रांस सीईओ फोरम में भाग लिया। इसके बाद, वे मारसेई के लिए रवाना हुए।

मैक्रों का विशेष सम्मान, राष्ट्रपति विमान में हुई चर्चा

विदेश सचिव ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों फ्रांस के ह्यराष्ट्रपति विमानह्न से मारसेई गए। इसे राष्ट्रपति मैक्रों की ओर से ह्यएक असाधारण सम्मान और दोनों नेताओं के बीच गहरे व्यक्तिगत विश्वास का प्रतीकह्न बताया गया। मिस्त्री ने कहा, "आप कह सकते हैं कि भारत-फ्रांस के संबंध वास्तव में नई ऊंचाइयों को छू चुके हैं।

रणनीतिक साझेदारी पर विस्तृत चर्चा

मारसेई पहुंचने के बाद भी दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय चर्चा जारी रही। विदेश सचिव ने बताया कि इस दौरान भारत-फ्रांस की गहरी और बहुआयामी रणनीतिक साझेदारी के सभी पहलुओं पर विचार किया गया। उन्होंने कहा कि रक्षा, अंतरिक्ष, असैन्य परमाणु सहयोग, स्वास्थ्य और आपसी संबंधों जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की गई। इसके अलावा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) द्विपक्षीय वार्ता का एक प्रमुख विषय रहा, जहां दोनों देशों ने इस क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत करने पर चर्चा की।

LoC के पास दो जवानों की शहादत पर भड़का अमित शाह का गुस्सा,

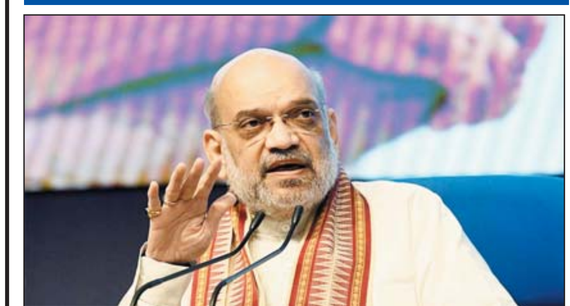

आतंकवाद को पूरी तरह उखाड़ फेंकने का निर्देश दिया

एजेंसी

जम्मू-कश्मीर: जम्मू-कश्मीर के अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास मंगलवार को संदिग्ध आतंकवादियों की ओर से किए गए एक आईईडी विस्फोट में सेना के कैप्टन समेत दो जवान शहीद हो गए, जबकि एक अन्य घायल हो गया। हमले के तुरंत बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सुरक्षा बलों को आतंकवाद को पूरी तरह उखाड़ फेंकने के लिए कई निर्देश दिये हैं। हम आपको बता दें कि शहीद सैनिकों की पहचान कैप्टन करमजीत सिंह बख्शी और नायक मुकेश के रूप में हुई है। यह हमला ऐसे समय में हुआ, जब सेना की जम्मू स्थित व्हाइट नाइट कॉर्प्स इकाई के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) लेफ्टिनेंट जनरल नवीन सचदेवा ने सोमवार को राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा पर शत्रुतापूर्ण गतिविधियों का जायजा लिया था। सेना ने आईईडी विस्फोट में दो जवानों के शहीद होने की पुष्टि की और कहा, हमारे जवानों ने क्षेत्र की घेराबंदी कर दी है और तलाश अभियान जारी है।अधिकारियों ने बताया कि जवान भट्टल इलाके में गश्त कर रहे थे, तभी दोपहर तीन बजकर 50 मिनट पर एक अग्रिम चौकी के पास शक्तिशाली विस्फोट हुआ और वे इसकी चपेट में आ गए। उन्होंने बताया कि घायल जवानों को अस्पताल ले जाया गया, जहां एक कैप्टन समेत दो सैन्यकर्मियों की मौत हो गई। अधिकारियों के मुताबिक, विस्फोट में एक अन्य जवान घायल हो गया और उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। सेना की जम्मू स्थित व्हाइट नाइट कॉर्प्स इकाई ने दोनों जवानों के सर्वोच्च बलिदान को सलाम किया।

राष्ट्रपति, वित्तमंत्री पर गांधी परिवार की टिप्पणी संविधान का अपमान: सम्राट चौधरी

एजेंसी

पटना: पटना। उपमुख्यमंत्री-सह-वित्तमंत्री सम्राट चौधरी ने देश की पहली महिला वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा के कटाक्ष की निंदा करते हुए कहा कि पिछले 10 साल से केंद्रीय सत्ता से बाहर रहने के बाद भी गांधी परिवार लोकतंत्र की सच्चाई को स्वीकार नहीं कर पाया। उनकी रस्सी जल गई पर ऐंठन बाकी है।चौधरी ने कहा कि पहले श्रीमती सोनिया गांधी ने आदिवासी समुदाय की महिला राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू को "बेचारी महिला" (पूअर लेडी) कह कर उनका अपमान किया, राहुल गांधी ने उनके अभिभाषण को "बोरिंग" बताया और अब पहली बार की सांसद प्रियंका वाड्रा लोकसभा में लगातार आठवीं बार बजट पेश करने वाली यशस्वी वित्त मंत्री श्रीमती सीतारमण के आर्थिक ज्ञान पर सवाल उठा रही हैं।उन्होंने कहा कि प्रियंका वाड्रा का बयान दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्हें अभी भी लगता है कि यहां राजतंत्र है। उनके परिवार से कोई भी सत्ता में नहीं है। यह दर्द या काम्प्लेक्स उनके बयानों से टपकता रहता है।

वक्फ कानून से सबको मिलेगा लाभ, आज संसद में पेश की जाएगी संयुक्त समिति की रिपोर्ट

एजेंसी

दिल्ली: वक्फ (संशोधन) विधेयक की जांच करने वाली संसद की संयुक्त समिति की रिपोर्ट 13 फरवरी को संसद में पेश की जाएगी। इसे 1 फरवरी को लोकसभा में पेश किया गया था। समिति ने गुरुवार को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को रिपोर्ट सौंपी थी। पिछले हफ्ते बहुमत से अपनाई गई जेपीसी ने कहा कि उसकी रिपोर्ट में सत्तारूढ़ भाजपा के सदस्यों द्वारा सुझाए गए बदलाव शामिल हैं, जिससे विपक्ष ने इस अभ्यास को वक्फ बोर्डों को नष्ट करने का प्रयास करार दिया। वक्फ (संशोधन) विधेयक पर संसद की संयुक्त समिति ने 15-11 बहुमत से मसौदा कानून पर रिपोर्ट को अपनाया।विपक्षी सदस्यों ने रिपोर्ट

पर असहमति नोट प्रस्तुत किए। भाजपा सदस्यों ने जोर देकर कहा कि पिछले साल अगस्त में लोकसभा में पेश किया गया विधेयक वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में आधुनिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही लाने का प्रयास करता है। वहीं विपक्ष ने इसे मुस्लिम समुदाय के संवैधानिक अधिकारों पर हमला और वक्फ बोर्ड के कामकाज में हस्तक्षेप बताया है।प्रस्तावित वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक ने भारतीय मुसलमानों के बीच आक्रोश और भविष्य के बारे में अनिश्चितता पैदा कर दी है, प्रमुख आवाजों ने कानून लागू होने पर देशव्यापी विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी है। इनोसेंट नेटवर्क द्वारा मराठी पत्रकार संघ में आयोजित एक व्याख्यान श्रृंखला में वक्ताओं ने इस विधेयक को कानूनी सुधारों की आड़ में वक्फ संपत्तियों को जब्त करने का एक सुनियोजित प्रयास बताया।

प्रणब मुखर्जी के बेटे अभिजीत मुखर्जी ने छोड़ा टीएमसी का साथ, कांग्रेस में हुई घर वापसी

एजेंसी

पश्चिम बंगाल: पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के बेटे अभिजीत मुखर्जी, जो 2021 में टीएमसी में शामिल हुए थे, बुधवार को कांग्रेस पार्टी में लौट आए। कांग्रेस पार्टी में औपचारिक रूप से वापसी के बाद अभिजीत ने दूसरी पार्टी में शामिल होने को गलती बताया। गौरतलब है कि पिछले साल जून में अभिजीत ने कांग्रेस पार्टी में दोबारा शामिल होने की इच्छा जताते हुए कहा था, 'टीएमसी की कार्य संस्कृति कांग्रेस से बिल्कुल भी मेल नहीं खाती है।'

इससे पहले आज, कांग्रेस नेता गुलाम अहमद मीर ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया कि वह (अभिजीत मुखर्जी) पिछले साल से नेतृत्व और राज्य पीसीसी के संपर्क में थे। आज, यह निर्णय लिया गया है कि अभिजीत मुखर्जी (प्रणब मुखर्जी के बेटे) फिर से कांग्रेस में शामिल होंगे। टीएमसी द्वारा पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव अकेले लड़ने पर कांग्रेस नेता ने कहा कि कुछ अन्य दल भी थे जिन्होंने अकेले चुनाव लड़ा था जहां हाल ही में चुनाव हुए थे। कई बार वे कहते हैं कि कांग्रेस एक बड़ी पार्टी है, इसलिए कांग्रेस को दूसरों को साथ लेना चाहिए। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस ने हमेशा अन्य सहयोगियों को जगह दी है।

गौरव गोगोई की पत्नी के तार ISI से जुड़े', भाजपा ने लगाया बड़ा आरोप, कांग्रेस से मांगा जवाब

एजेंसी

असम : असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने 2013 में उनकी शादी के बाद 12 साल तक पत्नी की ब्रिटिश नागरिकता बरकरार रखने के मुद्दे पर कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई का नाम लिए बिना उन पर हमला बोला। उन्होंने एलिजाबेथ कोलबर्न के खिलाफ आईएसआई संबंधों के आरोपों का भी उल्लेख किया और कहा कि सवालों का जवाब दिया जाना चाहिए। उन्होंने एक्स पर लिखा कि आईएसआई से संबंध, युवाओं को ब्रेनवॉशिंग और

कट्टरपंथ के लिए पाकिस्तान दूतावास में ले जाने और पिछले 12 वर्षों से भारतीय नागरिकता लेने से इनकार करने के आरोपों के संबंध में गंभीर सवालों के जवाब दिए जाने की जरूरत है। सीएम ने आगे लिखा कि इसके अतिरिक्त, रूपांतरण कार्टेल में भागीदारी और राष्ट्रीय सुरक्षा को अस्थिर करने के लिए जॉर्ज सोरोस सहित बाहरी स्रोतों से धन प्राप्त करना गंभीर चिंताएं हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि कुछ बिंदु पर, जवाबदेही आवश्यक होगी। केवल ज़िम्मेदारी से ध्यान भटकाना या दूसरों पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास आसान पलायन मार्ग के रूप में काम नहीं करेगा।

41 साल बाद न्याय, 1984 सिख दंगा केस में सज्जन कुमार दोषी करार, जानें कब और क्या होगी सजा?

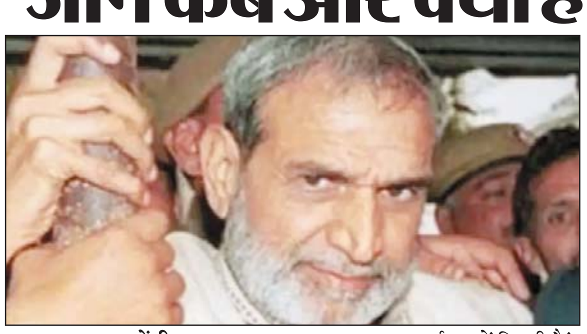

एजेंसी

दिल्ली : दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने बुधवार को 1984 सिख विरोधी दंगा मामले में पूर्व कांग्रेस सांसद सज्जन कुमार को दोषी करार दिया। यह मामला 1 नवंबर 1984 को सरस्वती विहार इलाके में पिता-पुत्र की हत्या से जुड़ा है। मामले को सजा पर बहस के लिए 18 फरवरी को सूचीबद्ध किया गया है। सज्जन कुमार वर्तमान में दिल्ली कैंट में एक अन्य सिख विरोधी दंगा मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। मामला 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान यहां सरस्वती विहार इलाके में दो व्यक्तियों की हत्या से संबंधित है। अदालत ने एक नवंबर 1984 को जसवंत सिंह और उनके बेटे तरुणदीप सिंह की हत्या से संबंधित मामले में अंतिम दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। 16 दिसंबर, 2021 को अदालत ने कुमार के विरुद्ध आरोप तय किए और उनके खिलाफ ह्यह्यप्रथम दृष्टयाह्नह्न मामला सही पाया। अभियोजन पक्ष के अनुसार, घातक हथियार लिए भीड़ ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या का बदला लेने के लिए बड़े पैमाने पर लूटपाट, आगजनी और सिखों की संपत्ति को नष्ट किया था। अभियोजन पक्ष ने आरोप लगाया कि भीड़ ने घर में घुसकर जसवंत और उनके बेटे की हत्या कर दी और सामान लूटकर उनके घर को आग के हवाले कर दिया। मामले में सुनवाई करने वाली अदालत के अनुसार प्रथम दृष्टया यह तय करने के लिए पर्याप्त सबूत हैं कि कुमार न केवल एक भागीदार थे,

संत रविदास जयंती पर सीएम नीतीश का लालू पर बिना नाम लिए निशाना, बोले-

पहले वाली सरकार ने कुछ नहीं किया

एजेंसी

पटना: बोले -इस मौके पर सीएम नीतीश ने विपक्ष पर निशाना भी साधा। हालांकि, उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया लेकिन बिहार में पूर्व की लालू सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि हम लोगों ने समाज के सभी तबकों के लिए काम किया है। हमने उनका नामकरण तक किया। पहले कहां कोई करता था।बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने संत रविदास जयंती पर राज्यवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। इस मौके पर पटना के बापू सभागार में कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में शिरकत कर रहे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों को और आगे बढ़ाने के लिए वह काम करते रहेंगे। सीएम नीतीश ने कहा कि बिहार के विकास के लिए हमलोग

निरंतर काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री बुधवार को बापू सभागार में आयोजित विकास मित्रों का संवर्धन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।इस मौके पर उन्होंने विपक्ष पर भी निशाना साधा और कहा कि वर्ष 2005 के पहले बिहार की स्थिति काफी खराब थी। 2005 के पहले वाली सरकार ने बिहार के विकास के लिए कुछ नहीं किया है। सीएम नीतीश कुमार ने कहा कि संत रविदास ने समाज में छुआछुत, भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई तथा समाज में समानता एवं भाईचारे का संदेश दिया था और उनके योगदान को कभी भूलाया नहीं जा सकता है।सीएम नीतीश कुमार ने आगे कहा कि हमने शुरू से ही सभी तबकों का विकास किया फिर चाहे वो हिंदू हो, मुस्लिम हो, ऊंची जाति के हो, दलित हो, पिछड़ा हो या महादलित हो। सभी के लिए हमने काम किया है। हमने वंचित वर्गों के लोगों के लिए काम किया और उन्हें मुख्यधारा से जोड़ा।महादलित समुदाय के लोगों के लिए विशेष योजनाएं चलाई गई हैं। साल 2009 में सरकारी योजनाओं का लाभ महादलित समुदाय तक पहुंचाने के लिए महादलित विकास मिशन की स्थापना की गई। विकास योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए विकास मित्रों का चयन किया गया और आज नौ हजार सात सौ सात विकास मित्र काम कर रहे हैं।

यंग इंडिया के बोल सीजन 5 में युवा कांग्रेस के प्रतिभागियों ने दिखाया हुनर

युवा कांग्रेस ने आयोजित किया यंग इंडिया के बोल सीजन 5

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

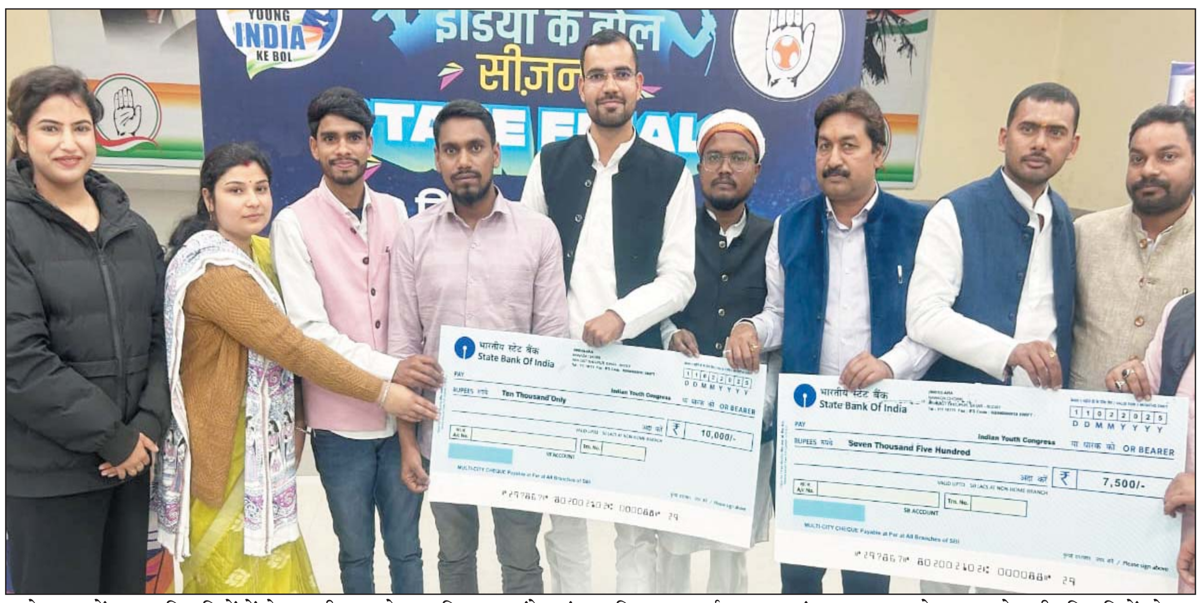

पटना. बुधवार, 12 फरवरी, 2025बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रखर वक्ता चयन कार्यक्रम यंग इंडिया के बोल सीजन 5 का आयोजन प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम के राजीव गांधी सभागार में युवा कांग्रेस के अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीब दास, बिहार युवा कांग्रेस प्रभारी रौशनी कुशल जायसवाल और यंग इंडिया के बोल सीजन 5 के बिहार प्रभारी युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता युवराज सिंह यादव के नेतृत्व में आयोजित किया गया।
यंग इंडिया के बोल सीजन 5 के विजेता के रूप में अबू जफर प्रथम स्थान पर रहें उन्हें दस हजार रुपए इनाम राशि के रूप में मिला वहीं
द्वितीय स्थान पर रंजीत कुमार रहें और महिला वर्ग से शिखा सिंह विजेता बनी जिन्हें क्रमशः 7500 रुपए इनाम राशि के रूप में मिला।
मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद बिहार कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने प्रवक्ता के गुणों को विस्तार से बताया और कहा कि आने वाले समय में आप प्रतिभागियों में से चयनित होने पर समाज के समस्याओं को मुखरता के साथ और पार्टी की विचारधारा को रखेंगे। सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं भी प्रेषित किए।
बिहार युवा कांग्रेस के अध्यक्ष गरीबदास ने कहा कि युवा कांग्रेस यंग इंडिया के बोल द्वारा लगातार युवा कांग्रेस के साथियों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित किया जाता रहा है। अच्छे वक्ताओं को पार्टी के विचारधारा से जोड़कर काम करने के लिए यह कार्यक्रम वृहद मंच उपलब्ध करा रहा है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप राहुल गांधी और कांग्रेस के विचारधारा के साथ जुड़कर समाज के दर्पण के रूप में कार्य करें। युवा कांग्रेस इस मंच के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को पूरा मौका दे रही है जिसमें वें समाज के अंदर व्याप्त मुद्दों को बड़े फलक पर रख सकते हैं।
बिहार युवा कांग्रेस की प्रभारी रौशनी कुशल जायसवाल ने बिहार के युवाओं को प्रतिभागी के रूप में शामिल होने पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए देश के वर्तमान हालात में युवाओं की सहभागिता बेहद जरूरी है।
यंग इंडिया के बोल सीजन 5 के राष्ट्रीय प्रवक्ता और बिहार प्रभारी युवराज सिंह यादव ने इस कार्यक्रम की रूपरेखा बताई और उपस्थित प्रतिभागियों को इस सीजन और कांग्रेस की विचारधारा की व्यापकता के बारे में विस्तार से बताया।
यंग इंडिया के बोल सीजन 5 में निर्णायक मंडल के रूप में प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़, प्रवक्ता डॉ स्नेहाशीष वर्धन पाण्डेय, डॉ मधुबाला, एवं पत्रकार रवि नारायण मौजूद रहें।
इस कार्यक्रम में युवा कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी रौशनी कुशल जायसवाल, प्रदेश अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीब दास, यंग इंडिया के बोल सीजन 5 के बिहार प्रभारी युवराज सिंह यादव, विशाल यादव, सुंदरम पाठक, सोनू अग्रवाल, अमितेश पांडेय,अजमेर करीम, शशांक रंजन, कमालुद्दीन सहित अन्य नेतागण मौजूद रहें।

खरसंडा ?में धूमधाम से मनाई गई रविदास की 649 वीं जयती

हुसैनगंज संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

हुसैनगंज(सिवान) हुसैनगंज प्रखण्ड के खरसंडा गांव में बुधवार को बसपा कार्यकर्ता कन्हैया राम की अध्यक्षता में शिरोमणि संत गुरु रैदास की 649 वीं जयंती बड़े धुमधाम से मनाई गई।इस अवसर पर सुबह सैकड़ों की संख्या में क्षेत्र के पुरुष,महिला एवं बच्चों ने गाजे बाजे के साथ गाँव में प्रभातफेरी निकाली।जिसमें "मन चंगा तो कठौती में गंगा" की जयकारे से पूरा वातावरण गुंजायमान हो गया।वहीं संत रविदास के तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए पूजा अर्चना कुछ गयी। मौके पर उपस्थित कई वक्ताओं ने रविदास जी चरित्र चित्रण पर प्रकाश डालते हुआ कहा कि गुरु रैदास काफी आध्यात्मिक पुरुष होने के साथ पाखंड एवं अंधविश्वास के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपने दोहा में उद्धृत किया है कि जाति जाति में जाति है,जो केतन के पात। रैदास मानुष ना जुड़े, जब तक जाति न जात।।" "जनम जात मत पूछिए, का जात अरु पात। रैदास पूत सब प्रभु के, कोए नहि जात कुजात।। "मन्दिर मस्जिद दोऊ एक हैं इन मह अंतर नाहि।

बाल श्रम, बाल यौन शोषण के संबंध में किया गया जागरूक

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के बहादुरपुर गांव में नारायणी सेवा संस्थान के द्वारा बाल विवाह मुक्त अभियान के तहत बाल विवाह, बाल श्रम, बाल यौन शोषण, बाल व्यापार के विरुद्ध ग्रामीणों के बीच जागरूकता अभियान चलाया गया। मौके नारायणी सेवा संस्थान के समन्वयक अखिलेंद्र सिंह, एएनएम सोनी ठाकुर,आशा रम्भा देवी समेत कई अन्य मौजूद रहें। इस दौरान ग्रामीणों को बाल विवाह, बाल यौन शोषण, बाल श्रम को रोकने के लिए निःशुल्क हेल्पलाइन नम्बर 1098, पुलिस हेल्पलाईन नम्बर 112 के बारे में जानकारी दी गयी। ऐसे मामले में सूचना देने वाले का नाम हमेशा गोपनीय रखी जाती है। बाल विवाह को रोकने के लिए स्थानीय प्रशासन अनुमण्डल अधिकारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, थानाध्यक्ष को भी सूचना देकर बाल विवाह जैसे सामाजिक कुरीतियों को रोकी जा सकती है। बाल विवाह, बाल श्रम, बाल यौन, शोषण सिर्फ सामाजिक बुराई ही नहीं बल्कि कानूनन अपराध है। मौके पर बताया गया कि बाल विवाह अधिनियम 2006 के तहत 18 साल से कम उम्र की लड़की से शादी करने वाले दूल्हा को 2 साल की सजा और एक लाख रुपए जुमार्ना या दोनों हो सकता है। शादी में शामिल होने या इसके लिए प्रेरित करने वालों को भी दो साल की सजा और एक लाख रुपए जुमार्ना या दोनों किया जाएगा। इसके अलावा जो माता पिता अगल अपने बच्चों की कम उम्र में शादी करते हैं तो उन्हें भी दो साल की सजा और एक लाख रुपए का जुमार्ना या दोनों होगा। दोषी पाए जानें लोगों के ऊपर गैर जमानती केस दर्ज हो सकता है।

पैसेंजरों से भरी अनियंत्रित टोटो पलटनें से आधा दर्जन घायल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के लखनपुर गोलम्बर पर अनियंत्रित टोटो पलटनें से आधा दर्जन लोग घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया। घायल कर्ण कुदरिया गांव निवासी 24 वर्षीय सुनीता कुमारी,39 वर्षीय मैना देवी,9 वर्षीय सुधु राय,8 वर्षीय विक्की कुमार,10 वर्ष उत्तम कुमार और 2 वर्षीय बिटू कुमार हैं। ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ ललिता कुमारी ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज किया और सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया। घटना के बारे में परिजनों ने बताया कि एन एच 227 ए राम जानकी पथ पर मशरक के कर्ण कुदरिया गांव से मुख्य सड़क पर टोटो में सवार होकर मशरक बाजार आ रहें थें कि टोटो अनियंत्रित होकर पलट गई जिसमें सभी घायल हो गए। मौके पर ग्रामीणों की मदद से इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया। मौके पर पहुंची थाना पुलिस जांच में जुटी है।

बसंतपंचमी महोत्सव में नटपा की प्रशिक्षु नृत्यांगनाओं ने अपने बेहतरीन नृत्य की प्रस्तुति से किया मंत्रमुग्ध

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सीवान में बुधवार को कला संस्कृति एवं युवा विभाग और सीवान जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में अंबेडकर भवन में आयोजित बसंतपंचमी महोत्सव में जिले की नृत्य और संगीत कला को समर्पित प्रसिद्ध संस्था नृत्योदय द परफॉर्मिंग आर्ट्स (नटपा) की प्रशिक्षु नृत्यांगनाओं ने नृत्य की विभिन्न शैलियों की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम में मौजूद अधिकारियों समेत दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम की जिला पदाधिकारी मुकुल कुमार गुप्ता द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन किए जाने के बाद नटपा की ओर से खुशबू कुमारी, श्रेया द्विवेदी, श्रुति उर्फ कुमारी, अंजली कुमारी और संचिका कुमारी ने सरस्वती वंदना पर समूह नृत्य की प्रस्तुति दी। वहीं बाद में ब्रज में होली पर आधारित नृत्य में खुशबू कुमारी, श्रेया द्विवेदी, श्रुति कुमारी, अंजली कुमारी और श्रेया तिवारी ने होली गीत की प्रस्तुति देकर लोगों की जमकर वाहवाही बटोरी। बता दें कि होली गीत में श्रेया तिवारी ने कृष्ण और सरस्वती वंदना में संचिका कुमारी ने मां सरस्वती की जीवंत भूमिका अदा कर लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया। वहीं कार्यक्रम की बेहतरीन प्रस्तुति के लिए उप विकास आयुक्त ने नटपा को मोमेंटो प्रदान किया जिसे नटपा के प्रबंध निदेशक अभिषेक श्रीवास्तव की पत्नी और संगीत शिक्षिका श्वेता कुमारी ने प्राप्त किया।

भाजपा प्रदेश कार्यालय में मनाई गई संत रविदास जयंती, प्रदेश के पदाधिकारियों ने उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि कर दी श्रद्धांजलि

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

■ संत रविदास ने छुआछूत, जातिवाद के खिलाफ उठाई आवाज, समाज में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता : लखिन्द्र पासवान

■ संत रविदास के ओजस्वी विचारों के दिव्य प्रकाश से मानवता का सर्वदा कल्याण होता रहेगा : लखिन्द्र पासवान

पटना, 12 फरवरी। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज संत शिरोमणि रविदास जी की जयंती मनाई गई। एससी मोर्चा के तत्वाधान में आयोजित इस कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने संत रविदास की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और उन्हें नमन किया।
भाजपा एससी मोर्चा के अध्यक्ष लखिन्द्र पासवान ने कहा कि संत रविदास जयंती पर आज हम इकट्ठा हुए हैं। संत रविदास ने जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाई एवं समाज को समानता और भाईचारे का संदेश दिया। समाज में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने लोगों को संत शिरोमणि की जयंती पर सभी को बधाई दी।
उन्होंने कहा कि आज केंद्र की सरकार हो या प्रदेश की सरकार, संत रविदास और बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के बताए रास्ते पर आगे चल रही है। आज सरकार कमजोर वर्ग के लोगों को मुख्यधारा में लाने के प्रयास में जुटी है।पासवान ने कहा कि शिरोमणि ने मानव कल्याण, राष्ट्रसेवा और समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए अपने जीवन का प्रत्येक क्षण होम कर दिया। उनके ओजस्वी विचारों के दिव्य प्रकाश से मानवता का सर्वदा कल्याण होता रहेगा।
उन्होंने सभी लोगों से संत शिरोमणि रविदास के बताए रास्ते पर चलने का आह्वान किया, जिससे समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर किया जा सके।

बस ने बाइक सवार देवर भौजाई घायल, भौजाई सदर अस्पताल छपरा रेफर

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक शीतलपुर एस एच 73 पर मशरक और तरैया थाना क्षेत्र के सीमावर्ती मुन्नी मोड़ रेलवे ढाला के पास अनियंत्रित बस की चपेट में आने से बाइक सवार देवर भौजाई घायल हालत में इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया। घायल पानापुर थाना क्षेत्र के धेनुकी गांव निवासी अमरजीत कुमार की 26 वर्षीय पत्नी अनुराधा कुमारी और अंकित कुमार हैं। घायलों को पुलिस 112 की टीम ने इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ एस के विधार्थी ने प्राथमिक उपचार कर घायल भौजाई को सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया। बताया गया कि दोनों बाइक पर सवार होकर गलिमापुर नैहर से मशरक के रास्ते धेनुकी जा रहें थे कि पटना से सिवान जा रहीं अनियंत्रित बस ने बाइक सवार को अपने चपेटे में ले लिया।

जेईई मेंस के रिजल्ट में आर्यन राज ने मारी बाजी

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरख के गनौली निवासी आर्यन राज ने जेईई मेंस के घोषित रिजल्ट में कठिन परिश्रम के बाद प्रवेश प्राप्त कर लिया जिससे पूरे गनौली गांव में खुशी का माहौल हो गया और एक दूसरे को गले लगा कर लोगों ने बधाई दी।बताते चलें कि आर्यन राज के पिता सरकारी विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर हैं उनकी माता रंजना कुमारी उत्क्रमित मध्य विद्यालय पचभिडा में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं इनके दादी खजूरी पंचायत के पूर्व सरपंच भी रह चुकी हैं आर्यन कुमार भाई में बड़ा है एवं एक उसकी छोटी बहन भी है इस पर आर्यन ने कहा कि मुझे ईश्वर की कृपा मिली तो माता-पिता के साथ-साथ अपने गांव प्रखंड और जिला का नाम रौशन करुंगा।बधाई देने वालों में शिक्षक अरुण कुमार पाठक, धर्मेंद्र कुमार सिंह, अरविंद सिंह चौहान, प्रखंड शिक्षक संघ के अध्यक्ष संतोष कुमार मुख्य रूप से हैं ।

महाकुंभ में श्रद्धलुओं को सुविधा देने में नाकाम रही एनडीए सरकार : चंद्रकिशोर पासवान

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी(बेगूसराय)महाकुंभ प्रयागराज में बिहार से स्नान के लिए जाने वाले श्रद्धालुओ की परेशानी, दुर्दशा और राज्य के रेलवे स्टेशनों पर बदइंतजामी को लेकर चंद्रकिशोर पासवान ने केंद्र की एनडीए सरकार पर गंभीर आरोप लगाए । उन्होंने कहा कि केंद्र और यूपी की एनडीए सरकार श्रद्धालुओं को जरुरी सुविधाएं देने में पूरी तरह नाकाम रही। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में महाकुंभ को लेकर प्रचार प्रसार तो खूब किया गया लेकिन व्यवस्था को संभालने और श्रद्धालुओं को सुविधा देने में एनडीए सरकार की विफलता सामने आ गई। महाकुंभ में जाने के लिए बिहार के रेलवे स्टेशनों पर महायुद्ध मचा हुआ है, यात्री अपने जान को जोखिम में डालकर यात्रा करने को मजबूर है। चंद्रकिशोर ने आरोप लगाया कि महाकुंभ के आयोजन में करोडों रुपये खर्च के बावजूद केंद्र और यूपी के सरकार के द्वारा जो व्यवस्था की गई थी सारी की सारी व्यवस्था फेल हो गई। बिहार के रेलवे स्टेशनों पर प्रयागराज जाने वाले श्रद्धालुओं का जन सैलाब उमर पड़ा है। रेलवे प्रशासन भीड़ को नियंत्रित करने में पूरी तरीके से नाकाम और बेबस दिख रही है। रेलवे स्टेशनों पर ट्रेनों के शीशे तोड़े जा रहे हैं, ट्रेनों पर पत्थरबाजी की जा रही है राज्य के रेलवे स्टेशनों पर अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई है। रेलवे मंत्रालय ने महाकुंभ को लेकर कोई भी मुकम्मल इंतजाम नहीं किया प्रयागराज जाने के लिए ट्रेनों की समुचित व्यवस्था भी नहीं की गई। यहां तक कि उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा सीमाओं को सील कर दिया गया है। जिसके फलस्वरुप लोगों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। बिहार से जाने वाले श्रद्धालु पैदल ही महाकुंभ में जाने को मजबूर है। श्रद्धालुओं को घंटो घंटो तक पैदल चलना पड़ रहा है उन्होंने महाकुंभ को लेकर उत्पन्न हुई अव्यवस्था और नाकामी पर सवाल उठाते हुए सारी व्यवस्था को तत्काल सुधारने की मांग की है।

मारपीट में आधा दर्जन से अधिक पर प्राथमिकी दर्ज

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

हुसैनगंज थाना के बघौनी निवासी अलन मांझी की पत्नी सविता देवी ने थाने में आवेदन देते हुए कहा है कि 9 फरवरी की शाम चार बजे मेरा पुत्र विशाल कुमार हुसैनगंज बाजार जा रहा था.इसी बीच हुसैनगंज अठघरवा मोहल्ला के 7 से 8 लोगों ने अपने घर के पास मेरे पुत्र को घेर लिए. वहीं जाति सूचक गाली देते हुए मारपीट कर उसका सिर फोड़ डाला.साथ ही उसके जेब से पांच हजार रुपए छीन लिए। घायल विशाल का इलाज हुसैनगंज पीएचसी में कराया गया है.थानाध्यक्ष विजय कुमार यादव ने बताया कि इस संदर्भ में सभी आरोपियों के विरुद्ध प्राथमिकी कर कार्रवाई की जा रही है.

जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में एसपी के आदेश पर सघन वाहन जांच अभियान

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सारण एसपी के निर्देश पर जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों के चौंक चौराहे पर सघन वाहन जांच अभियान चलाया । जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में यह अभियान एसपी के निर्देश पर विभिन्न थाना क्षेत्रों के चौंक चौराहे पर थानाध्यक्ष की मौजूदगी में चलाया गया। विशेष अभियान में 144 वाहनों से 3 लाख 44 हजार रुपए जुमार्ना वसूला गया। इस जांच अभियान का मुख्य उद्देश्य चोरी की गाड़ियों, असामाजिक तत्वों और शराब के कारोबारियों को पकड़ना था। पुलिस द्वारा वाहनों के कागजात, हेलमेट, नंबर प्लेट और डिक्की की जांच की जा रही है, ताकि किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि को रोका जा सके। मशरक के महावीर चौक पर थानाध्यक्ष अजय कुमार के नेतृत्व में अभियान के तहत पुलिस ने नियमों का उल्लंघन करने वालों का चालान भी किया और उन्हें जागरूक करते हुए हेलमेट पहनने और सुरक्षित रूप से वाहन चलाने की सलाह दी। एसपी ने कहा, "हमारे प्रयास आम जनता की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए हैं। हम असामाजिक तत्वों पर कड़ी नजर रख रहे हैं, साथ ही लोगों को सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने की सलाह दे रहे हैं। ऐसे अभियान के दौरान, जो लोग नियमों का उल्लंघन करेंगे, उनका चालान किया जाएगा और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन भी किया जाएगा। पुलिस द्वारा यह कदम यात्री सुरक्षा, विधि व्यवस्था बनाए रखने और सड़क परिवहन के नियमों के पालन को सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है।

घायल चिकित्सक की ईलाज के दौरान मौत

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के पटोरी थाना क्षेत्र अंतर्गत चकसाहो बांध के निकट हुई सड़क दुर्घटना में घायल शख्स की इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना क्षेत्र के उत्तरी धमौन निवासी विंदेश्वर साह के 40 वर्षीय पुत्र ग्रामीण चिकित्सक नरेश कुमार चकसाहो गांव में ग्रामीण के रूप में प्रैक्टिस करते थे। मंगलवार की दोपहर में अपनी बाइक से कही ईलाज करने जा रहे थे। इसी दौरान चकसाहो बांध के पास बाइक लगाकर लघुशंका करने लगे। इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उन्हें ठोकर मार दिया। जिससे वे गंभीर रूप से जख्मी हो गये। स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें अनुमंडलीय अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया। अनुमंडलीय अस्पताल के चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

हसनपुरविधानसभा की भावी उम्मीदवार इंदु गुप्ता के द्वारा क्रिकेट टूनार्मेंट मैच का आयोजन

इंदु गुप्ता ने हजारों समर्थको के साथ गांधी मैदान विथान ऐतिहासिक महात्मा गांधी बापू की प्रतिमा पर फूल माला चढ़ाकर माल्यार्पण किया

गांधी मैदान में क्रिकेट टूनार्मेंट का भव्य शुभारंभ,

खेल प्रेमियों में दिखा जबरदस्त उत्साह

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

विथानः गांधी मैदान में आयोजित क्रिकेट टूनार्मेंट का भव्य उद्घाटन इंदु गुप्ता एवं थानाध्यक्ष राजू कुमार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया।इस मौके पर बड़ी संख्या में स्थानीय दर्शक और गणमान्य लोग मौजूद रहे। टूनार्मेंट को लेकर क्षेत्र में खासा उत्साह देखा गया, जहां युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक ने क्रिकेट के रोमांच का लुत्फ उठाया। मालदह की टीम ने टॉस जीतकर चुनी गेंदबाजी उद्घाटन मुकाबले में मालदह की टीम और बड़गांव की टीम आमने-सामने थीं। मालदह की टीम ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करने का निर्णय लिया, जबकि बड़गांव की टीम ने बल्लेबाजी की जिम्मेदारी संभाली।मैच शुरू होते ही दर्शकों में रोमांच बढ़ गया और हर चौके-छक्के पर तालियों की गूंज सुनाई दी।खेल से बढ़ता है भाईचाराः इंदु गुप्ता इस अवसर पर हसनपुर विधानसभा की भावी उम्मीदवार इंदु गुप्ता ने कहा, "खेल युवाओं के शारीरिक और मानसिक विकास में अहम भूमिका निभाता है।ऐसे आयोजनों से आपसी भाईचारा और खेल भावना को बढ़ावा मिलता है। मैं इस तरह के आयोजनों को हमेशा समर्थन दूंगी और क्षेत्र में खेल सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत रहूंगी।"खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने पहुंचे गणमान्य लोग क्रिकेट टूनार्मेंट के उद्घाटन समारोह में समाजसेवी और स्थानीय गणमान्य लोगों की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही।इस अवसर पर सुरेंद्र गुप्ता, राजेंद्र पासवान, अमरजीत यादव, अमरजीत पासवान, शिव साहू, राजेश पासवान, युवराज पासवान, जय नारायण राय, मनोज राय, फुल कुमार साहू, उमाशंकर यादव, रामकुमार राय, अनिरुद्ध यादव, संतलाल यादव, नंदन, संजय, अवधेश सहित कई प्रमुख लोग उपस्थित थे। सभी ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया और टूनार्मेंट के सफल आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की।खेल के प्रति बढ़ रहा है युवाओं का रुझान टूनार्मेंट के आयोजन समिति के सदस्यों ने बताया कि इस तरह के आयोजनों से युवाओं का खेलों के प्रति रुझान बढ़ रहा है। आने वाले दिनों में और भी रोमांचक मुकाबले खेले जाएंगे, जिनमें क्षेत्र की विभिन्न टीमें हिस्सा लेंगी। अगले दौर के मुकाबलों पर टिकी निगाहें पहले दिन के रोमांचक मुकाबले के बाद अब क्रिकेट प्रेमियों की निगाहें अगले दौर के मैचों पर टिकी हैं। आयोजन समिति ने बताया कि टूनार्मेंट का फाइनल मुकाबला विशेष कार्यक्रम के तहत खेला जाएगा, जिसमें विजेता टीम को शानदार पुरस्कार दिया जाएगा।

इस टूनार्मेंट के माध्यम से न केवल स्थानीय खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिल रहा है, बल्कि पूरे क्षेत्र में खेल के प्रति जागरूकता भी बढ़ रही है।

सेल के प्रदेश अध्यक्ष सलीम साहिल के अध्यक्षता में अल्पसंख्यक सेल की बैठक हुई

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

आज लोजपा (रा) प्रदेश कार्यालय में लोजपा (रामविलास) सेल के प्रदेश अध्यक्ष सलीम साहिल के अध्यक्षता में अल्पसंख्यक सेल की बैठक हुई। बैठक को संबोधित करते हुए सलीम सलीम ने कहा कि अल्पसंख्यक सेल लोजपा संस्थापक स्वः रामविलास पासवान जी के विचारों, सिद्धांतों तथा उनके द्वारा किए गए कार्य को घर-घर तक पहुंचाने का काम करेगा। स्वः रामविलास पासवान जी ने अल्पसंख्यक समाज को जगाने का काम किया तथा अल्पसंख्यक समाज के लोगों को हक दिलाने के लिए आवाज उठाया। आगे सलीम साहिल ने बताया कि 24 फरवरी को पटना में अल्पसंख्यक सेल का प्रदेश पदाधिकारीयों तथा सभी जिला अध्यक्षों का एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई गई है ।पार्टी का प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में अल्पसंख्यक से प्रधान महासचिव मोतिउल्लाह खान, प्रदेश उपाध्यक्ष सैयद सरवर अली, शमशाद अहमद अंसारी,कमरान खान, प्रदेश महासचिव जीशन अहमद खान, इस्तखार आलम, प्रदेश सचिव आसिफ खान, आदिल परवेज, मोः नफीस आलम, मोः महताब आलम खान, नजरुल इस्लाम मौजूद थे।

संत रविदास अद्वितीय पुरुष थे ।मानवीय धर्म को सभी धर्म से ऊपर मानते हुए गरीबों,

मजलूमों ,शोषितों और पीड़ितों के उदार का मार्ग प्रशस्त किया था

वरिष्ठ संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

यें बात आज लोजपा - रा के राज्य कार्यालय एक व्हीलर रोड पटना मे संत रविदास जयंती के अवसर पर बोलते हुए पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सत्यानंद शर्मा, धनंजय मृणाल, शाहनवाज अहमद कैफी, युवा के राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार पासवान और प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशरफ अंसारी ने कहा कि संत रविदास साहब ने सामाजिक विषमता के खाई को न सिर्फ पाटने का काम किया था, बल्कि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का काम किया था।रहीम, कबीर, तुलसीदास जैसे कवियों और विचारकों से ज्यादा ऊंचाई को प्राप्त किया।गरीबों को सम्मान देने की परंपरा की शुरूआत किया था।आज इस काम को हमारे पार्टी के नेता और राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान बखूबी कर रहे हैं।पार्टी संत रविदास के उद्देश्यों और आदर्शों पर चलने का संकल्प लेती है।कार्यक्रम की अध्यक्षता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता दिनेश पासवान ने किया। समारोह को पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष विष्णु पासवान, संजय सिंह, मुख्य प्रवक्ता राजेश भट्ट, पार्टी के वरिष्ठ नेता साजेश पासवान , नौशाद आलम, कलामुद्दीन, महिला प्रदेश अध्यक्ष शोभा पासवान, प्रदेश सचिव दिलीप यादव,सुदीप चौधरी, कार्यालय प्रभारी ओमप्रकाश भारती, सह कार्यालय प्रभारी सुरेश पासवान, आनंद चंद्रवंशी, शक्ति पासवान, प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने भी संबोधित किया।

समस्तीपुर में आगामी वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2025 के निमित्त विधि व्यवस्था संबंधित बैठक आयोजित की गई

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

जिलाधिकारी समस्तीपुर श्री रोशन कुशवाहा की अध्यक्षता में बुधवार दिनांक 12 फरवरी 2025 को समाहरणालय सभागार समस्तीपुर में आगामी वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2025 के निमित्त विधि व्यवस्था संबंधित बैठक आयोजित की गई। विदित हो की वार्षिक माध्यमिक परीक्षा हेतु समस्तीपुर अनुमंडल में 35 परीक्षा केंद्र, रोसड़ा अनुमंडल अंतर्गत 21 परीक्षा केंद्र, दलसिंहसराय अनुमंडल अंतर्गत 13 परीक्षा केंद्र, तथा पटोरी अनुमंडल अंतर्गत 9 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं।इस प्रकार पूरे जिले में कुल 78 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा का आयोजन दिनांक 17 फरवरी 2025 से 25 फरवरी 2025 तक निर्धारित है। इंटरमीडिएट एग्जाम से इतर कुल 18 नए परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं जिनके केंद्राधीक्षकों को जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा पूर्व में ही परीक्षा से संबंधित बैठक कर आवश्यक निर्देश दिए जा चुकें है ।आज की बैठक में जिलाधिकारी द्वारा सभी केंद्राधीक्षक को इंटरमीडिएट परीक्षा की भांति इस परीक्षा में भी शुचिता पूर्ण तरीके से परीक्षा आयोजित कराने हेतु आवश्यक कार्रवाई करने ,परीक्षार्थियों की फ्रिस्क्रींग करने तथा यातायात प्रबंधन हेतु अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस उपाधीक्षक यातायात समस्तीपुर को आवश्यक कार्रवाई करने हेतु निर्देश दिया गया ।इसके अलावा सभी परीक्षा केंद्रो पर पूर्व इंटरमीडिएट परीक्षा की भांति सीसीटीवी एवं वीडियोग्राफी की व्यवस्था करने का निर्देश नजारत उप समाहर्ता को दिया गया। बैठक में अपर समाहर्ता समस्तीपुर श्री अजय कुमार तिवारी , जिला शिक्षा पदाधिकारी समस्तीपुर श्री कामेश्वर प्रसाद , अपर समाहर्ता लोक शिकायत निवारण श्री शशिकांत पासवान, जिला आपूर्ति पदाधिकारी श्री महमूद आलम सहित विभिन्न पदाधिकारी गण एवं प्रति नियुक्त दंडाधिकारी /पुलिस पदाधिकारी तथा केंद्र अधीक्षक समाहरणालय सभा कक्ष में मौजूद थे जबकि क्षेत्रीय पदाधिकारी अपने-अपने अनुमंडल एवं अंचलों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़े हुए थे।

शबेबरात को शांतिपूर्ण मनाने के लिए थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित

वरिष्ठ संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

नावकोठी (बेगूसराय) ' शबेबरात को लेकर थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी.इस बैठक की अध्यक्षता थानाध्यक्ष दिनेश कुमार ने किया.पुलिस इंस्पेक्टर आनंद कुमार ने बताया कि आपसी सौहार्द्रता एवं तपस्या का पर्व शबेबरात है.इस पर्व पर प्रखंड क्षेत्र शांतिपूर्ण पर्व मनाने की परंपरा रही है.थानाध्यक्ष श्री कुमार ने कहा कि हुड़दंगियों पर प्रशासन की पैनी नजर रहेगी,शबेबरात के रात तेज रफ्तार बाइक राइडिंग पर भी नजर रहेगी.मस्जिद और कब्रिस्तान आने जाने वाले अकीदतमंदों को किसी प्रकार का व्यवधान बर्दाश्त नहीं किये जायेंगे.लोगों से अफवाहों से सावधान रहने की अपील की गयी.उन्होंने कहा कि शराब कारोबारी पर प्रशासन की कड़ी नजर है. प्रशासन शांतिपूर्ण ढंग से पर्वों को मनाने का अनुरोध किया.मौके पर सब इंस्पेक्टर उमाशंकर झा, मुखिया विजय पासवान, पूर्व मुखिया मुक्ति नारायण सिंह, रोहित कुमार उर्फ सोनू,अब्दुल कुद्दुश,मो नाजिम,मो काशिफ, मो आदम, मनौव्वर हुसैन, मो महफूज,मो हामिद,मनीष पाठक,मो मोतिउल्लाह आदि मौजूद थे.

समस्तीपुर के प्रांगण में किसान मेला सह उद्यान प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मज जुबैर

दिनांक 15 से -17/02/2025 को डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के प्रांगण में किसान मेला सह उद्यान प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है सभी किसान उक्त सूची के अनुसार अपने-अपने प्रदर्श के साथ भाग लेने की कृपा करें। प्रदर्शनी कार्यक्रम मे अलग-अलग वर्ग के अलग-अलग शाखा मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे ।

किसान प्रदर्शनी के अलावा अन्य किसान भी किसान मेला मे भाग लेकर कृषि के नई तकनीक से अवगत हो सकते है ।

आप सभी लोग किसान मेला कार्यक्रम मे सादर आमंत्रित है।

नोट- 1.प्रदर्शनी जो किसान भाग लेना चाहते है वैसे किसानो के उत्पाद का पंजीकरण दिनांक 15/02/2025 को सुबह 07:00 से 10:30 बजे पूर्वाह्न तक ही किया जाएगा ।2.प्रदर्श सूची के अनुसार ही किसान अपने उत्पाद को प्रदर्शनी

15 से - 17/02/2025 को डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के प्रांगण में किसान मेला सह उद्यान प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा

शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में शब-ए -बारात आयोजन के मद्देनजर डीएम व एसपी ने प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों की ब्रीफिंग

जातीय एवं धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाले के विरुद्ध की जाएगी कठोर कार्रवाई : डीएम व एसपी

वरिष्ठ संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सीतामढ़ी ।शब ए बरात पर्व शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण आयोजन के मद्देनजर सभी आवश्यक तैयारियां मुकम्मल कर ली गई है। जिलाधिकारी रिची पांडेय एवं पुलिस अधीक्षक अमित रंजन के द्वारा इस संबंध में आवश्यक निर्देश ब्रीफिंग में प्रतिनियुक्त पदाधिकारियों को दिया गया। विधि व्यवस्था संधारण हेतु पर्याप्त संख्या में सुपर जोनल दंडाधिकारी, सेक्टर दंडाधिकारी, वरीय पदाधिकारी के साथ पर्याप्त संख्या में पुलिस पदाधिकारी, पुलिस बलों को प्रतिनियुक्त किया गया है। सभी प्रतिनियुक्त पदाधिकारियों को स- समय अपने प्रतिनियुक्ति स्थल पर योगदान देने की हिदायत दी गई है। कहा कि कार्य में किसी भी तरह की कोताही पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

निर्देश दिया कि शब-ए-बारात पर्व के अवसर पर अफवाह फैलाने वाले असामाजिक तत्वों को किसी भी सूरत में नहीं बक्शे। सामाजिक सौहार्द में खलल डालने वाले तत्वों के विरुद्ध विधि सम्मत कठोर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया।हुड़दंगियों पर विशेष नजर रखने का निर्देश दिया गया है। सोशल मीडिया पर जातिगत एवं धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाले पोस्ट के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। निर्देश दिया गया है कि उपद्रवी तत्वों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने में जरा सी भी शिथिलता नहीं बरती जाए। उपद्रव फैलाने वाले तत्वों के विरुद्ध दंड प्रक्रिया संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी।

उक्त अवसर पर जिला आपदा शाखा में 24७ 7 नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया जिसका दूरभाष नंबर 06226-250316है।नियंत्रण कक्ष 13 फरवरी के 2 बजे अपराह्न से 14 फरवरी तक कार्य करेगा।

निर्देश दिया गया है कि शराब की खरीद बिक्री में शामिल लोगों पर सख्ती बरती जाए। लगातार छापेमारी की जाए। चिन्हित शराब माफियाओं पर नकेल कसते हुए विधि सम्मत आवश्यक कार्रवाई की जाय। बॉर्डर एरिया में विशेष तौर पर ध्यान दें। साथ ही सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने वाले तथा फसाद की मंशा रखने वालो, अश्लील एवं भड़काऊ गीतों के विरुद्ध सीधे एएफआईआर करने का निर्देश दिया गया है।

ब्रीफिंग में सभी प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं जिला स्तरीय सभी वरीय एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

चकमेसीथाने की पुलिस ने विभिन्न मामलों में फरार चल रहे एक वारंटी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर जिले के कल्याणपुर प्रखंड चकमेसी थाने की पुलिस ने विभिन्न मामलों में फरार चल रहे वारंटी को गिरफ्तार किया है।इसमें श्रीनाथ पारण गांव निवासी राम रतन राय का पुत्र गोरख राय थाना चकमेहसी का नाम शामिल है।गिरफ्तार वारंटी को मेडिकल जांच के बाद समस्तीपुर न्यायालय भेज दिया गया। थानाध्यक्ष की अध्यक्षता में श्री रामनाथ ं२ ने बताया कि यह पूर्व 60/24 के विभिन्न मामले में फरार थे। न्यायालय ने वारंट जारी कर रखा था। जिसके आलोक में गिरफ्तार किया गया।

संत शिरोमणि की 648 जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाई गई

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर।जिले के कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र के संत कबीर नगर भट्टी चौक पर साधु दास शास्त्री के आवासीय परिसर पर संत शिरोमणि की 648 जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित कर विमलेश साहब राधैपूरा मधुबनी व राम सुंदर राम की अध्यक्षता में संयुक्त रूप से की गई।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समस्तीपुर महापौर अनीता राम, जिला परिषद अध्यक्ष खुशबू कुमारी, एससी एसटी कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष भुपनेश्वर, कल्याणपुर विधानसभा के भूतपूर्व प्रत्याशी रंजीत कुमार राम, जदयू अति पिछड़ा प्रकोष्ठ प्रदेश महासचिव दीपक कुमार भगत, संजय कुमार राम, अध्यक्ष भीम आर्मी कल्याणपुर सुखलाल यादव, माले नेता सुबोध राम, नंद किशोर राम, मुन्नी देवी आदि ने संत शिरोमणि के संबंध में विस्तृत चर्चा किया। आगे जिलाध्यक्ष एससी एसटी ने कहा कि पृथ्वी पर प्रकृति ने दो जाति को जन्म दिया एक स्त्री दूसरा पुरुष। आज के परिवेश में समूह को शिक्षित होना आवश्यक है शिक्षा से ही हम अपने कर्म को बदल सकते है। संत शिरोमणि के तैल चित्र पर माल्यार्पण कर उनके बताये गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।धन्यवाद ज्ञापन संचालन कर्ता शिक्षक राम सुंदर राम ने किया।

संत शिरोमणि रविदास जयंती पर विचार गोष्ठी का आयोजन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बेगूसराय, बगरस थान सिंहः संत शिरोमणि रविदास जयंती के अवसर पर स्थानीय समाजसेवियों और बुद्धिजीवियों द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह आयोजन अरविंद दास के आवास पर संपन्न हुआ, जिसमें समाज सुधार, जातिवाद उन्मूलन और संत रविदास के विचारों पर गहन चर्चा की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बखरी के पूर्व डीएसपी रामचंद्र राम ने कहा कि संत रविदास अपने समय के महान संत, समाज सुधारक और विचारक थे। वे जन्म से मोची समाज से संबंध रखते थे, लेकिन अपनी विद्वता और तर्कशीलता से बनारस के पंडितों को भी शास्त्रार्थ में पराजित किया। उन्होंने कभी मंदिर-मस्जिद की औपचारिकता में विश्वास नहीं किया, बल्कि अपने कर्म और ज्ञान को ही सर्वोपरि माना। उन्होंने उपस्थित लोगों से शिक्षा को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाने और संगठित रहने का आह्वान किया। जातिवाद और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ रविदास के विचार सामाजिक कार्यकर्ता जितेंद्र जीतू ने कहा कि संत रविदास की प्रसिद्ध उक्ति "मन चंगा तो कठौती में गंगा" आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उनका संदेश स्पष्ट था कि मोक्ष बाहरी आडंबर से नहीं, बल्कि हृदय की पवित्रता से प्राप्त होता है। वहीं, दिनेश राम ने बताया कि संत रविदास सामाजिक कुरीतियों और जातिवाद के घोर विरोधी थे। उन्होंने हमेशा शोषित और वंचित समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष किया, इसलिए उन्हें संत शिरोमणि कहा जाता है ।धार्मिक पाखंड और सामाजिक जागरूकता पर चर्चा कार्यक्रम में मनीष पासवान ने कहा कि समाज में अब भी कुछ लोग नहीं चाहते कि संत रविदास के अनुयायी आगे बढ़ें, इसलिए वे अंधविश्वास और रूढ़ियों को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने लोगों से जागरूक होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की अपील की। सामाजिक कार्यकर्ता विनोद राम ने कहा कि संत रविदास न केवल एक संत थे, बल्कि वे एक महान समाज सुधारक भी थे। उनका संघर्ष आज भी प्रेरणा देता है और उनके विचारों को अपनाकर समाज को समानता और न्याय की ओर ले जाया जा सकता है ।कार्यक्रम के अंत में वक्ताओं ने संत रविदास के विचारों को आत्मसात करने और समाज में समरसता लाने की शपथ ली। इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

संत शिरोमणि की 648 जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाई गई

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर।जिले के कल्याणपुर प्रखंड क्षेत्र के संत कबीर नगर भट्टी चौक पर साधु दास शास्त्री के आवासीय परिसर पर संत शिरोमणि की 648 जयंती समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित कर विमलेश साहब राधैपूरा मधुबनी व राम सुंदर राम की अध्यक्षता में संयुक्त रूप से की गई।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समस्तीपुर महापौर अनीता राम, जिला परिषद अध्यक्ष खुशबू कुमारी, एससी एसटी कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष भुपनेश्वर, कल्याणपुर विधानसभा के भूतपूर्व प्रत्याशी रंजीत कुमार राम, जदयू अति पिछड़ा प्रकोष्ठ प्रदेश महासचिव दीपक कुमार भगत, संजय कुमार राम, अध्यक्ष भीम आर्मी कल्याणपुर सुखलाल यादव, माले नेता सुबोध राम, नंद किशोर राम, मुन्नी देवी आदि ने संत शिरोमणि के संबंध में विस्तृत चर्चा किया। आगे जिलाध्यक्ष एससी एसटी ने कहा कि पृथ्वी पर प्रकृति ने दो जाति को जन्म दिया एक स्त्री दूसरा पुरुष। आज के परिवेश में समूह को शिक्षित होना आवश्यक है शिक्षा से ही हम अपने कर्म को बदल सकते है। संत शिरोमणि के तैल चित्र पर माल्यार्पण कर उनके बताये गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।धन्यवाद ज्ञापन संचालन कर्ता शिक्षक राम सुंदर राम ने किया।

एस एस एकेडमी के प्रांगण में विज्ञान मेला की प्रदर्शनी

एस एस एकेडमी के बच्चों द्वारा बनाए गए मॉडल की प्रस्तुती देखकर अभिभूत हुए डॉ मंगलेश

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

गोरखपुर आज दिनांक 12 फरवरी दिन बुद्धवार को विजय चौक स्थित एस एस एकेडमी विद्यालय के प्रांगण में छात्र-छात्राओं द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी काभव्य आयोजन किया गया

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मंगलेश श्रीवास्तव महापौर नगर निगम गोरखपुर, विशिष्ट अतिथि पुष्प दंत जैन उपाध्यक्ष व्यापारी कल्याण बोर्ड गोरखपुर, वरिष्ठ समाजसेवी अचिंत्य लाहिड़ी, ए पी सिंह पूर्व मुख्य अभियंता सिंचाई विभाग, मनीष जैन उपाध्यक्ष भारतीय जनता युवा मोर्चा, शिव शरण दास, शक्ति श्रीवास्तव वरिष्ठ पत्रकार, इंटेक के कनवीनर महावीर प्रसाद कंदोई उपस्थित रहे।

प्रदर्शनी में बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार के मॉडल बनाए गए।

कक्षा एक के कनिष्क हरि अग्रवाल, अद्विक अग्रवाल द्वारा टाइप्स ऑफ कम्युनिकेशन,मोहम्मदी द्वारा पाट्र्स ऑफ कंप्यूटर, सिद्धि एवं शिवम् द्वारा महाकुंभ को मॉडल के द्वारा प्रदर्शित किया गया ,

कक्षा 2 के छात्र छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय पर्व को मॉडल के द्वारा प्रदर्शित किया गया कक्षा तीन चार एवं पांच के छात्र छात्राओं टीना द्वारा हिंदी साहित्य के अव्यय शब्द, शताक्षी द्वारा उपसर्ग, ईशान वर्मा द्वारा हिंदी वर्णमाला, ओजस, अस्तित्व,आर्यन दिव्यांश ने पाट्र्स ऑफ कंप्यूटर, उमर रहमान ने सोलर सिस्टम, सिद्धि गुप्ता ने चंद्रयान, अभिनीतम उपाध्याय द्वारा टॉफी वेंडिंग मशीन का मॉडल बनाकर प्रस्तुत किया।

कक्षा 6, 7 व 8 के छात्र दिव्यांशी, समामा, आरुषी, कैरव अग्रवाल, लक्ष्य, सानिध्य ने टाइप्स ऑफ एंगल, प्रॉपर्टीज ऑफ सर्कल,ज्योमेट्रिकल डिजाइन, कनिष्का श्री, धन्या व दिव्या ने ड्रिप इरिगेशन, समृद्धि दीक्षित, जाह्नवी व तनु ने मॉडर्न सिटी, अवंतिका सिंह व यन्तीशा गुप्ता ने सस्टेनेबल स्मार्ट सिटी को बहुत ही आकर्षक रूप से मॉडल के द्वारा प्रदर्शित किया गया।

छात्र छात्राओं समृद्धि, वंशिका व हिमेश ने वर्किंग मॉडल ऑफ चंद्रयान, बालाजी, कैफ व शिवांश ने फायर अलार्म, आदित्य वर्मा, एशवी ने टेस्ला क्वायल, दिव्यांशी पांडे, कृपा, अनिरुद्ध ने वर्किंग मॉडल ऑफ किडनी, आस्था दुबे,वेद,साक्षी,आरव व अयूप ने अर्थ क्वेक अलार्म, रोबोटिक्स का मॉडल बनाकर प्रस्तुत किया।

विद्यालय के छात्र-छात्राओं में इसरो, अग्नि मिसाइल, चंद्रयान, इको फ्रेंडली सोसाइटी, रिफ्लेक्शन ऑफ लाइट को बहुत ही अच्छे से मॉडल के द्वारा प्रस्तुत किया गया।

आराध्या गुप्ता,शिवानी जायसवाल,आदित्य राज,आदित्य चौहान,संदीप,एकाग्र अग्रवाल ने सेक्टर ऑफ इंडियन इकोनॉमिक्स को मॉडल के द्वारा प्रस्तुत किया एवं मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि एवं आए हुए सभी अभिभावकों को उसके बारे में विस्तार से बताया कि यह सिस्टम किस प्रकार कार्य करता है।

प्री प्राइमरी वर्ग के छात्र-छात्राओं ने क्राफ्ट वर्क, फ्रूट गार्डन, वेजिटेबल गार्डन, ट्रांसपोर्ट सिस्टम, वाटर एनिमल का प्रदर्शन किया गया।

मुख्य अतिथि मंगलेश व विशिष्ट अतिथि जैन सहित सभी अतिथियों ने सभी मॉडल को देखा और उसके बारे में बच्चों से सवाल भी पूछे जिसका जवाब बच्चों ने दिया।

नन्हे मुन्ने बच्चों द्वारा दिए गए जवाब से अतिथिगण अत्यधिक प्रभावित हुए और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की मुख्य अतिथि ने विद्यालय के प्रबंधक कनक हरि अग्रवाल प्रधानाचार्या डॉ निशी अग्रवाल सहित विद्यालय के सभी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को इस तरह के कार्यक्रम करने के लिए धन्यवाद दिया. अंत में आए हुए अतिथियों को विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ निशी अग्रवाल व प्रबंधक कनक हरि अग्रवाल ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया.

बिथान में मनाया गया आरोग्य दिवस

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। बुधवार को बिथान प्रखंड के आंगनबाड़ी केंद्र 12 बनभौरा में आरोग्य दिवस का आयोजन किया गया। पीरामल स्वास्थ्य के प्रोग्राम लीडर अंजय कुमार ने बताया कि मातृ मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में आरोग्य दिवस की बड़ी भूमिका है। पोषण संबंधी जानकारी देने, गर्भवती महिलाओ का कम से कम 4 ए.एन.सी.जांच होने चाहिए।संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने, परिवार नियोजन, सुगर जांच, उच्च रक्तचाप जांच, संबंधी विभिन्न साधनों, बच्चों की सुरक्षा के लिए टीकाकरण हेतु आम लोगों को स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा जागरूक किया जाता है। मौके पर बीएमसी राज कुमार लाल, पीरामल स्वास्थ्य के प्रोग्राम लीडर अंजय कुमार, एएनएम सिंधु देवी, आंगनबाड़ी सेविका हेमलता कुमारी, मीडिया बंधु और पोषक क्षेत्रों की लाभार्थी मौजूद थे।

घायल चिकित्सक की ईलाज के दौरान मौत

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के पटोरी थाना क्षेत्र अंतर्गत चकसाहो बांध के निकट हुई सड़क दुर्घटना में घायल शख्स की इलाज के दौरान मौत हो गई।पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।थाना क्षेत्र के उत्तरी धमौन निवासी विंदेश्वर साह के 40 वर्षीय पुत्र ग्रामीण चिकित्सक नरेश कुमार चकसाहो गांव में ग्रामीण के रूप में प्रैक्टिस करते थे।मंगलवार की दोपहर में अपनी बाइक से कही ईलाज करने जा रहे थे।इसी दौरान चकसाहो बांध के पास बाइक लगाकर लघुशंका करने लगे।इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उन्हें ठोकर मार दिया।जिससे वे गंभीर रूप से जख्मी हो गये।स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें अनुमंडलीय अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया।अनुमंडलीय अस्पताल के चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

संत रविदास की मनाई गई जयंती

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर में वीआईपी पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष पप्पू कुमार सहनी के द्वारा बुधवार को संत शिरोमणि रविदास की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में पुर्व डीजीपी बीके रवि ने भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष पप्पू कुमार सहनी ने किया। रविदास के 647 वें जन्म दिवस के अवसर पर वीआईपी पार्टी के कार्यकर्ता सहित अन्य गणमान्य लोग जुटे रहे और उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। वक्ताओं ने कहा कि सतगुरु रविदास भारत के विशेष महापुरुषों में से एक हैं।जिन्होंने अपने आध्यात्मिक वचनों से सारे संसार को एकता भाईचारा से जोड़ दिया था। उन्होंने जीवन भर समाज में फैली कुरीति जैसे जात पात के अंत के लिए काम किया। उनका जन्म वाराणसी में 1398 ई को हुआ था और 1540 ई को शरीर का त्याग किया था। इन्हें गुरु रविदास के नाम से जाना जाता है। प्रखंड अध्यक्ष श्री सहनी द्वारा संत रविदास की वाणी जो मन चंगा तो कठौती में गंगा के भावार्थ को विस्तार से बताते हुए कहा कि संत रविदास लोगों के जूते सिलते हुए भगवान का भजन करने में मस्त रहते थे।इसी क्रम में एक महिला उनके पास पहुंची और उन्हें गंगा स्नान करने की सलाह दी। मस्तमौला संत रविदास ने कहा कि जब मन चंगा तो कठौती में गंगा, यानी यदि आपका मन पवित्र है तो यही गंगा है। मौके पर प्रखंड मीडिया प्रभारी मुकेश कुमार, युवा प्रखंड अध्यक्ष रंजन कुमार ठाकुर, पंचायत अध्यक्ष रीतलाल सहनी, राहुल कुमार, प्रखंड महासचिव राहुल कुमार साह आदि उपस्थित थे।

प्रीमियम लीग टूनार्मेंट के चौथे क्वार्टर फाइनल मैच में मुजफ्फरपुर ने पटना को 84 रनों से हराया

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर प्रखंड मुख्यालय स्थित नर्सरी मैदान में बुधवार को आयोजित वारिसनगर प्रीमियम लीग टूनार्मेंट के चौथे क्वार्टर फाइनल मैच में सरवर इलेवन मुजफ्फरपुर ने मुन्ना इलेवन पटना को 84 रनो से पराजित कर सेमीफाइनल मे प्रवेश किया। अब आज इस विजेता टीम का पहले सेमीफाइनल मे शांति निकेतन बेगूसराय से मुकाबला होगा। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मुजफ्फरपुर की टीम ने कप्तान चंदन चक्रवर्ती के धुआंधार नाबाद 31 गेंद पर छः छक्का व आठ चौका की मदद से 76 रन, मृत्युंजय कृष्णा के 31 गेंद पर नौ छक्का व दो चौका की मदद से 73 रन और मोहित कुमार की

धमाकेदार 22 गेंद पर पांच चौका व 10 छक्का की मदद से 86 रन की बदौलत निर्धारित 20 ओवर मे छः विकेट खोकर 332 रन बनाया। पटना की ओर से रवि सिंह व कन्हैया ने 2-2 विकेट तथा विवेक गोलू ने 1 विकेट लिया।जवाब में खेलने उतरी पटना की टीम ने पवन कुमार के 29 गेंद पर आठ छक्का व सात चौका की मदद से 84 रन, रोहित मोनस्टर के 31 गेंद पर सात छक्का व पांच चौका की मदद से 67 रन तथा रेहान के 12 गेंद पर पांच छक्का की मदद से 32 रन के बावजूद 16.3 ओवर मे 236 रनो पर ऑल आउट हो गई। मुजफ्फरपुर टीम की तरफ से चंदन चक्रवर्ती, टिंकू कुमार तथा प्रकाश ने 2-2 विकेट एवं गोलू राम ने अंतिम में हैट्रिक विकेट लिया। मुजफ्फरपुर टीम के चंदन चक्रवर्ती को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार समाजसेवी प्रभात कुमार ने दिया।मैच में निर्णायक की भूमिका मनीष चन्द्रा व दीपू झा ने, स्कोरर की भूमिका रामधीन व राकेश कुमार तथा कमेंटेटर की भूमिका मुन्ना ने निभाया। टूनार्मेंट के सफल संचालन के लिए प्रमोद कुमार, ओमकांत, शिशु, पिंटू, नीरज तथा दीपू झा जुटे रहे।

मनाया गया संत रविदास जयंती

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। बुधवार को जनवादी लेखक संघ की समस्तीपुर जिला इकाई की ओर से जिला मुख्यालय के बारह पत्थर मुहल्ले में संत रविदास की जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनवादी लेखक संघ के जिला अध्यक्ष शाह जफर इमाम ने की, जबकि संचालन जनवादी लेखक संघ के कार्यकारी जिला सचिव डॉ अरुण अभिषेक ने किया। कार्यक्रम में जनवादी लेखक संघ के कार्यकारी जिला सचिव डॉ अरुण अभिषेक, उपाध्यक्ष एवं उर्दू के शायर कासिम सबा, डॉ श्यामा कांत महतो, अरविंद सत्यदर्शी, राम प्रकाश यादव, मोहम्मद अयूब, अरविंद कुमार दास एवं शंभू शरण यादव ने अपने - अपने विचार व्यक्त किए। सभी वक्ताओं ने संत रविदास को एक महान संत कवि की संज्ञा देते हुए उन्हें एक समाज सुधारक के रूप में चित्रित किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में शाह जफर इमाम ने कहा कि विषम परिस्थितियों में भी संत रविदास ने अपने कर्म और अपनी वाणी से अपने युग के धार्मिक अंतरविरोधों की व्याख्या करते हुए एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति के रूप में अपने आपको स्थापित किया। उन्होंने कहा कि मन की शुद्धता ही सही धार्मिकता होगी। तभी तो उन्होंने कहा था मन चंगा तो कठौती में गंगा कार्यक्रम की शुरूआत संत रविदास के चित्र पर माल्यार्पण से हुई। कार्यक्रम में पिंकी कुमारी, आयुष अभिषेक, आयूषा एवं अनीषा सहित कई साहित्य प्रेमी शामिल थे। कार्यक्रम के पूर्व जनवादी लेखक संघ की जिला इकाई की बैठक भी आयोजित की गई।

संत रविदास की मनाई गई जयंती

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। बुधवार को शहर के कबीर आश्रम परिसर में संत रविदास जयंती समारोह आयोजित किया गया। संत रविदास के तैल्य चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया गया। समारोह का उदघाटन बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन, विधान पार्षद डॉ तरुण कुमार, पूर्व पुलिस महानिदेशक बीके रवि, महादलित आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ हुलैस मांझी, वरीय नेता विनोद चौधरी निषाद ने दीप प्रज्जवलित कर किया। अध्यक्षता समाजसेवी कुणाल राम ने की। मौके पर आगत अतिथियों का स्वागत पाग, चादर, माला तथा बुके से किया गया। अपने सम्बोधन के क्रम में बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन, विधान पार्षद डॉ तरुण कुमार, पूर्व पुलिस महानिदेशक बी के रवि, महादलित आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ हुलैस मांझी, वरीय नेता विनोद चौधरी निषाद ने कहा कि संत रविदास ने मानवता की सेवा को अपना धर्म समझा। संत रविदास ध्रुव तारे के समान चमकते थे। वह हमेशा जाति प्रथा और ऊंच-नीच के विरोधी थे। संत रविदास ने पाखंडवाद तथा आडंबर का कड़ा विरोध किया। वे निर्गुण सम्प्रदाय को मानने वाले संत थे। वे समाजिक सद्भाव व मानवता के प्रतीक थे। संत रविदास ने अपना जीवन प्रभु की भक्ति और सत्संग में बिताया था। वे बेहद ही परोपकारी थे। ऐसा कहा जाता है कि इन्हें मीरा बाई भी अपना गुरु मानती थी। इनकी प्रतिभा से सिकंदर लोदी भी प्रभावित हुआ था। संत रविदास ने अपनी रचनाओं एवं ज्ञान के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का कार्य किया है।

मंडल रेल अस्पताल में स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। बुधवार को मंडल रेल अस्पताल में एक स्वास्थ्य जान शिविर का आयोजन किया गया। इस जाँच शिविर में सर्वोदय हॉस्पिटल, फरीदाबाद के डॉक्टर्स ने मरीजों की जांच की तथा उनके द्वारा आवश्यकतानुसार सलाह दी गई। इस समारोह की शुरूआत मण्डल रेल प्रबंधक विनय श्रीवस्तव, अपर मंडल रेल प्रबंधक, आलोक कुमार झा एवं मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ सुनील कुमार द्वारा दीप प्रज्जवलित कर की गई। इस आयोजन में सर्वोदय हॉस्पिटल के चार विशेषज्ञ डॉ यावर शोएब अली (ब्रेन एवं स्पाइन रोग विशेषज्ञ, डॉ रंजन मोदी, ह ?दय रोग विशेषज्ञ, डॉ अंकुश शर्मा हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ तथा डॉ अशोक कुमार, कैंसर रोग विशेषज्ञ द्वारा 208 मरीजों के स्वास्थ्य की जांच की गई एवं उचित उपचार एव निदान दिया गया। इस स्वास्थ्य जाँच शिविर में मंडल रेल अस्पताल के डॉक्टर्स तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मौलाना वली रहमानी शख्सियत के चंद नुमायां पहलू:

हजरत मौलाना सैयद वाली रहमानी सैयद खानदान के जश्म चिराग थे इनका सिजरा पीराने पीर शेख अब्दुल कादिर जिलानी रहमतुल्ला ए लह के 27 वीं पुस्त से मिलता है

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मौलाना वली रहमानी शख्सियत के चंद नुमायां पहलू

हजरत मौलाना सैयद वाली रहमानी सैयद खानदान के जश्म चिराग थे इनका सिजरा पीराने पीर शेख अब्दुल कादिर जिलानी रहमतुल्ला ए लह के 27 वीं पुस्त से मिलता है

सैयद वली रहमानी हजरत मौलाना सैयद मुंगेरी रहमतुल्लाह के पोते और मरहूम अमीर शरीयत मौलाना सैयद मोहम्मद मिन्नतुल्लाह रहमानी के साहबजादे थे

मौलाना सैयद अली रहमानी की पैदाइश 5 जून 1943 को मुंगेर में हुई इन्होंने आरंभिक शिक्षा मौलवी अब्दुल रहमान मास्टर फजलुर्रहमान से रहमानिया उर्दू प्राइमरी स्कूल में पांचवी तक की तालीम हासिल किया

यह प्राइमरी स्कूल खानकाह रहमानी के प्रांगण में आज भी चल रहा है

इन्होंने अपने वालिद मोहतरम सैयद मिन्नतुल्लाह रहमानी से भी तालीम हासिल की

इसके बाद जामिया रहमानी से ने मिस्कात शरीफ की तालीम हासिल की अपने आला तालीम नदवतुल उल्मा और दारुल उलूम देवबंद से हासिल की इनकी वालिदा माजदा का नाम जमीला खातून था वह भी तालीम की माहिर खातून थी

उनके नाना का नाम अब्दुल शकूर था वह गया बिहार के जिला जज थे

हजरत मौलाना सैयद वली रहमानी खानकाह रहमानी के सज्जादा नशीन थे

हजरत मौलाना सैयद मिन्नतुल्लाह रहमानी के खलीफा ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के जनरल सेक्रेटरी बिहार उड़ीसा झारखंड के अमीरे शरीयत थे

जामिया रहमानिया के नाजिम आला रहमानी फाउंडेशन के बानी रहमानी 30 के बानी दारुल उलूम नदवतुल उल्मा के सदस्य तहरीके इसलाह मोआसरा कमेटी के कांवेनर थे इसके अलावा ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिसे मोशव्रत कमिटी के नायब सदर थे

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कोर्ट के मेंबर थे स्टैंडिंग कमेटी गवर्नर ऑफ इंडिया का मां इंट्रिंग कमेटी के महत्वपूर्ण मेंबर थे

अंजुमन हिमायते इस्लाम मुंगेर के सदर और मौलाना आजाद फाउंडेशन दिल्ली के वाइस चेयरमैन थे

मौलाना वली रहमानी हिंदुस्तान की बड़ी इलमी शख्सियतों में से एक थे यही वजह है कि आप की काबिलियत को सलाहित को देखते हुए आपको हिंदुस्तान का शिक्षा रत्न अवार्ड भारत ज्योति रत्न अवार्ड दिया गया

मौलाना वली रहमानी साहब हिंदुस्तान के ऐसे पहले आलीमेदिन थे जिन्हें इन अवॉर्ड से नवाजा गया इन्हें अपनी तालीमी खिदमत के लिए सर सैयद अहमद अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है 2010 में कोलकाता की मशहूर अखबार दैनिक उर्दू अखबार मशरीक के एक सर्वे के मुताबिक मौलाना को हिंदुस्तान के टॉप 10 मुसलमान में जगह दी गई थी

मौलाना वली रहमानी ने छोटी बड़ी 26 किताबें तहरीर की है जिसमें शहंशाह कोनैन के दरबार में और अहद नववी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन लड़कियों का कत्ल आपकी मंजिल यह है काफी मकबूल और मशहूर थे

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी लंदन और कोलंबो यूनिवर्सिटी श्री लंका ने आपको डॉक्टिरियेट की डिग्रियां दिया था बुनियादी तालीम हासिल करने के लिए तिलका मांझी भागलपुर यूनिवर्सिटी से तारीख में एम ए की सनद हासिल किया था इस इम्तिहान में अपने यूनिवर्सिटी में अव्वल मुकाम हासिल किया था

डॉक्टर एहतेशामुलहक उर्फ लुलु अंसारी

इस्लामिक स्कॉलर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा बिहार 2014 से लगातार

जदयू के प्रदेश महासचिव सह मुखिया पति ग्राम पंचायत राज लरूआरा सदर प्रखंड बेगूसराय सह पीएलवी जिला विधिक सेवा प्राधिकार सह उपाध्यक्ष सुन्नी वक्त कमेटी बेगूसराय प्रदेश महासचिव हिंद मजदूर सभा

पूर्व सदस्य सोनपुर रेलवे डिविजन बोर्ड पूर्व सदस्य नेहरू युवा केंद्र बेगूसराय दोनों भारत सरकार पूर्व जर्नलिस्ट यू एन आई उर्दू सर्विस नई दिल्ली पूर्व प्रदेश महासचिव कौमी तंजीम बिहार

पूर्व राष्ट्रीय महासचिव अंबेडकर सेना साप्ताहिक उर्दू अखबार ए नो साप्ताहिक इस्लामिक अखबार साप्ताहिक हिंदी स्केप्टिक्स इंडिया नई दिल्ली

प्रसिद्ध बीड़ी मजदूर नेता बिहार प्रदेश अध्यक्ष ऑल इंडिया मरकजी मोमिन कॉन्फ्रेंस बिहार

12 फरवरी 2025

जन सुराज ----बेदारी कारवां के प्रदेश संयोजक वसीम नैयर अंसारी का बेगूसराय आगमन पर भव्य स्वागत

जिला संवाददाता
साहिल अंसारी
रोजनामा इंडो गल्फ

तेघड़ा , बछबारा/बेगूसराय बीते मंगलवार को जन सुराज के वरिष्ठ नेता एवं बेदारी करवा के प्रदेश संयोजक वसीम नैयर अंसारी का राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की पावन धरती पर जन सुराजी नेताओं एवं कार्यकताओं ने फूल माला एवं अंग वस्त्र से गर्म जोशी के साथ उनका इस्तकबाल (स्वागत) किया

बेगूसराय जिला अंतर्गत तेघड़ा विधानसभा एवं बछबारा विधानसभा में बेदारी कारवां की सभा में पहुंचने के क्रम में नेता वसीम नैयर अंसारी ने सर्वप्रथम राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तत्वपश्चात तेघड़ा विधानसभा अंतर्गत दनियालपुर में जन सुराज बेदारी बेदारी कारवां के सभा को संबोधित करते हुए श्री नैयर ने कहा कि जो दल लगातार तीन बार भाजपा को प्राजीत नहीं कर सका वैसी पार्टियों से अब कोई उम्मीद नहीं जो भाजपा को हराएगा एक ऐसी व्यवस्था बनाने की जरूरत है जहां हिंदू मुस्लिम होऔर जहां सभी वर्ग के लोग हो एक साथ आए और बिहार बदलने का काम करें और जनता का सुंदर राज जन सुराज की सरकार बिहार में बने इसके लिए हम सबों को मिलकर सामूहिक प्रयास करने की जरूरत है

वही दूसरी सभा बछबारा विधानसभा में सभा को संबोधित करते हुए श्री नैयर ने कहा जन सुराज एक मुहिम है जिसमें जनता का शासन कैसे लाया जाए और जनता का सुंदर राज कैसे बनाया जाए इसके लिए हम सबों को सामूहिक प्रयास करने की जरूरत है जो सरकार की शासन अभी चल रही है उससे हम लोग वाकिफ है लालूजी का राज भी हम लोगों ने देखा नीतीशजी का भी सरकार को देख रहे हैं और इससे पूर्व कांग्रेस को भी हम लोगों ने देख चुके है देश में भाजपा का भी राज देख रहे हैं ये सभी पॉलिटिकल पार्टियों का राज है श्री प्रशांत किशोर चाहते हैं की जनता का राज्य बने जहां जनता को किसी तरह की परेशानीयो और कठिनायों सामना ना करना पड़ पड़े जहां जनता को कोई भी काम में जनता को घूसखोरी का सामना ना करना पड़े एक ऐसा सुंदर राज बनाना चाहते हैं श्री प्रशांत किशोर के संदेशों को लेकर हम संपूर्ण बिहार का भ्रमण करते हुए आज यहां पहुंचे हैं दोनों सभा में श्री नैयर के साथ जन सुराज के प्रदेश युवा महासचिव सह तेघड़ा चेयर मेन प्रतिनिधि श्री कन्हैया कुमार एवं जन सुराज बेदारी कारवां के जिला संयोजक कएवं कार्यक्रम के आयोजक मोहम्मद साहिल अंसारी और प्रदेश कार्य समिति सदस्य कुमार गौतम ,रिजवान उस्मानी मंच के संचालन कर्ता सह नगर मंडल उपाध्यक्ष मोहम्मद अनवर हैरान ने दोनों सभा को संबोधित करते हुए अपने नेता प्रशांत किशोर के संदेशों को आवाम तक पहुंचाया तेघड़ा सभा की अध्यक्षता मोहम्मद अंजारुल हक ने की वही बछबारा विधानसभा अंतर्गत साठा पंचायत के गुरदासपुर गांव की सभा की अध्यक्षता मोहम्मद मजहर अली ने की मौके पर मौजूद मोहम्मद शाहीन अख्तर ,मोहम्मद सोनू मोहम्मद फजलुर रहमान, मोहम्मद सद्दाम अविनाश शीलू ,मोहम्मद अब्बास आजाद ,मोहम्मद मेराज मोहम्मद रफीक ,मोहम्मद परवेज, इत्यादि सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद थे

संक्षिप्त डायरी

जिला पदाधिकारी बेगूसराय, श्री तुषार सिंगला द्वारा बेगूसराय जिला अंतर्गत सभी पंचायतों के मुखिया के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पंचायतों मे संचालित विभिन्न निर्माण कार्यो मे आ रही समस्याओं के संबंध में की समीक्षा बैठक

जिला संवाददाता
साहिल अंसारी
रोजनामा इंडो गल्फ

बेगूसराय जिला पदाधिकारी बेगूसराय, श्री तुषार सिंगला द्वारा बेगूसराय जिला अंतर्गत सभी पंचायतों के मुखिया के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पंचायतों मे संचालित विभिन्न निर्माण कार्यो मे आ रही समस्याओं के संबंध में समीक्षा बैठक की गई। बैठक में उप विकास आयुक्त बेगूसराय, जिला पंचायत राज पदाधिकारी बेगूसराय, जिला प्रोग्राम पदाधिकारी, आई सी डी एस बेगूसराय, निदेशक डीआरडीए बेगूसराय, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा, भी उपस्थित थे। जिलाधिकारी महोदय द्वारा सभी पंचायतों के मुखिया से उनके क्षेत्र विशेष मे पंचायत सरकार भवन के निर्माण, आँगनवाड़ी केंद्रों के निर्माण, विशिष्ट कचरा प्रबंधन इकाई के निर्माण, मनरेगा अंतर्गत ली गई योजनाओं के निर्माण मे आ रही भूमि संबंधित समस्या एवं अन्य समस्याओं के बारे में जाना एवं समस्याओं के निराकरण हेतु सभी संबंधित पदाधिकारियों को अवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया।

कसया, कुशीनगर। नगरपालिका परिषद कुशीनगर के वार्ड संख्या 20 शहीद भगत सिंह नगर (रामनगर) में किलकारी जूनियर हाईस्कूल में टुर्क लैम फत थीन वेलफेयर सोसाइटी व होई थीन हॉक ट्रूक लैम हाई नगोई, वियतनाम द्वारा 97 छात्र व छात्राओं को सायकिल वितरित किया गया।मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भिक्षु संघ कुशीनगर के अध्यक्ष भंते एबी ज्ञानेश्वर ने धम्म पाठ किया और शिक्षकों व बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया। दानदाता वियतनामी दल की प्रमुख और संस्था की निदेशक ड्यू फ्योक ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि भगवान बुद्ध ने विश्व को दया, करुणा, मैत्री और शांति का उपदेश दिया। भाजपा नेता और समाजसेवी ओमप्रकाश जयसवाल ने विद्यालय के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि नैतिक और संस्कारिक शिक्षा से ही सामाजिक बदलाव संभव है। जिससे परिवार और राष्ट्र खुशहाल होगा। अतिथियों का स्वागत माल्यार्पण कर प्रबंधक पप्पू गुरु जी, शिक्षकों और बच्चों ने किया। आभार व्यक्त करते हुए विद्यालय की प्रधानाध्यापिका शबनम खातून ने कहा कि ड्यू फ्योक बुद्ध की अनुयायी और दयालु महिला हैं। जिनका उद्देश्य जरूरतमंद, गरीब, विकलांग बच्चों की जरूरत को पूरा करना है। संचालन सचिन शर्मा ने किया। इस अवसर पर अजीत सिंह, विवेक विश्वकर्मा, नीरज सिंह, फिरोज अहमद, मार्कण्डेय तिवारी, कल्पना देवी, पूनम कुशवाहा, श्रद्धा सिंह, कृपा सिंधु पाठक सहित बच्चे उपस्थित रहे।

वाराणसी 12 फरवरी, 2025: रेलवे प्रशासन द्वारा प्रयागराज में महाकुम्भ मेला के अवसर पर श्रद्धालु यात्रियों

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

की सुविधा हेतु पूर्व अधिसूचित 06153/06154 पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल)-

शकील हैदर, वरिष्ठ, संवाददाता, छपरा

बनारस-पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल) काशी तमिल संगमम विशेष गाड़ी के संचलन समय में संशोधन किया गया है। फलस्वरूप संशोधित समयानुसार 19 फरवरी, 2025 को पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल) से तथा 24 फरवरी, 2025 को बनारस से 01 फेरे के लिए निम्नवत चलाई जायेगी।

06153 पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल)-बनारस काशी तमिल संगमम विशेष गाड़ी 19 फरवरी, 2025 को पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल) से 14.45 बजे प्रस्थान कर नेल्लूर से संशोधित समय 17.45 बजे, ओंगोल से 19.15 बजे, विजयवाड़ा जं. से 21.25 बजे, दूसरे दिन वरंगल से 01.10 बजे, बल्हारशाह से 06.30 बजे, चन्द्रपुर से 07.07 बजे, नागपुर से 10.30 बजे, इटारसी से 16.05 बजे, पिपरिया से 17.05 बजे, नरसिंहपुर से 18.05 बजे, जबलपुर से 20.15 बजे, कटनी से 21.35 बजे, मैहर से 22.22 बजे, सतना से 23.05 बजे, तीसरे दिन मानिकपुर से 01.02 बजे, प्रयागराज छिवकी से 03.10 बजे, मिजार्पुर से 04.52 बजे तथा चुनार से 05.40 बजे छूटकर बनारस 08.00 बजे पहुँचेगी।

06154 बनारस-पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल) काशी तमिल संगमम विशेष गाड़ी 24 फरवरी, 2025 को बनारस से संशोधित समय 22.00 बजे प्रस्थान कर चुनार से 23.52 बजे, दूसरे दिन मिजार्पुर से 00.42 बजे, प्रयागराज छिवकी से 02.50 बजे, मानिकपुर से 05.50 बजे, सतना से 07.10 बजे, मैहर से 07.22 बजे, कटनी से 08.55 बजे, जबलपुर से 10.30 बजे, नरसिंहपुर से 11.32 बजे, पिपरिया से 12.50 बजे, इटारसी से 15.10 बजे, नागपुर से 23.20 बजे, तीसरे दिन चन्द्रपुर से 02.05 बजे, बल्हारशाह से 03.00 बजे, वरंगल से 06.00 बजे, विजयवाड़ा जं. से 09.30 बजे, ओंगोल से 11.30 बजे तथा नेल्लूर से 13.00 बजे छूटकर पुरट्चि तलैवर डॉ. एम. जी. रामचंद्रन सेंट्रल रेलवे स्टेशन (चेन्नै सेंट्रल) 17.30 बजे पहुँचेगी।

इस गाड़ी में जनरेटर सह लगेजयान का 01, एल.एस.एल.आर.डी का 01, साधारण द्वितीय श्रेणी के 02, शयनयान श्रेणी के 04, वातानुकूलित तृतीय इकोनॉमी श्रेणी के 07, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 05 तथा वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी के 02 कोच सहित कुल 22 एल.एच.बी. कोच लगाये जायेंगे।

आउटसोर्सिंग से बहाल बीपीएम, डीपीएम, बीआरपी इत्यादि ने सेवा समाप्ति न करने का फरियाद करते सांसद पति से

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सिवान 12 फरवरी बुधवार। शिक्षा विभाग में आउटसोर्सिंग से बहाल बीआरपी, बीपीएम, डीपीएम, एमडीएम, ऑपरेटर इत्यादि को पूर्व में शिक्षा विभाग में रहे एसीएस केके पाठक के द्वारा बहाल किए कर्मियों द्वारा घुस खोरी, भ्रष्टाचार और शिक्षा विभाग को बदनामी का कलंक झेलने पर वर्तमान में कार्यरत शिक्षा विभाग के एसीएस श्री एस सिद्धार्थ ने इन्हें सेवा मुक्त करने का फैसला किया है। जिसे पूरे सिवान जिले में आउटसोर्सिंग से तैनात कर्मियों ने सिवान सांसद पति सह सांसद प्रतिनिधि पूर्व विधायक रमेश सिंह कुशवाहा और भाजपा के दुरौंधा विधायक श्री करणजीत सिंह उर्फ व्यास सिंह को एक प्रतिनिधि मंडल ने ज्ञापन सौंपा जिसमें सेवा से मुक्त न करने का गुहार किया गया। वही बता दे की ज्ञापन में ये उल्लेख किया है कि हमारी बहाली पांच वर्ष के कॉन्ट्रैक्ट पर की गई थी लेकिन विभाग तानाशाही रवैया अपना कर हमें सेवा से मुक्त 31मार्च 2025 तक करने का फैसला किया है। जिसे करीब तीन सौ कर्मियों के समक्ष भुखमरी और बेरोजगारी की समस्याएं उत्पन्न होगी जो मानवता को शर्मसार करने योग्य है। वही सांसद पति और विधायक करणजीत सिंह उर्फ व्यास सिंह ने कहा की आप सब की मांग जायज है इस मांग को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को हमलोग अवगत करेंगे, इस मौके पर, बीपीएम, विशाल कुमार, राहुल कुमार सिंह, मोहम्मद नौशाद, अमित कुमार, रोहित कुमार, राज किशोर इत्यादि मौजूद थे।

पूसा बाजार में लगी आग, 13 दुकानें जलकर हुई राख

किसी को नहीं मिलेगा सरकारी लाभ : अंचलाधिकारी

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले की पूसा थाना क्षेत्र के पुसा बाजार स्थित गंडक नदी पुल के समीप हाथी चौक पर मंगलवार देर रात करीब दो बजे एक जूता - चप्पल के दुकान में अचानक आग लग गई। आग की लपटें इतनी भयावह थी कि देखते ही देखते आग एक एक कर 13 दुकानों को अपनी आगोश में ले लिया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया की आग की लपटे इतनी तेज थी कि कुछ भी अगलगी की इस घटना में बचा पाना संभव नहीं था। एक अनुमान के तहत सभी दुकानों में रखा करीब 8 से 10 लाख से अधिक मूल्य का सामान जलकर राख हो गया। घटना का कारण शॉर्ट शर्किट बताया जा रहा है। अगलगी के इस घटना की जानकारी स्थानिय लोगों को तब मिली जब एक दुकान में सो रहे एक व्यक्ति ने शोर मचाना शुरू किया। घटनास्थल पर जुटे लोगों ने मामले की जानकारी पूसा पुलिस और दमकल विभाग को दी। मौके पर पहुँची पुलिस और दमकल कर्मियों ने स्थानिय लोगों की मदद से करीब दो घंटे बाद आग पर काबू पाया। पीड़ित दुकानदारों ने बताया कि इस घटना में किसी भी सोए हुए दुकानदार को कोई नुकसान नही पहुँचा हैं। दुकानदारों की मानें तो करीब 13 दुकानों में रखा सामान जलकर राख हो गया। पीड़ितों ने बताया की सभी दुकानदार ने पूसा सीओ को आवेदन देंगे। अग्नि पीड़ित दुकानदारों में श्रृंगार और जूता चप्पल के दुकानदार मो असलम, फल दुकानदार अमृत सहनी, श्रृंगार दुकानदार अंशु कुमारी, कपड़ा दुकानदार मो नौशाद, श्रृंगार दुकानदार गोपाल साह एवं वीरेंद्र कुमार, चाय - नाश्ता होटल दुकानदार खुशबू देवी, फल दुकानदार अमरजीत कुमार, कपड़ा दुकानदार मो जकील, फल दुकानदार संगीता देवी, आलू प्याज दुकानदार सोनू आदि का नाम शामिल हैं। इधर पूसा अंचलाधिकारी पल्लवी कुमारी ने पूछे जाने पर बताया कि घटना की जानकारी हुई है, लेकिन सरकारी प्रावधान के अनुसार केवल आवासीय परिसर में हुई आग लगी की घटना में सहयोग देने का प्रावधान है। जानकारी के अनुसार दुकानदार अतिक्रमणकारियों थे। इसलिए वैधानिक तौर पर कोई सहयोग दे पाना संभव नहीं है।

निदेशक वाणिज्य आगरा ने विद्युत वितरण खंड की समीक्षा की

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर विद्युत वितरण खण्ड की आगरा से आये हुये निदेशक वाणिज्य ने समीक्षा की। समीक्षा के दौरान ओटीएस स्कीम की कम प्रगति वाले जेई को चेतावनी दी कि, अगर 15 फरवरी 2025 तक उम्मीद के मुताबिक रिजल्ट नहीं आयेगा, तो उनके खिलाफ कड़ी कार्यवाही होना तय है, साथ ही उनके द्वारा उपखंड अधिकारी, अवर अभियंताओ को राजस्व वसूली, विद्युत आपूर्ति, लाइन लांस, बिलिंग, 1912/सोशल मीडिया की शिकायतो एवं विभिन्न कॉमर्शियल व टेक्निकल पैरामीटर्स की समीक्षा बैठक कर जरूरी दिशा निर्देश दिये कि वकायेदार पर प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की जाये प्रत्येक गैंग को प्रतिदिन 10 ओटीएस का लक्ष्य दिया जिस उपकेंद्र क्षेत्र में राजस्व वसूली कम होगी उस उपकेंद्र के जेई व लाइन स्टाफ पर कार्यवाही की जायेगी, साथ ही कहा कि बिलिंग पर खास ख्याल रक्खा जाये और समय - समय पर क्रॉस चेकिंग की जाये और रीडर के साथ एक विभागीय कर्मी जरूर जाये, उन्होनें कहा कि अगर उपभोक्ता को समय पर सही बिल मिलेगा तो जमा करने वालो की तादाद भी जरुर बढ़ेगी उन्होंने कहा कि जिन क्षेत्रों में वख्त पर बिल ना मिलने की शिकायते मिल रही है, उन क्षेत्रों के मीटर रीडर की सेवा फौरन समाप्त की जाये साथ ही उपखंड अधिकारी गलत बिलों से जुड़ी शिकायतो को प्रायटी बतौर डिस्पोजल तय करें, उन्होंने कहा कि विभिन्न योजनाओ के तहत जिले में कार्य जारी है समय - समय पर उनका निरीक्षण कर बेहतर गुणवत्ता एवं समय पर कार्य पूर्ण कराना सुनिश्चित किया जाये। उन्होनें कहा कि विद्युत आपूर्ति पर विशेष ध्यान दिया जाये ओवरलोड ट्रांसफार्मर की क्षमता वृद्धि हेतु प्रस्ताव भेजा जाये जिससे कि उनका क्षमता वृद्धि कर उपभोक्ताओं को निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके, सप्लाई संबन्धित शिकायत मिलने पर तत्काल निस्तारण सुनिश्चित किया जाये / उन्होनें कहा कि टोल फ्री 1912 एवं सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मो के माध्यम से मिलने वाली शिकायतो का गंभीरता पूर्वक संज्ञान लेकर निस्तारण सुनिश्चित किया जाये एवं निस्तारण के उपरांत प्रत्येक शिकायत पर उपभोक्ता से फीडबैक अवश्य लिया जाये । उन्होनें कहा कि उपभोक्ता देवो भवः के तहत कार्यालयो पर आने वाले उपभोक्ताओं से बेहतर एवं मृदुल व्यवहार किया जाये उन्होंने स्पष्ट रूप से निर्देशित किया कि कही से भी अगर उन्हें उपभोक्ता उत्पीड़न की शिकायत प्राप्त हुई तो तत्काल संबधित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही प्रस्तावित की जायेगी डी. एन.प्रसाद अधिशासी अभियंता विद्युत विभाग, जीसी यादव अधीक्षण अभियंता, राहुल वर्मा ऐई आगरा बिजली विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे निदेशक ने टेढा सुमेरपुर चंद्रपुरवा बिजली घर भी देखे और जरुरी दिशा निर्देश दिऐ विद्युत विभाग के अधिकारी सहित सभी कर्मचारी मौजूद रहे।

विधायक पी.एन पाठक का किया गया भव्य स्वागत

कुशीनगर। श्री राम जानकी मठ मंदिर स्थित कुशीनगर विधायक पी.एन पाठक के जनसुनवाई कार्यालय पर दिल्ली विधानसभा में ऐतिहासिक जीत पर जश्न मनाया गया। इस दौरान पार्टी जनों ने कुशीनगर विधायक पी. एन पाठक का ढोल नगाड़ों के साथ फूल-माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने कुशीनगर विधायक पी.एन पाठक को संगम विहार विधानसभा का प्रभारी बनाकर जिम्मेदारी सौंपी थी। संगम विहार विधानसभा में कुशीनगर विधायक श्री पाठक ने बतौर विधानसभा प्रभारी लगातार जनसंपर्क व पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकताओं के साथ बैठक कर संगम विहार विधानसभा चुनाव के जीत में अहम भूमिका निभाया व जीत के सूत्रधार रहे। भाजपा ने संगम विहार विधानसभा समेत चार दर्जन सीटों पर कमल खिलाकर करीब 26 साल बाद सत्ता में वापसी की है। दिल्ली के संगम विहार विधानसभा में 12 वर्ष बाद कमल खिला है। विधायक ने कहा कि आप - दा से दिल्ली मुक्त हुई। संगम विहार सहित पूरी दिल्ली में झूठ के शासन का अंत हुआ है। देश को सिर्फ पीएम नरेंद्र मोदी जी की गारंटी पर ही भरोसा है। आज दिल्ली की जनता ने प्रचंड बहुमत देकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुशासन और विकास की राजनीति को चुना है। दिल्ली के दिल में अब सिर्फ ह्यमोदी ही मोदीह्न है। दिल्ली को सुशासन और डबल इंजन की सरकार देने के लिए मैं दिल्ली की जनता का बहुत-बहुत आभारी हूं।

पेड़ी गन्ने की उत्पादन क्षमता बावग गन्ने से अधिक व लागत कम: ओम प्रकाश गुप्ता

बसंत कालीन गन्ना गोष्ठी में पेड़ी गन्ना प्रबंधन की दी गई जानकारी

कुशीनगर। उप्र गन्ना किसान संस्थान प्रशिक्षण केंद्र पिपराइच गोरखपुर के पूर्व सहायक निदेशक ओम प्रकाश गुप्ता द्वारा पडरौना गन्ना समिति परिक्षेत्र के ग्राम मनकौरा पचपेड़ा में आयोजित वसंत कालीन गन्ना गोष्ठी में किसानों को पेड़ी गन्ना प्रबंधन की जानकारी दी गई। श्री गुप्ता ने बताया कि जिले में गन्ना पेराई सत्र 2024-25 में एक 1.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में 2 लाख 35 हजार कृषको ने गन्ने की खेती किया है। पेड़ी गन्ने की उत्पादन क्षमता बावग गन्ने की तुलना में अधिक है तथा उत्पादन लागत 30 से 35% कम है। बताया कि एक एकड़ पेड़ी गन्ना फसल रखने पर 20 से 25 कुंतल बीज गन्ना की बचत होती है। जिसकी कीमत लगभग 10 हजार रु. है। बावग गन्ना काटने के बाद किसान पेड़ी गन्ना फसल की दो लाइन के बीच खाली स्थान की अच्छी तरह से जुताई गुड़ाई करें और प्रति एकड़ में 50 किग्रा डीएपी, 50 किग्रा यूरिया, 40 किलोग्राम में म्यूरेट आफ पोटाश जड़ों प्रयोग करें, सिंचाई करें। छिटकावा तरीके से उर्वरक प्रयोग ना करें। 90% से अधिक किसान पेड़ी गन्ना फसल में उर्वरक समय से नहीं देते हैं तथा छिटकवा विधि से प्रयोग करते हैं। पेड़ी गन्ना कम उपज होने से जिले की चा चीनी मिलों को पेड़ी गन्ना व आपूर्ति लगभग 150 कुंतल प्र एकड़ हो रहा है। उचित प्रबंधन होने उपज पर असर हो रहा है अ खर्च गन्ना बोने से चीनी मिल त पहुंचाने में लगभग 40 से 50 हज रुपए आ रहा है। लाभ तभी हो जब उपज 400 कुंतल एकड़ हो गन्ने में प्याज या भिंडी या मूंग कद्दू या उर्द बोयें। गोष्ठी में दाढ़ा चीनी मिल के गन्ना विकास अधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि को. 0118 तथा को. 15023 का बीज गन्ना दिया जा रहा है। सिंगल बड से गन्ने की नर्सरी तैयार करने के लिए पांच किसानों को नर्सरी ट्रे दिया गया। ढाढ़ा चीनी मिल के अधिशासी अध्यक्ष करन सिंह के हवाले से पूर्व सहायक निदेशक ने बताया कि गन्ना बुवाई के लिए बिना ब्याज ऋण पर बीज दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के प्रथम चरण में ग्राम अनंतपुर, अहिरौली तुलादास, भटनी दादन, महानंदपुर, असनहर पगारा बरडीया, जिगनी, पड़ौली, खाराइच, भूरी पाकड़ सहित गेट परिक्षेत्र में गन्ना बुवाई के लिए विशेष प्रशिक्षण अभियान चलाया जा रहा है। गन्ना उपाध्यक्ष अवधेश चंद्र गुप्ता तथा उप महाप्रबंधक गन्ना डीडी सिंह मिल की गन्ना विकास योजनाओं को बता रहे हैं।

वैलेंटाइन डे पर पार्टनर के साथ इन जगहों पर घूमने जाएं, ट्रिप रहेगी यादगार

फरवरी का महीना लव बर्ड्स के लिए बेहद खास माना जाता है। फरवरी महीने को प्यार का महीना कहा जाता है। इस दौरान लोग अपने पार्टनर के साथ घूमने का प्लान बनाते है। यदि आप भी कहीं जाने का प्लान बना रहे हैं, तो आप इन रोमांटिक जगहों पर जरुर जाएं। यह ट्रिप आपकी बेहद यादगार रहेगी।

फरवरी का महीना प्यार महीना कहा जाता है। इस महीने में वैलेंटाइन डे आता है, जो कि कपल इसे सेलिब्रेट करते हैं। कुछ ही दिनों में वैलेंटाइन वीक शुरु हो जाएगा। इस खास महीने में लव बर्ड्स कहीं न कहीं घूमने का प्लान जरुर बनाते हैं। अगर आप भी फरवरी में अपने पार्टनर के साथ छुट्टियां बिताना चाहते हैं और घूमने के लिए जगह की तलाश कर रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आइए आपको बताते हैं कि आप किस रोमांटिक प्लेस पर घूमने जा सकते हैं।

दार्जिलिंग

फरवरी के महीने में घूमने के लिए सबसे बढ़िया डेस्टिनेशन है दार्जिलिंग। यह पश्चिम बंगाल में स्थित है, जो कि चाय के बागानों से घिरी हुई है। यहां पर टाइगर हिल में एक टॉय ट्रेन चलती है इसमें बैठकर आप सुंदर पहाड़ियों का नजारा देख सकते हैं। वैलेंटाइन डे सेलिब्रेशन के लिए यह जगह काफी अच्छी है।

महाबलेश्वर

अगर आप भी पार्टनर के साथ फरवरी में घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो यह एक अच्छी डेस्टिनेशन में से एक है। यह जगह हरे-भरे प्रकृति और सुकून भरे मौसम के साथ ही पहाड़ों के नजारे देख सकते हैं। झरने और झील देख सकते हैं। मुंबई के पास इस जगह पर लोग वीकेंड पर जाना काफी पसंद करते हैं।

गोवा

अगर आप फरवरी में कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आप अपने पार्टनर के साथ गोवा जा सकते हैं। यहां पर आप समुद्र के किनारे सनसेट का मजा ले सकते हैं। यहां पर घूमने कई जगहे हैं। गोवा में आप एडवेंचर एक्टिविटी कर सकते हैं और आप समुद्र किनारे अपने पार्टनर के साथ सुकून के पल बिता सकते हैं।

हम्पी

खूबसूरत नजारे के लिए हम्पी काफी फेमस है। यूनेस्को की विश्व धरोहर मानी जाने वाली यह जगह एक हनीमून के लिए भी सबसे बढ़िया है। यहां पर केले के बागान और बिखरी पहाड़ियां हम्पी शहर के प्रमुख आकर्षणों में से एक हो सकती हैं। हम्पी में घूमने के लिए काफी जगहें है।

ट्रैकिंग के शौकिनों के लिए यह एक आदर्श स्थल है येलागिरी

येलागिरी की प्रमुख आकर्षणों में से एक येलागिरी झील है, जहां पर्यटक नौका विहार का आनंद ले सकते हैं। इस झील के चारों ओर हरे-भरे बाग-बगिचे और प्राकृतिक सुंदरता फैली हुई है, जो पर्यटकों को विश्राम और शांति का अहसास कराती है।

येलागिरी, तमिलनाडु राज्य का एक छोटा सा पर्वतीय स्थल है, जो चित्ताकर्षक प्राकृतिक दृश्यावलियों, शांतिपूर्ण वातावरण और रोमांचक पर्यटन स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान विशेष रूप से उन पर्यटकों के लिए आदर्श है जो शहरी हलचल से दूर शांतिपूर्ण जगहों की तलाश में रहते हैं। यहां के हरे-भरे पहाड़, खूबसूरत झीलें और सुरम्य ट्रैकिंग रूट्स पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। आइए जानते हैं येलागिरी के कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में।

1. येलागिरी झील

येलागिरी की प्रमुख आकर्षणों में से एक येलागिरी झील है, जहां पर्यटक नौका विहार का आनंद ले सकते हैं। इस झील के चारों ओर हरे-भरे बाग-बगिचे और प्राकृतिक सुंदरता फैली हुई है, जो पर्यटकों को विश्राम और शांति का अहसास कराती है। यहां बच्चों के खेलने के लिए पार्क भी हैं, जो इसे परिवारों के लिए एक आदर्श स्थल बनाता है।

2. स्वामीमलई हिल्स

स्वामीमलई हिल्स येलागिरी की सबसे ऊंची चोटी है और यहां ट्रैकिंग का आनंद लिया जा सकता है। ट्रैकिंग के शौकिनों के लिए यह एक आदर्श स्थल है, क्योंकि यहां की चढ़ाई आपको अद्वितीय दृश्य और प्रकृति के नजारे प्रदान करती है। इसके ऊपर से आसपास के इलाके का दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है।

3. पंगलिंगम झरना

येलागिरी के पंगलिंगम झरने में गिरते हुए पानी की आवाज और ठंडी हवा पर्यटकों को ताजगी का एहसास कराती है। यह झरना प्रकृति प्रेमियों और फोटोग्राफी के शौकिनों के लिए एक आदर्श स्थल है। यहां पहुंचने के लिए कुछ ट्रैकिंग भी करनी पड़ती है, जो इस स्थान को और भी रोमांचक बनाती है।

4. जैन मंदिर

येलागिरी में स्थित जैन मंदिर एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है। यह मंदिर शांतिपूर्ण वातावरण में स्थित है और यहां के दर्शन करने से एक अलग ही अनुभव मिलता है। यह मंदिर अपनी वास्तुकला और धार्मिक महत्व के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है।

5. विलियानुर झरना

यह झरना येलागिरी के पास स्थित एक और लोकप्रिय स्थान है। यहां पर गिरते पानी के झरने के साथ-साथ आसपास की हरी-भरी वादियों का दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है। इस झरने के पास घूमने और प्रकृति के नजारे का आनंद लिया जा सकता है।

6. येलागिरी पार्क

यह पार्क येलागिरी झील के पास स्थित है और यहां आप परिवार के साथ पिकनिक का आनंद ले सकते हैं। पार्क में बच्चों के खेलने के लिए खेलकूद के सामान और अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। यह स्थल विशेष रूप से परिवारों के लिए एक आदर्श गंतव्य है।

7. अक्टिविटी और एडवेंचर स्पोर्ट्स

येलागिर में कई एडवेंचर एक्टिविटीज भी होती हैं, जै पैराग्लाइडिंग, ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग आ दे। इन गतिविधियों के माध्यम से आप प्रकृति करीब जाकर रोमांचक अनुभव ले सकते हैं।

8. जंगल र फारी

अगर अ प जंगल और वन्यजीवों के प्रेमी हैं, तो येलागिरी के आस-पास के जंगलों में सफारी का अनुभव ी ले सकते हैं। यहां के घने जंगलों में विभिन्न कार के पक्षी और जानवरों की प्रजातियां पा जाती हैं।

9. सूर्योदय और सूर्यास्त दृश्य

येलागिर के पहाड़ों से सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अ यंत अद्भुत होता है। यहां के पहाड़ी इलाकों में सू ज के निकलने और ढलने के समय के दृश्य पर्य कों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। यदि आप प्रकृति प्रेमी हैं, तो यह दृश्य आपके लिए यादगार होग ।

येलागिर एक शांति और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर स ल है। यहाँ का वातावरण, झीलें, झरने, पहाड़ और ट्रैकिंग रूट्स आपको शांति और रोमांच ा बेहतरीन मिश्रण प्रदान करते हैं। यदि आप एव यात्रा प्रेमी हैं और प्राकृतिक सौंदर्य में खो जाना ाहते हैं, तो येलागिरी एक बेहतरीन गंतव्य हो स ता है।

इस सुर य पहाड़ी स्थल पर यात्रा करते हुए आप न केव अपनी मानसिक शांति को पुनः प्राप्त कर स ते हैं, बल्कि एक अद्भुत अनुभव भी प्राप्त कर स ते हैं।

कोलकाता की इन 3 जगहों पर सेलिब्रेट करें बर्थडे, खास और यादगार बन जाएगा दिन

किसी खास जगह पर जाकर बर्थडे मनाकर लोग इसको एक यादगार पल बनाना चाहते हैं। हम सभी बर्थडे के दिन को खास बनाने के लिए खास लोकेशन की तलाश करते हैं। अपने किसी खास के साथ इस दिन को सेलिब्रेट करना सबसे अनोखा एहसास होता है। कुछ लोग अपने परिवार या पार्टनर के साथ समय बिताने के लिए किसी सुकून देने वाले जगह पर जाना पसंद करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कोलकाता की कुछ ऐसी फेमस जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप बर्थडे पार्टी प्लान कर सकते हैं।

प्रिंसेप घाट

हुगली नदी के किनारे प्रिंसेप घाट का दृश्य और शांति से भरा माहौल आपके जन्मदिन को यादगार बना देगा। प्रिंसेप घाट की सुंदरता और ताजगी बर्थडे पार्टी के लिए बेस्ट हो सकती है। अगर आप अपने बर्थडे को अधिक यादगार बनाना चाहते हैं, तो आपको यहां पर सनसेट का दृश्य देखते हुए बर्थडे पार्टी इंजॉय कर सकते हैं। यह जगह सिर्फ दिन में ही नहीं बल्कि रात में भी ज्यादा सुंदर और बेहतरीन हो जाती है। कोलकाता की यह फेमस जगह घूमने के लिए काफी अच्छी है।

पार्क स्ट्रीट

अगर आप भी कोलकाता में बर्थडे पर घूमने के लिए पार्ट स्ट्रीट जाने का प्लान कर सकते हैं। यह कोलकाता के सबसे स्टाइलिश पर्यटक आकर्षणों में से एक है। जोकि फूड स्ट्रीट और नाइट लाइफ हब के लिए फेमस है। अक्सर लोगों को बर्थडे पार्टी राय या शाम के समय प्लान करना पसंद होता है।

इलियट पार्क

बता दें कि इलियट पार्क बैठने और आराम करने के लिए काफी अच्छी जगह है। शहर के केंद्र में स्थित यह पार्क बेहद शांत और हरा-भरा है। यहां का शांतिपूर्ण वातावरण आपका दिल जीत लेगा। बर्थडे पार्टी के लिए आप इस जगह का चयन कर सकते हैं। आप यहां पर घंटों समय बिता सकते हैं। यह पार्क दोपहर में 1 बजे से 4 बजे तक खुला रहता है। ऐसे में आप इस बीच यहां आ सकते हैं। यह कोलकाता का सबसे सुंदर पार्क है। वहीं यह पार्क बच्चों के साथ घूमने के लिए बेहद अच्छी जगह है।

स्वर्ग से भी सुंदर इस जगह पर मिलेगा मानसिक सुकून, रहन-खाने में नहीं खर्च होंगे हजारों रुपए

आज हम आपको एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर जाना बजट के अंदर होने के साथ ही आप प्रकृति के बीच समय भी बिता सकेंगे। यहां पर गंगा का कल-कल बहता ठंडा पानी, गंगा आरती, मंदिर, सुंदर घाट आपको मानसिक सुकून देगा।

घर और ऑफिस की जिम्मेदारी संभालने के कारण लोग मशीन की तरह काम करते हैं। ऐसे में इस व्यस्त लाइफस्टाइल के कारण लोग अपने लिए समय निकालना भूल जाते हैं। पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को बैलेंस करने के चक्कर में लोग खुद के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। कई बार लोग काम का इतना ज्यादा प्रेशर ले लेते हैं कि शरीर थक जाता है और दिमाग काम करना बंद कर देता है। ऐसे में आपको फौरन एक ब्रेक लेना चाहिए। क्योंकि यह ब्रेक आपको मानसिक शांति देने के साथ अंदर से हील करने का काम करता है।

इसलिए आपको काम से ब्रेक लेकर किसी ऐसी जगह जाना चाहिए, जहां पर आप खुलकर सांस ले सकें और शांति व सुकून का अनुभव कर सकें। अगर आप भी किसी ऐसी जगह की तलाश में है, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। क्योंकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर जाना बजट के अंदर हो और आप प्रकृति के बीच समय भी बिता सकेंगे। दरअसल हम एक ऐसी जगह के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर पूरे विश्व भर से लोग योग सिखने के लिए आते हैं। यह जगह और कोई नहीं बल्कि ऋषिकेश है। यहां पर गंगा का कल-कल बहता ठंडा पानी, गंगा आरती, मंदिर, सुंदर घाट और चारों ओर योग व आध्यात्म का नजारा आपको मानसिक सुकून देने का काम करेगा।

इस तरह करें ऋषिकेश जाने की प्लानिंग

दिल्ली से ऋषिकेश जाने के लिए आपको कई बस और ट्रेन मिल जाएंगी। बसों का किराया 300-400 रुपए के बीच होता है। इसके साथ ही ट्रेन के टिकट की कीमत भी करीब-करीब इतना ही होगा।

लोकल ट्रांसपोर्ट

दिल्ली से ऋषिकेश जाकर प्राइवेट कार या फिर कैब के इस्तेमाल की जगह लोकल ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करें। प्राइवेट कैब जहां आपको 200-300 रुपए खर्च करने होंगे। तो वहीं लोकल ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करने पर आपका खर्चा 40-50 रुपए ही आएगा। बता दें कि आपको ऋषिकेश बस स्टॉप से कई लोकल ट्रांसपोर्ट मिल जाएंगे।

आश्रम में रहें

आप ऋषिकेश में होटल की जगह हॉस्टल में स्टे करें। हॉस्टल की शुरूआत 500 पए से होती है। अगर आप राम झूला के पास हैं, तो आपको हां पर कई आश्रम मिल जाएंगे।

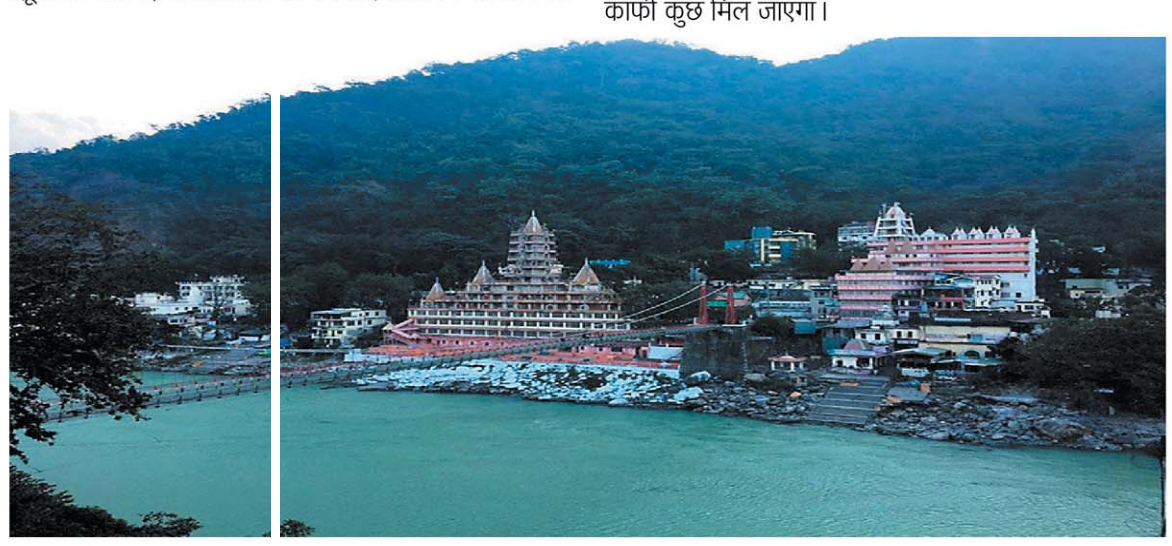

स्ट्रीट फ़ूड का लें मजा

अगर आप चाहें तो राम झूला के पास या लक्ष्मण झूला के पास खाने-पीने के लिए आपको महंगे से लेकर बजट तक में कई पैकेज मिल जाएंगे। आप यहां पर स्ट्रीट फूड का भी मजा ले सकते हैं। आपको यहां पर 100 रुपए में खाने-पीने को काफी कुछ मिल जाएगा।

एक इंकार से..........एलन मस्क की 13,74,13,60,35,000 रुपये कम हो गई संपति

मुंबई ।

दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क को बड़ा झटका लगा। टेस्ला के शेयरों में भारी गिरावट के कारण उनकी नेटवर्थ में 15.9 अरब डॉलर यानी करीब 13,74,13,60,35,000 रुपए कम हो गई। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर इंडेक्स के अनुसार, अब उनकी कुल संपत्ति घटकर 379 डॉलर अरब रह गई है। इस साल अब तक मस्क की संपत्ति में कुल 53.7 अरब डॉलर की कमी दर्ज की गई है। इस बीच मस्क ने चैटजीपीटी की पैरेंट कंपनी ओपनएआई को खरीदने के लिए 97.4 अरब डॉलर का प्रस्ताव दिया था लेकिन ओपन एआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। ऑल्टमैन ने मजाकिया अंदाज में कहा कि यदि मस्क चाहें, तब वे ट्विटर (अब एक्स) को खरीदने के लिए तैयार हैं।

इस बीच दुनिया के टॉप 10 रईसों में से 6 की नेटवर्थ में गिरावट रही। मार्क जुकरबर्ग, बर्नार्ड आरनॉल्ट, बिल गेट्स और वॉरेन बफे की नेटवर्थ में तेजी आई। जेफ बेजोस, लैरी एलिसन, लैरी पेज, सर्गेई ब्रिन और स्टीव बाल्मर की नेटवर्थ में गिरावट आई। अमीरों की लिस्ट में जुकरबर्ग (253 अरब डॉलर) दूसरे, बेजोस (252 अरब डॉलर) तीसरे, एलिसन (199 अरब डॉलर) चौथे, आरनॉल्ट (189 अरब डॉलर) पांचवें, पेज (166 अरब डॉलर) छठे, गेट्स (166अरब डॉलर) सातवें, ब्रिन (156 अरब डॉलर) आठवें, बफे (148 अरब डॉलर) नौवें और बालमर (144 अरब डॉलर) दसवें नंबर पर हैं।

इसके पहले रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में 78.3 करोड़ डॉलर की गिरावट आई और यह 87.6 अरब डॉलर रह गई है। इस साल उनकी नेटवर्थ में 2.96 अरब डॉलर की गिरावट आई है। वह दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 17वें नंबर पर बने हुए है। दूसरी ओर अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी की नेटवर्थ में 79.8 करोड़ डॉलर की तेजी आई।

इंफोसिस के कर्मचारियों की मौज, मार्च से बढ़ेगी सैलरी....इंक्रीमेंट पत्र देना शुरु

बेंगलुरु।

देश की दूसरी सबसे बड़ी आईटी कंपनी इंफोसिस ने पिछले दिनों में अपने 400 ट्रेनी को बाहर का रास्ता दिखा दिया था। इसके बाद कंपनी की काफी आलोचना हुई और कर्नाटक सरकार से भी उसके रवैये की शिकायत की गई। लेकिन, अब कंपनी ने अपने कर्मचारियों को बड़े तोहफे का ऐलान कर दिया है। कंपनी से जुड़े सूत्रों का कहना है कि फरवरी के आखिर तक कर्मचारियों को उनका इंक्रीमेंट पत्र मिलेगा। इफोसिंस की तरफ से यह वृद्धि तब हो रही है, जब मांग का माहौल सुधर रहा है और कई आईटी कंपनियों को उम्मीद है कि आने वाले वित्तीय वर्ष में तकनीकी बजट बढ़ेगा। भारतीय आईटी कंपनियां, जो अपनी अधिकांश कमाई उत्तरी अमेरिका से प्राप्त करती हैं। उन्हें उम्मीद है कि विवेकाधीन खर्च बढ़ रहा है और अब अधिक कंपनियां दो साल के अंतराल के बाद परिवर्तनकारी परियोजनाओं में निवेश करने के लिए तैयार हैं। इंफोसिस से जुड़े सूत्रों का कहना है कि कंपनी अपने कर्मचारियों को फरवरी के अंत तक वेतन वृद्धि पत्र देगी। इस बार औसत वेतन वृद्धि 5 प्रतिशत से 8 प्रतिशत के बीच हो सकती है। यह बढ़ोतरी अप्रैल, 2025 से लागू होगी। रिपोर्ट में बताया गया है कि इंफोसिस ने पदोन्नति पत्र बैचों में जारी करना शुरू कर दिया है, जिसमें पहला बैच दिसंबर के अंत में भेजा गया था और दूसरा बैच फरवरी के अंत में भेजा जाएगा। इंफोसिस के मुख्य वित्तीय अधिकारी जयेश संघराजका ने बताया कि अगले वित्तवर्ष के लिए भारत में वार्षिक वेतन वृद्धि आमतौर पर 6-8 प्रतिशत के बीच होती है और विदेशों में वेतन वृद्धि पिछले मुआवजा समीक्षाओं के अनुरूप होगी।

रीको ने सोलर पीवी मैन्यूफैक्क्रिंग यूनिट लगाने कंपनी को दी जमीन

परियोजना में सनकाइंड 1.5 गीगावाट सालाना क्षमता के सोलर का करेगा निर्माण

जयपुर।

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के तहत किए गए एमओयू को जमीन पर उतारने के लिए रीको तेजी से भूखण्ड आवंटित कर रहा है और इस कड़ी में रीको द्वारा गुरुग्राम स्थित सनकाइंड फोटोवोल्टिक्स प्राइवेट लिमिटेड को 5-5 एकड़ के दो भूखंड जयपुर के मातासुला औद्योगिक क्षेत्र में सोलर पीवी मैन्यूफैक्क्रिंग यूनिट की स्थापना के लिए आवंटित किया है। इस परियोजना के तहत सनकाइंड 1.5 गीगावाट सालाना क्षमता के सोलर पीवी मॉड्यूल का निर्माण करेगा, जो सोलर एनर्जी मैन्यूफैक्क्रिंग यूनिट का प्रमुख हिस्सा है। इस परियोजना के लिए कम्पनी ने मई 2024 में 5-एकड़ जमीन आवंटन के लिए रीको को आवेदन दिया था। रीको ने भूखण्ड आवंटन जल्द करने के लिए पहले ई-ऑक्शन किया और जमीन आवंटित करने से जुड़ी प्रक्रियाओं को पूरा करते हुए 60 दिनों में कम्पनी को जुलाई में जमीन उपलब्ध करा दी। इसके बाद पिछले साल नवंबर महीने में अतिरिक्त 5 एकड़ जमीन भी कंपनी को दी गई और इसी दौरान सनकाइंड फोटोवोल्टिक्स ने 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के तहत राज्य सरकार के साथ इस परियोजना में 200 करोड़ रुपए के निवेश के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। रीको के चेयरमैन ने कहा कि रीको का मुख्य उद्देश्य न केवल संबंधित कंपनियों को एक उपयुक्त भूखण्ड उपलब्ध कराना है, बल्कि पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी और जवाबदेह तरीके से पूरा करना है। उन्होंने कहा कि सीएम के नेतृत्व में हम सभी निवेशकों को साथ लेकर, भूखंड आवंटन सहित उनकी सभी जरूरतों को फास्ट-ट्रैक मोड में पूरा करने में लगे हुए हैं। रीको की मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा कि भूमि आवंटन से संबंधित सभी प्रमुख प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए रीको प्रतिबद्ध है। किसी भी औद्योगिक उद्यम को शुरू करने के लिए जमीन जरुरी है और निवेशकों को तेजी से भूखंड आवंटन सुनिश्चित करने के लिए हम सारे जरुरी कदम उठा रहे हैं।

रुपए में गिरावट को रोकने आरबीआई बैंकिंग सिस्टम में डालेगी 2.5 लाख करोड़

नई दिल्ली।

रुपए में आ रही गिरावट को रोकने के लिए आरबीआई ने पहले तो मुद्रा विनिमय बाजार यानी फॉरेक्स मार्केट में उसे 4 से 7 अरब डॉलर यानी करीब 60 हजार करोड़ रुपए डालने पड़े ताकि रुपए में आ रही गिरावट को रोका जा सके। अब भारतीय बैंकिंग सिस्टम में भी रिकॉर्ड पैसा डालने की तैयारी कर रहा है। जाहिर है ये सभी कोशिशें पिछले 2 सत्रों से विदेशी मुद्रा बाजार में जारी गिरावट को थामने के लिए की जा रही हैं।

रिजर्व बैंक ने एक रात वाले वैरिएबल रेपो रेट के आधार पर बैंकिंग सिस्टम में पैसे डालने के लिए बड़ी नीलामी की तैयारी की है। बुधवार को यह पैसा बैंकिंग सिस्टम में डाला जाएगा, जो 28.85 अरब डॉलर यानी करीब 2.50 लाख करोड़ रुपए होगा। यह रकम आज तक आरबीआई की ओर से एक दिन में डाली जाने वाली सबसे बड़ी मात्रा है। आरबीआई की ओर से जारी आंकड़े देखें तो पता चलता है कि बीते 10 फरवरी तक एक सप्ताह से भी कम समय के भीतर भारतीय बैंकिंग प्रणाली में लिक्विडी यानी पूंजी की कमी 4 गुना बढ़कर करीब 2 लाख करोड़ रुपए पहुंच गई है। इसका कारण आउटफ्लो और आरबीआई की ओर से आक्रामक डॉलर बिक्री को बढ़ावा देना है। इससे पहले आरबीआई ने बीते सोमवार को भी फॉरेक्स मार्केट में 4 से 7 अरब डॉलर बेचे थे, जो रुपए को समर्थन देने के लिए था।

रिजर्व बैंक ने मंगलवार को भी डॉलर बेचना जारी रखा, ताकि मुद्रा को मजबूत किया जा सके। भारतीय मुद्रा अभी पोर्टफोलियो आउटफ्लो और अमेरिकी व्यापार शुल्कों के बारे में अनिश्चितता के कारण संघर्ष कर रही है। ऐसे में रुपए को सहारा देने के लिए आरबीआई को बार-बार अपने रिजर्व में से डॉलर बेचना पड़ रहा है।

इस विनिमय की वजह से बैंकिंग सिस्टम में भी लिक्विडिटी की कमी हो जाती है, जिसे पूरा करने के लिए उसे बैंकिंग सिस्टम में भी पैसे डालने पड़ते हैं।

मोदी सरकार के नए आयकर बिल में एसेसमेंट की जगह केवल 'टैक्स ईयर' का प्रावधान

नई दिल्ली ।

बजट 2025 में केंद्रीय वित्त मंत्र निर्मला सीतारमण ने संसद में नया आयकर विधेयक पेश करने की बात कही थी। विधेयक को मंत्रिमंडल की मंजूरी दी जा चुकी है। अब विधायक किसी भी समय संसद में पेश हो सकता है। नए इनकम टैक्स बिल का ड्रॉफ्ट भी अब सामने आया है। इस ड्रॉफ्ट की भाषा मौजूदा आयकर अधिनियम, 1961 से आसान है। मौजूदा इनकम टैक्स एक्ट में कुल 880 पन्ने हैं। हालांकि, नए बिल के ड्रॉफ्ट में चैप्टर संख्या जस की तस 23 रखी गई है। ड्रॉफ्ट में वर्तमान में प्रचलित एसेसमेंट ईयर की जगह केवल 'टैक्स ईयर' का प्रावधान है। अब वित्तीय साल के पूरे 12 महीने को टैक्स ईयर कहा जाएगा, जबकि एसेसमेंट ईयर शब्द का इस्तेमाल नहीं होगा। नए बिल में वर्चुअल डिजिटल एसेट्स (वीडीए) पर टैक्स नियमों को कड़ा किया है। यह अधिनियम इनकम टैक्स एक्ट, 2025 के रूप में जाना जाएगा। इसके एक अप्रैल 2026 से प्रभावी होने की उम्मीद है। ड्राफ्ट में शेयर बाजार के लिए शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन की अवधि में कोई बदलाव नहीं हुआ है। सेक्शन 101 (बी) के तहत 12 महीने तक की अवधि को शॉर्ट टर्म कैपिटल गेंस माना जाएगा। इसके अलावा इसकी दरें भी समान रखी गई हैं। शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स 20 फीसदी पर बरकरार रहेगा। नए आयकर बिल में एक बड़ा बदलाव केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड यानी सीबीडीटी (सीबीडीटी) से जुड़ा हुआ है। नए बिल ड्राफ्ट के मुताबिक, पहले इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को विभिन्न टैक्स स्कीम को शुरू करने के लिए संसद से संपर्क करना होता था, लेकिन न्यू टैक्स एक्ट 2025 के मुताबिक, अब सीबीडीटी को स्वतंत्र रूप से ऐसी योजनाएं शुरू कर सकता। नए इनकम टैक्स बिल में 'टैक्स ईयर' को 1 अप्रैल से शुरू होने वाले 12 महीने के समय के रूप में परिभाषित किया गया है। हालांकि, किसी नए व्यवसाय या प्रोफेशन के मामले में टैक्स ईयर उसी दिन से शुरू होगा जब वह स्थापित हुआ और वित्तीय वर्ष के साथ समाप्त होगा।

1 डॉलर के निवेश कर 698 करोड़ रुपए कमाए, सेबी ने लिया एक्शन

नई दिल्ली । सिक्योरिटी एंड मार्केट एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने हिमाचल प्रदेश की कंपनी एलएस इंडस्ट्रीज और इससे जुड़ी 4 अन्य कंपनियों पर सख्त कार्रवाई कर उन्हें मार्केट से बैन किया है। इन कंपनियों पर शेयरों की कीमतों में हेरफेर करने और दुबई से जुड़े एक बड़े निवेश के जरिए गड़बड़ी करने का आरोप है। जांच में सामने आया है कि दुबई के निवेशक जहांगीर पणिक्कवीट्टिल पेरुम्बरामबाथू (जेपीपी) ने महज 1 डॉलर के निवेश से 698 करोड़ रुपए तक का मुनाफा कमाया। सेबी की जांच में सामने आया हैं कि जेपीपी ने कंपनी के 10.28 करोड़ शेयर एक डॉलर में खरीदे थे और कंपनी का रेवेन्यू जीरो होने के बावजूद इसके शेयरों में वैल्यू 10 फरवरी 2025 तक 698 करोड़ रुपए हो गई। जेपीपी के निवेश, जिसकी कीमत अब कंपनी के हाई वैल्यू 328.6 मिलियन डॉलर है, ने फेमा विनियमों के संभावित उल्लंघनों पर चिंताएं पैदा कर दी है। कंपनी के पहले के डायरेक्टर सुएट मेंग चाय ने कंपनी की 12.12 फीसदी की हिस्सेदारी जेपीपी को सिर्फ 1 डॉलर में ट्रांसफर कर दी थी इसके बाद इसके शेयरों के दामों में एकाएक तेजी थी।

बाजार में जारी हैं उतार-चढ़ाव, ब्रोकरेज हाउसेस ने इन स्टॉक्स पर निवेश करने की सलाह दी

मुंबई ।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ताबड़तोड़ फैसलों के बाद दुनियाभर में ट्रेड वार की आशंका बढ़ गई है। इसका तगड़ा असर भारतीय शेयर बाजारों पर दिख रहा है। बुधवार (12 फरवरी) को लगातार छठें दिन गिरावट रही। खुलते ही सेंसेक्स 800 अंक फिसल गया। निफ्टी भी 23000 के मनोवैज्ञानिक स्तर से नीचे आ गया। हालांकि बाद में निचले स्तरों से बाजार में अच्छी रिकवरी भी देखने को मिली। बाजार में जारी उतार-चढ़ाव के बीच लंबी अवधि का नजरिया रखना बेहतर हो सकता है। दिसंबर 2024 तिमाही के नतीजों के बाद कई स्टॉक्स आकर्षक दिख रहे हैं। ब्रोकरेज हाउसेस ने इन स्टॉक्स पर निवेश करने की सलाह दी है। इसमें भारत डायनेमिक्स, एस्ट्रा माइक्रोवेव प्रोडक्ट्स, मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स और सोलर इंडस्ट्री शामिल हैं। ब्रोकरेज फर्म ने भारत डायनेमिक्स पर खरीदारी की राय दी है। प्रति शेयर टारगेट प्राइस 1,400 रुपये रखा है। मंगलवार (11 फरवरी) को शेयर 1134 रुपये पर बंद हुआ था। इस तरह मौजूदा भाव से यह करीब 23 फीसदी का तगड़ा रिटर्न दे सकता है। ब्रोकरेज फर्म का कहना है कि भारत डायनेमिक्स (बीडीएल) ने वित्तीय साल की तीसरी तिमाही में परफॉर्मेंस अच्छी रही। कंपनी का कामकाजी मुनाफा 120 फीसदी बढ़कर 260 करोड़ रुपये हो गया, जबकि राजस्व 34 प्रतिशत बढ़कर 790 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी की अनुमानित ऑर्डर बुक 20,000 करोड़ रुपये है, जिसमें से करीब 2000 करोड़ रुपये एक्सपोर्ट से है। कंपनी ने निवेश या क्रिटिकल टेक्नोलॉजी में निवेश के लिए 135 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया। कंपनी बोर्ड ने 4 रुपये प्रति शेयर के अंतरिम लाभांश की सिफारिश की।

भारत बनेगा सेमीकंडक्टर हब, अमेरिकी कंपनी 10 हजार करोड़ रुपए का करेगी निवेश

नई दिल्ली। भारत में सेमीकंडक्टर निर्माण को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के प्रयासों को बड़ी सफलता मिली है। अमेरिकी चिप-मेकिंग टूल्स निर्माता लैम रिसर्च देश में 10 हजार करोड़ रुपए का निवेश करने जा रही है। इसकी घोषणा केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने की। यह निवेश कर्नाटक में किया जाएगा। राज्य की निवेश एजेंसी इन्वेस्ट कर्नाटक ने भी अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर इस घोषणा की पुष्टि की और बताया कि कर्नाटक इंडस्ट्रियल एरिया डेवलपमेंट बोर्ड के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। अश्विनी वैष्णव ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि हमारे सेमीकंडक्टर सफर में एक और मील का पत्थर। लैम रिसर्च ने भारत में 10 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा के बड़े निवेश की घोषणा की है। लैम रिसर्च सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए जरूरी उपकरण विकसित करने वाली प्रमुख कंपनी है। इसके उत्पाद मुख्य रूप से वैफर प्रोसेसिंग और सेमीकंडक्टर डिवाइसेस की वायरिंग में इस्तेमाल किए जाते हैं। इन्वेस्ट कर्नाटक' के एक्स हैंडल से भी इस निवेश को लेकर जानकारी साझा की गई। एक पोस्ट में कहा गया कि इन्वेस्ट कर्नाटक 2025-ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट में, लैम रिसर्च के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट सेशा वरदराजन ने कर्नाटक में बड़े निवेश की घोषणा की। हमने केआईएडीबी के साथ एक एमओयू साइन किया है, जिसके तहत अगले कुछ सालों में 10 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का निवेश किया जाएगा। यह राज्य में नवाचार और विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। भारत में सेमीकंडक्टर कंपनियों को आकर्षित करने के लिए केंद्र सरकार ने 2021 में 76 हजार करोड़ रुपए का प्रोत्साहन पैकेज घोषित किया था। सालों से इस क्षेत्र में विश्वसनीय निवेश लाने में असफल रहा भारत, 2023 में माइक्रोन को गुजरात में 22,500 करोड़ रुपए की टेस्टिंग और पैकेजिंग यूनिट स्थापित करने के लिए राजी कर लिया था। इसके बाद फरवरी 2024 में 1.3 लाख करोड़ रुपए के तीन प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। अब लैम रिसर्च के निवेश से भारत के सेमीकंडक्टर सेक्टर को और मजबूती मिलने की उम्मीद है।

म्यूचुअल फंड्स में कुल 39,687 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ

मुंबई।

जनवरी 2025 के म्यूचुअल फंड डेटा जारी हुआ हैं। इस दौरान इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 39,687 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ है। जो दिसंबर 2024 में आए 41,155 करोड़ रुपये से 3.6 प्रतिशत कम है। हालांकि, यह 2024 के औसत मासिक इनफ्लो से 21 प्रतिशत ज्यादा रहा। म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री का कुल एयूएम (एसेट अंडर मैनेजमेंट) बढ़कर 67.25 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। सभी तरह की म्यूचुअल फंड स्कीम में कुल 1.88 लाख करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो आया। इक्विटी फंड्स की 11 सब-कैटेगरी में सबसे ज्यादा निवेश थीमैटिक फंड्स में हुआ, इसमें 9,017 करोड़ रुपये का इनफ्लो आया। इसके बाद, स्मॉलकैप फंड्स में 5,721 करोड़ रुपये और फ्लेक्सीकैप फंड्स में 5,698 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। ध्यान रखने वाली बात ये हैं कि स्मॉलकैप फंड्स में निवेश 22 प्रतिशत बढ़ा, जबकि इस दौरान स्मॉलकैप सेक्टर में भारी गिरावट आई। जनवरी में निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स में 9.9 प्रतिशत की भारी गिरावट आई, जो मई 2022 के बाद इसकी सबसे खराब मासिक परफॉर्मेंस रही। इसी तरह, निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स में भी 6.1 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। हालांकि, इस गिरावट के बावजूद मिडकैप फंड्स में निवेश जारी रहा। जनवरी में मिडकैप फंड्स में 5,148 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो हुआ, जो दिसंबर 2024 के 5,093 करोड़ रुपये से अधिक था। फरवरी में भी शेयर बाजार में गिरावट जारी है, और अब तक निफ्टी स्मॉलकैप 100 व निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स में 5 प्रतिशत और गिरावट दर्ज की गई है। इसके बावजूद, निवेशक लगातार स्मॉलकैप और मिडकैप फंड्स में पैसा लगा रहे हैं, जिससे इन सेक्टर्स की वैल्यूएशन को लेकर बहस तेज हो गई है।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद, निवेशकों के 21 लाख करोड़ रुपये डूबे

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। देशी कंपनियों के घरेलू तिमाही के कमजोर परिणामों से भी बाजार पर दबाव आया है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 122.52 अंक या 0.16 फीसदी नीचे आकर 76,171 पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार 50 शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 26.55 अंक तकरीबन 0.12 फीसदी टूटकर ,045.25 पर बंद हुआ। शेयर बाजार में जारी गिरावट से निवेशकों के 21 लाख करोड़ रुपये से अधिक डूब गए है। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 12 फरवरी को घटकर 4,07,46,408 करोड़ रुपये ही रह गया। वहीं पिछले बुधवार को यह 4,28,03,611 करोड़ रुपये था। इस तरह, बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का बाजार पूंजीकर 20,57,203 करोड़ रुपये कम हुआ है।वहीं विदेशी संस्थागत निवेशकों का भारतीय शेयर बाजारों में बिकवाली का सिलसिला जारी है। विदेशी निवेशक हर दिन भारतीय स्टॉक बेच रहे हैं। एफआईआई ने मंगलवार को भारतीय शेयर बाजार में 4,486.4 करोड़ रुपये की इक्विटी बेची। इसे पहले गत दिवस भी बाजार भारी गिरावट के साथ बंद हुआ। बीएसई सेंसेक्स इंडेक्स 1,018 अंक गिरकर 76,293.60 पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 310 अंक गिरकर 23,072 पर बंद हुआ। आज सुबह बाजार गिरावट के साथ खुला। तीसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी होने से आई है। आज सुबह गिफ्ट निफ्टी फ्यूचर्स में तेजी के बाद भी बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी में एक फीसदी से ज्यादा गिरावट रही। देसी कंपनियों के दिसंबर तिमाही के कमजोर परिणामों के साथ ही जीडीपी की धीमी वृद्धि से भी बाज़ार पर दबाव आया। विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली से जुड़ी चिंताओं के कारण भी बाजार लगातार गिर रहा है। यह पिछले पांच कारोबारी सत्रों में गिरावट के साथ बंद हुआ है। सेंसेक्स आज सुबह 100 से ज्यादा अंक नीचे आया। सुबह सेंसेक्स 827.53 अंक या 1.08 फीसदी फिसलकर 75,466 पर कारोबार कर रहा था। इस दौरान विदेशी संस्थागत निवेशकों ने भारत में शुद्ध रूप से 4,486 करोड़ रुपये के शेयर बेचे जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 4,001.?9 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। दूसरी ओर एशियाई बाजारों में जापान के निक्केई में 0.21 फीसदी, हांगकांग के हैंग सेंग में 0.8 फीसदी और दक्षिण कोरिया के कोस्पी और ऑस्ट्रेलिया के एएसएक्स200 में हल्की बढ़त रही। अमेरिका में एसएंडपी 500 में 0.03 फीसदी, नैस्डैक कंपोजिट में 0.36 फीसदी की गिरावट और डॉव जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज में 0.28 फीसदी की बढ़त रही।

जनवरी में महंगाई ने दी राहत, खुदरा महंगाई दर घटकर 4.31 प्रतिशत रही

नई दिल्ली ।

जनवरी में महंगाई ने आम लोगों को थोड़ी राहत दी है। खुदरा महंगाई दर (सीपीआई आधारित महंगाई) घटकर 4.31 प्रतिशत रह गई, जो बीते पांच महीनों में सबसे कम है। दिसंबर में यह 5.22 प्रतिशत थी। गिरावट की सबसे बड़ी वजह सब्जियों के दाम में भारी कमी है। सरकारी सरकार के आंकड़ों के मुताबिक, खाद्य और पेय पदार्थों की महंगाई जनवरी में 5.68 प्रतिशत रही, जबकि दिसंबर में यह 7.7 प्रतिशत थी। खासतौर पर सब्जियों की कीमतें 25.6 प्रतिशत से गिरकर 11.35 प्रतिशत पर आ गईं, जिससे लोगों को राहत मिली। आर्थिक जानकारों का अनुमान था कि जनवरी में महंगाई 4.5 प्रतिशत तक रह सकती है, लेकिन असली आंकड़ा इससे भी कम निकला। वहीं, आरबीआई ने तिमाही के लिए महंगाई दर 4.4 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। दूसरी ओर, कुछ ज़रूरी चीजों की कीमतें अभी भी बढ़ रही हैं। अनाज की महंगाई 6.24 प्रतिशत रही, जो दिसंबर में 6.5 प्रतिशत थी। मांस और मछली 5.25 प्रतिशत महंगे हुए, जबकि पिछले महीने यह आंकड़ा 5.3 प्रतिशत था। अंडे की महंगाई सिर्फ 1.27 प्रतिशत रही, जो पिछले महीने 6.9 प्रतिशत थी, यानी अंडे सस्ते हो गए! दूध और दूध उत्पादों की महंगाई 2.85 प्रतिशत रही, जो दिसंबर में 2.8 प्रतिशत थी। दालों की महंगाई 2.59 प्रतिशत रही, जो पिछले महीने 3.8 प्रतिशत थी। वहीं, कपड़े और जूते-चप्पल की महंगाई 2.68 प्रतिशत रही, जो पिछले महीने 2.7 प्रतिशत थी। माइनिंग और मैन्युफैक्क्रिंग सेक्टर के कमजोर परफॉर्मेंस के चलते दिसंबर 2024 में भारत की औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) की ग्रोथ रेट धीमी होकर 3.2 फीसदी रह गई। सरकार ने नवंबर 2024 के आईआईपी आंकड़े को भी 5.2 फीसदी के प्रोविजनल अनुमान से संशोधित कर 5 फीसदी कर दिया है। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) के संदर्भ में मापा जाने वाला इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन दिसंबर 2023 में 4.4 फीसदी की दर से बढ़ा था। ऑफिशियल बयान के मुताबिक, दिसंबर 2024 में भारत का औद्योगिक उत्पादन सूचकांक 3.2 फीसदी बढ़ा।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की ओर से जारी आंकड़ों से पता चला है कि मैन्युफैक्क्रिंग सेक्टर का प्रोडक्शन दिसंबर 2024 में 3 फीसदी बढ़ा, जो एक साल पहले महीने में 4.6 फीसदी था। माइनिंग प्रोडक्शन की वृद्धि दर पिछले साल की समान तिमाही के 5.2 फीसदी से घटकर 2.6 फीसदी रह गई।

रुपया गिरावट के साथ बंद

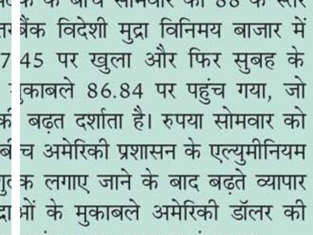

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया बुधवार को 16 पैसे की गिरावट के साथ ही 86.89 रुपये पर बंद हुआ। इससे पहले सुबह भारतीय रुपया आठ पैसे की बढ़त के साथ ही 86.65 पर खुला । वहीं मंगलवार को रुपया 28 पैसे की भारी गिरावट के साथ ही 86.73 पर बंद हुआ। गत दिवस सुबह कारोबार में रुपया 61 पैसे की बढ़त के साथ अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 86.84 पर पहुंच गया। व्यापार युद्ध की बढ़ती आशंकाओं के कारण व्यापक आर्थिक अनिश्चितता उत्पन्न हो गई है, जिससे वैश्विक मुद्रा बाजारों पर काफी प्रभाव पड़ा है। रुपया इस उठापटक के बीच सोमवार को 88 के स्तर के करीब पहुंच गया था। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 87.45 पर खुला और फिर सुबह के कारोबार में अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले 86.84 पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव से 61 पैसे की बढ़त दर्शाता है। रुपया सोमवार को 87.45 पर बंद हुआ था। इस बीच अमेरिकी प्रशासन के एल्युमीनियम तथा इस्पात पर 25 प्रतिशत शुल्क लगाए जाने के बाद बढ़ते व्यापार तनाव के बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 108.40 पर पहुंच गया।

निराश करती है जनप्रतिनिधि अपराध मामलों में देरी

ललित गर्ग

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह है कि साफ-सुथरी एवं अपराधमुक्त राजनीति का दावा करने वाले दल ही सर्वाधिक अपराधी लोगों को उम्मीदवार बना रही है। विडंबना है कि यह प्रवृत्ति कम होने के बजाय हर अगले चुनाव में और बढ़ती ही दिख रही है। आखिर कब तक अपराधी तत्व हमारे भाग्य-विधाता बनते रहेंगे? कब तक आम आदमी इस त्रासदी को जीने के लिये मजबूर होते रहेंगे।

वर्तमान और पूर्व संसद सदस्यों और विधानसभा सदस्यों के खिलाफ लंबित पांच हजार आपराधिक मामलों के निपटारे की सुनवाई कर रही एमपी-एमएलए अदालतों में कोई उल्लेखनीय प्रगति होते हुए न दिखना न केवल निराशाजनक है बल्कि यह कानून व्यवस्था की बड़ी विसंगति है। इस सन्दर्भ में सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की गई है। याचिका में आग्रह किया गया कि कोर्ट इन मामलों का जल्द से जल्द निपटारा करने एवं त्वरित कार्रवाई के लिए निर्देश जारी करे। अपेक्षा यह की गई थी कि इन मामलों की सुनवाई त्वरित गति से होगी, लेकिन इसका उलटा हो रहा है। एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान लोकसभा के 543 सदस्यों में से 251 के खिलाफ आपराधिक मामले हैं, जिनमें से 170 गंभीर आपराधिक मामले हैं, जिनमें पांच साल या उससे अधिक की सजा हो सकती है। हाल ही दिल्ली विधानसभा चुनाव परिणामों में भी आपराधिक छवि के विधायकों की बड़ी संख्या चिन्ता में डालते हुए शर्मसार कर रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भाजपा के 48 नवनिर्वाचित विधायकों में से 16 यानी 33 प्रतिशत और आम आदमी पार्टी के 22 में से 15 यानी 68 प्रतिशत नवनिर्वाचित विधायकों के खिलाफ आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं, भाजपा के सात और आप के 10 विधायक गंभीर किस्म के आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट की ओर से समय-समय पर दिए गए आदेशों और हाईकोर्ट की निगरानी के बावजूद सांसदों और विधायकों के खिलाफ बड़ी संख्या में मामले लंबित हैं, जो हमारे देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर एक बदनुमा धब्बा हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह है कि साफ-सुथरी एवं अपराधमुक्त राजनीति का दावा करने वाले दल ही सर्वाधिक अपराधी लोगों को उम्मीदवार बना रही है। विडंबना है कि यह प्रवृत्ति कम होने के बजाय हर अगले चुनाव में और बढ़ती ही दिख रही है। आखिर कब तक अपराधी तत्व हमारे भाग्य-विधाता बनते रहेंगे? कब तक आम आदमी इस त्रासदी को जीने के लिये मजबूर होते रहेंगे। भारत के लोकतंत्र के शुद्धिकरण एवं मजबूती के लिये अपराधिक राजनेताओं एवं राजनीति के अपराधीकरण पर नियंत्रण की एक नई सुबह का इंतजार कब तक करना होगा? त्रासद एवं दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि पूर्व एवं वर्तमान विधायकों और सांसदों के आपराधिक मामलों की सुनवाई के लिए गठित की गई अदालतें उनके मामलों का समय पर निपटारा करने में विफल साबित हो रही हैं। बड़ी संख्या में मामलों का लंबित रहना, जिनमें से कुछ तो दशकों से लंबित हैं, यह

दशार्ता है कि सांसदों एवं विधायकों का अपने विरुद्ध मामलों की जांच या सुनवाई पर बहुत अधिक प्रभाव है और अपने राजनीतिक वर्चस्व एवं प्रभाव के कारण मुकदमे को पूरा नहीं होने दिया जाता है।

ऐसा लगता है कि उच्च न्यायालय अपने इस दायित्व का निर्वहन सही तरह से नहीं कर पा रहे हैं। समय-समय पर ऐसी खबरें भी आती रही हैं कि एमपी-एमएलए अदालतों को जनप्रतिनिधियों के मामलों के निपटारे में तेजी लाने को कहा है, लेकिन इसके कोई सकारात्मक परिणाम सामने नहीं आ सके। समझना कठिन है कि जिन अदालतों का गठन ही कुछ विशेष मामलों के निस्तारण के लिए हुआ है, वे उनकी सुनवाई में प्राथमिकता का परिचय क्यों नहीं दे रही हैं? उचित यह होगा कि सुप्रीम कोर्ट इन अदालतों को यह स्पष्ट निर्देश दे कि वे जनप्रतिनिधियों के मामलों की सुनवाई एक निश्चित समय सीमा में करें और ऐसा करने के लिए उच्च न्यायालयों को निर्देशित करे। यदि ऐसा कुछ नहीं किया जाता तो राजनीति के अपराधीकरण को रोकना बहुत कठिन होगा और आपराधिक छवि के नेताओं के मामलें न्यायालयों में बढ़ते ही जायेंगे। यह स्थिति लोकतंत्र का उपहास उड़ाने वाली ही है। यह स्थिति अधिक चिन्ताजनक एवं दुखद इसलिये भी है कि अब तो गंभीर आपराधिक मामलों में जेल में बंद लोगों को चुनाव प्रचार के लिए भी जमानत देने का सिलसिला कायम हो गया है। जनप्रतिनिधि भी रक्षक नहीं, भक्षक हो रहे हैं। ये कानून का भक्षण करने में माहिर होते जा रहे हैं। ये कैसे जनप्रतिनिधि हैं जो पहले वोट मांगते हैं, फिर जीत के बाद लोगों को लात मारते हुए उनके साथ तरह-तरह के अपराध करते हैं। लोकतंत्र के मुखपृष्ठ पर बहुत धब्बे हैं, अंधेरे हैं, वहां मुखौटे हैं, गलत तत्त्व हैं, खुला आकाश नहीं है। मानो प्रजातंत्र न होकर अपराध तंत्र हो गया। क्या यही उन शहीदों का स्वप्न था, जो फांसी पर झूल गये थे? राजनीतिक व्यवस्था और सोच में व्यापक परिवर्तन हो ताकि कोई भी अपराधों में लिप्त नेता जन-प्रतिनिधि न बन सके।

दिल्ली नगर निगम चुनावों में जीते पार्षदों के संदर्भ में एडीआर और ह्यदिल्ली इलेक्शन वाचह्व ने चौंकाने वाली रिपोर्ट जारी कर यह बताया गया है कि दो सौ अड़तालीस विजेताओं में से बयालीस यानी सत्रह प्रतिशत निर्वाचित पार्षद ऐसे हैं, जिन पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इसके अलावा, उन्नीस पार्षद गंभीर आपराधिक मामलों के आरोपी हैं। इससे पूर्व दिल्ली में फरवरी, 2020 में हुए विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद भी एडीआर ने अपने विश्लेषण में चुने गए कम से कम आधे विधायकों पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज पाए थे। इसमें मुख्य रूप से आम आदमी पार्टी के विधायक थे। अब प्रश्न है कि दिल्ली नगर निगम हो या विधानसभा के चुनावों में भी आप पार्टी ने उम्मीदवार बनाने के लिए स्वच्छ छवि के व्यक्ति को तरजीह देने की जरूरत क्यों नहीं समझी? जबकि इस पार्टी का घोष ही रहा अपराध एवं भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति।

चुनावी सुधारों पर होने वाली तमाम चचाओं में राजनीति का अपराधीकरण एक अहम मुद्दा रहता है। राजनीति का अपराधीकरण-ह्यअपराधियों का चुनाव प्रक्रिया में भाग लेनाह्व-हमारी निर्वाचन व्यवस्था का एक नाजुक अंग बन गया है। मौजूदा लोकसभा सदस्यों में सर्वाधिक 29 प्रतिशत सदस्यों पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जबकि पिछली लोकसभा में यह आँकड़ा तुलनात्मक रूप से कम था। राजनीति का अपराधीकरण भारतीय लोकतंत्र का एक स्याह पक्ष है, जिसके मद्देनजर सर्वोच्च न्यायालय और निर्वाचन आयोग ने कई कदम उठाए हैं, किंतु इस संदर्भ में किये गए सभी नीतिगत प्रयास समस्या को पूर्णतः नियंत्रित करने में असफल रहे हैं। हालांकि एक अच्छी पहल यह हुई है कि अब हाईकोर्ट की इजाजत के बिना सरकार किसी भी सांसद एवं विधायक के खिलाफ दर्ज मामले वापस नहीं ले सकती है। राजनीति के अपराधीकरण के कारण चुनावी प्रक्रिया में काले धन का प्रयोग काफी अधिक बढ़ जाता है। इसका देश की न्यायिक प्रक्रिया पर भी दुष्प्रभाव देखने को मिलता है और अपराधियों के विरुद्ध जाँच प्रक्रिया धीमी हो जाती है। राजनीति में प्रवेश करने वाले अपराधी सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं और नौकरशाही, कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका सहित अन्य संस्थानों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। यह स्थिति समाज में हिंसा, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न की संस्कृति को प्रोत्साहित करती है और भावी जनप्रतिनिधियों के लिये एक गलत उदाहरण प्रस्तुत करती है। वैसे तो भारत का लोकतंत्र बड़े-बड़े बाहुबली एवं आपराधिक पृष्ठभूमि के नेताओं के शर्मनाक कृत्यों का गवाह रहा है, बार-बार शर्मसार हुआ है। यही कारण है कि राजनीति का चरित्र गिर गया और साख घटती जा रही है।

इन वर्षों में जितने भी चुनाव हुए हैं वे चुनाव अर्हता, योग्यता एवं गुणवत्ता के आधार पर न होकर, व्यक्ति, दल या पार्टी के धनबल, बाहुबल एवं जनबल के आधार पर होते रहे हैं, जिनको आपराधिक छवि वाले राजनेता बल देते रहे हैं। आप ने भ्रष्टाचार एवं अपराधों पर नियंत्रण की बात करते हुए राजनीति का बिगुल बजाया। लेकिन यह दल तो जल्दी ही अपराधी तत्वों से घिर गया। नेताओं की चादर इतनी मैली है कि लोगों ने उसका रंग ही काला मान लिया है। अगर कहीं कोई एक प्रतिशत ईमानदारी दिखती है तो आश्चर्य होता है कि यह कौन है? पर हल्दी की एक गांठ लेकर थोक व्यापार नहीं किया जा सकता है। यही लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबसे बड़ा संकट है। आदर्श लोकतंत्र एवं समाज व्यवस्था का निर्मित करने की जिम्मेदारी इन्हीं नेताओं पर है, जिनका चरित्र एवं साख मजबूत होना जरूरी है। दुःखद स्थिति है कि भारत अपनी आजादी के अमृत काल तक पहुंचते हुए भी स्वयं को ईमानदार नहीं बना पाया, चरित्र सम्पन्न राष्ट्र नहीं बन पाया।

(लेखक, पत्रकार एवं स्तंभकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

महाजाम की जटिल व्यवस्था

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ में देश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी करोड़ों श्रद्धालू पवित्र स्नान के लिए उमड़.रहे हैं। 144 साल बाद पड़.रहे इस महाकुंभ में आने के रास्तों में महाजाम लग गया है। तीन सौ किमी. लंबे जाम को दुनिया का सबसे बड़ा जाम बताया जा रहा है। यह विशेष पर्व ज्यों-ज्यों अपने आखिरी पड़ाव की तरफ बढ़ रहा है, श्रद्धालुओं में इसका आकर्षण बढ़ता जा रहा है। वाराणसी से प्रयागराज के मार्ग पर दस किमी. लंबा जाम है। रींवा-चित्रकूट से आने वाले मार्ग पर तकरीबन सत्रह किमी. तो भदोही से प्रयागराज पहुंचने वाले रास्ते पर पंद्रह किमी. और मिजार्पुर से आने वाले मार्ग पर बारह किमी. का महाजाम लगा है। जिला व पुलिस

प्रशासन के सारे दावों की धज्जियां उड़ाने वाले इस जाम में फंसे प्यासे-भूखे और परेशान लोगों के पास कोई विकल्प नहीं है। बिखलते नन्हे बच्चों और बीमार-बुजुर्गों के परिवार रेंगते वाहनों में ट्रैफिक अरेस्ट से जूझने को मजबूर हैं। फ्रांस में भारी बर्फबारी के चलते 1980 में 175 किमी. लंबे जाम को सबसे बड़े.जाम के रूप में याद किया जाता है। 2010 में बीजिंगझतिब्बत हाईवे पर लगे सौ किमी. के जाम से निकलने में दस दिन लग गए थे। मगर यह न तो प्राकृतिक आपदा है, न ही अचानक लगा जाम है। सरकारी दावों और व्यवस्था को लेकर तमाम प्रचार के खोखलेपन का उपहास बन रहा है। भगदड़. और बार-बार आग लगने के पीछे लापरवाही छिपी नहीं है। लखनऊ, सुलतानपुर, रायबरेली, गोरखपुर, आजमगढ़ से अयोध्या की तरफ जाने वाली सड़कों पर भी यातायात बुरी तरह प्रभावित है। प्रयागराज संगम रेलवे स्टेशन कोआवागमन के लिए बंद करने के आदेश को अफरातफरी के बाद इसे अफवाह ठहरा कर लीपापोती की गई। जाहिर है, इससे यात्रियों को भारी असुविधा होती है। स्थानीय नागरिकों को हो रही दिक्कतों पर बात नहीं हो रही है जबकि उनकी दिनचर्या भी बुरी तरह प्रभावित हो रही है, उन्हें घरबंदी में जीना पड़.रहा है। शहर और सड़कों की क्षमता का अनुमान लगाए बगैर भव्य आयोजन और करोड़ों की धन राशि उड़ाने का उद्देश्यहीन योजना की जितनी निंदा की जाए कम है। श्रद्धालुओं को हो रही दिक्कतों को बरगलाने और छद्म प्रचार से महाकुंभ के साथ महाजाम के संगम को झुठलाने से हकीकत को बदला नहीं जा सकता।

चिंतन-मनन

आध्यात्मिक आकाश का प्रकाश

चिन्मय आकाश में न तो सूर्यप्रकाश की आवश्यकता है, न चन्द्रप्रकाश अथवा अग्नि या बिजली की, क्योंकि सारे लोक स्वयं प्रकाशित हैं। इस ब्रह्मांड में केवल एक लोक- सूर्य, ऐसा है जो स्वयं प्रकाशित है। लेकिन आध्यात्मिक आकाश में सभी लोक स्वयं प्रकाशित हैं। उन समस्त लोकों के (जिन्हें वैकुण्ठ कहा जाता है) चमचमाते तेज से चमकीला आकाश बनता है, जिसे ब्रह्मज्योति कहते हैं। इस तेज का एक अंश महत-तत्व अर्थात जगत से आच्छादित रहता है। जब तक जीव इस अंधकारमय जगत में रहता है, तब तक वह बद्ध अवस्था में होता है। लेकिन ज्यों ही वह भौतिक जगत रूपी मिथ्या, विकृत वृक्ष को काटकर आध्यात्मिक आकाश में पहुंचता है, त्यों ही मुक्त हो जाता है। तब वह यहां वापस लेकिन अपनी मुक्त अवस्था में आध्यात्मिक राज्य में प्रवेश करता है और परमेर का पाषर्द बन जाता है। वहां पर वह सच्चिदानंदमय जीवन बिताता है।

जो इस संसार से अत्यधिक आसक्त है, उसके लिए इस आसक्ति का छेदन करना दुष्कर होता है। लेकिन यदि वह कृष्णभावनामृत को ग्रहण कर ले, तो उसके क्रमशः छूट जाने की संभावना है। उसे ऐसे भक्तों की संगति करनी चाहिए जो कृष्णभावनाभावित होते हैं। उसे ऐसा समाज खोजना चाहिए, जो कृष्णभावनामृत के प्रति समर्पित हो और उसे भक्ति करनी सीखनी चाहिए। इस प्रकार वह संसार के प्रति अपनी आसक्ति विच्छेद कर सकता है। यदि कोई चाहे कि केसरिया वस्त्र पहनने से भौतिक जगत के आकषर्ण से विच्छेद हो जाएगा, तो ऐसा संभव नहीं है। उसे भगवद्भक्ति के प्रति आसक्त होना पड़ेगा। यहां परमं मम शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में जगत का कोना-कोना भगवान की सम्पत्ति है, परंतु दिव्य जगत परम है और छह ऐयरे से पूर्ण है। कठोपनिषद् में भी इसकी पुष्टि की गई है कि दिव्य जगत में सूर्यप्रकाश, चन्द्र प्रकाश या तारागण की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि समस्त आध्यात्मिक आकाश भगवान की आन्तरिक शक्ति से प्रकाशमान है। उस परम धाम तक केवल शरणागति से ही पहुंचा जा सकता है, अन्य किसी साधन से नहीं।

ट्रंप ने सारी दुनिया में गिराई अमेरिका की साख

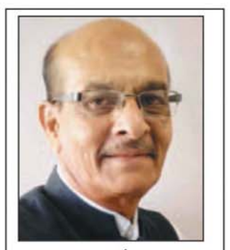

सनत जैन

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विदेशी भ्रष्ट आचरण कानून पर रोक लगाने के आदेश दिए हैं। ट्रंप के इस आदेश के बाद विदेश में व्यापार या ठेका हासिल करने के लिए अब अमेरिकी कंपनी द्वारा रिश्वत देना अपराध नहीं होगा। अभी तक अमेरिकी कानून के अनुसार यह एक बड़ा अपराध था, जिसके कारण अमेरिकी सरकार अथवा अमेरिका की कंपनियां जो सारी दुनिया के देशों में जो व्यापार करती थी, इस कानून से यह संदेश जाता था, अमेरिका की कंपनियां अन्य देशों में रिश्वत नहीं देती हैं। जिसके कारण अमेरिका की सरकार और अमेरिकी कंपनियों की साख पूरी दुनिया के देशों में बनी हुई थी। लुके-छुपे तौर पर यदि कोई कंपनी या व्यक्ति इस तरीके की कोशिश करता था, ऐसी स्थिति में अमेरिकी कानून के अनुसार उसे आर्थिक तथा आपराधिक मामलों में सजा से दंडित किया जाता था। ट्रंप ने जो निर्णय अभी लिया है, उससे सारी दुनिया के देशों में यह संदेश गया है। अमेरिका की कंपनियां अपने लाभ के लिए दुनिया के किसी भी देश के राजनेता, अधिकारियों या कारोबारियों को रिश्वत देकर ठेका हासिल कर सकती हैं। रिश्वत देकर सामान खरीदने-बेचने के कांटेक्ट हासिल कर सकती हैं। अमेरिका के साथ-साथ दुनिया के अन्य देशों को इस निर्णय से सबसे बड़ा नुकसान होने जा रहा है। किसी भी देश में अमेरिका की कंपनियों से व्यापार या कारोबार किया जाएगा, वह सभी शक के दायरे में होंगी। जिन देशों के कारोबारी या सरकारें अमेरिकी कंपनियों से खरीददारी करेंगी, उन्हें भी शक की निगाह से देखा जाएगा। ट्रंप का यह निर्णय ऐसे समय पर आया है, जबकि अमेरिकी कानून के अनुसार भारतीय उद्योगपति गौतम अडानी, उनके भतीजे सागर अडानी सहित आठ लोगों के ऊपर अमेरिका में अपराधिक मामला दर्ज है। 21 नवंबर 2024 को अमेरिका की कोर्ट में 2200 करोड़ रुपए की घूस के मामले में गौतम अडानी और अन्य के खिलाफ वारंट जारी हो चुके हैं। वारंट जारी होने के बाद से गौतम अडानी अमेरिका नहीं जा पा रहे हैं। उनका व्यवसाय पूरी दुनिया में प्रभावित हुआ है। गौतम अडानी ने अमेरिकी कानून से बचने के लिए वहां के सांसदों को अपनी पैरवी में उतारा था। डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अडानी को राहत पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे। भारत के विदेश मंत्री जयशंकर भी राजनायिक और कूटनीतिक संबंधों का इस्तेमाल कर रहे थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के पहले भारत सरकार ने जिस तरह से आयात-निर्यात व्यापार में अमेरिका के पक्ष में शुल्क को घटाया है, वह सब अडानी समूह की राहत से जोड़कर देखा जा रहा है। ट्रंप और एलन मस्क की जोड़ी की राजनेता के स्थान पर एक कारोबारी के रुप में पहचान है। दोनों ही अपने निजी कारोबार एवं फायदे को ध्यान में रखते हुए अमेरिकी सरकार के निर्णय कर रहे हैं। गौतम अडानी और भारतीय कारोबार पर एलन मस्क की भी नजर है। डोनाल्ड ट्रंप भी भारत में अपना कारोबार बढ़ाने के प्रयास में लगे हुए हैं। गौतम अडानी की गर्दन पूरी तरह से अमेरिका के शिकंजे में फंस गई है। भारत सरकार किसी भी कीमत पर गौतम अडानी को अमेरिकी कानून के चक्कर से बचाना चाहती है। अडाणी को बचाने के चक्कर में भारत को काफी आर्थिक नुकसान उठाने पड़ेंगे। दीर्घकालीन कई ऐसे समझौते हो सकते हैं, जिसके कारण भारत के हित बुरी तरह से प्रभावित होंगे। अमेरिका को भी अभी तक का सबसे बड़ा नुकसान होने की आशंका बन गई है। डोनाल्ड ट्रंप के इस निर्णय से अमेरिका की नैतिकता और पारदर्शिता पूरी तरह से दुनिया के देशों में खत्म होगी। ट्रंप के वर्तमान निर्णयों से अमेरिका की छवि एक गैंगस्टर की तरह बनने लगी है। जो लाभ के लिए किसी भी स्तर पर जाकर नैतिक और अनैतिक काम करने से पीछे नहीं हटता है। अमेरिका से कारोबार करने वाले अन्य देशों के राजनेताओं और कारोबारियों के ऊपर रिश्वतखोरी के आरोप बड़े पैमाने पर लगेंगे, जिसके कारण दुनिया के देशों में राजनीतिक अस्थिरता, रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार का वातावरण बढ़ेगा। अमेरिका को इतना बड़ा नुकसान इसके पहले कभी नहीं हुआ, जो अब हो सकता है। एक बार अमेरिका की छवि रिश्वत देकर कारोबार करने की बन गई, तो दुनिया के सभी देश अमेरिका के साथ दूरियां बनाना शुरू कर देंगे। अमेरिका अभी दुनिया का बादशाह बना हुआ है। ट्रंप के इस निर्णय से अमेरिका की बादशाहत खतरे में पड़ जाएगी। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। जल्द ही इसके परिणाम अमेरिका को भोगना पड़ सकता है। जिस तरह से ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की शुरूआत हुई है। उसके बाद कहा जाने लगा है, जिस तरह से सोवियत रूस, रेत के महल की तरह भरभरा कर गिरा था। उसी स्थिति में अब अमेरिका ने सफर शुरू कर दिया है।

नक्सलवाद : निर्णायक लड़ाई में आगे बढ़ता देश

प्रमोद भार्गव

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षा बलों के नक्सल विरोधी अभियान में बड़ी सफलता मिली है। डिस्ट्रिक रिजर्व गॉर्ड, एसटीएफ और बस्तर योद्धाओं के संयुक्त दल ने इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र में 31 नक्सली मार दिए। बीजापुर में सात दिन में यह दूसरी बड़ी मुठभेड़ है। इससे पहले गंगालूर क्षेत्र में 2 फरवरी को 8 नक्सली मारे गए थे। इसी तरह 4 अक्टूबर 2024 को सुरक्षा बलों ने अबूझमाड़ के थुलथुली में 38 नक्सलियों को मार गिराया था, लेकिन अब नक्सलियों को बालों लगातार चुनौती मिल रही है। नक्सलियों का दमन हो रहा है।

केंद्र सरकार ने 2026 तक नक्सलवाद का पूर्ण सफाया करने का संकल्प लिया हुआ है। बावजूद नक्सलियों का अस्तित्व अब तक बना है तो इसलिए क्योंकि कुछ देश विरोधी ताकतें उन्हें धन, घातक हथियार, विस्फोटक और उत्तम गुणवत्ता की संचार प्रणाली उपलब्ध करा रहे हैं। लगता है कि सजातीय वनवासियों और ग्रामीणों पर उनकी पकड़ अभी भी बनी हुई है। उधर, छत्तीसगढ़ सरकार ने भी दो टूक कह दिया है कि या तो नक्सली समाज से जुड़ जाएं या खात्मे के लिए तैयार रहें। नक्सली हिंसा लंबे समय से देश के अनेक प्रांतों में आंतरिक मुसीबत बनी हुई है। नई रणनीति के अंतर्गत अब सरकार की कोशिश है कि सीआरपीएफ की तैनाती उन सब अज्ञात क्षेत्रों में कर दी जाए, जहां नक्सली अभी भी ठिकाना बनाए हुए हैं। इस नाते केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में सबसे अधिक नक्सल हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में 4000 से अधिक सैन्यबल तैनात करने जा रहा है। केंद्र सरकार की कोशिश है कि 31 मार्च 2026 तक इस क्षेत्र को पूरी तरह नक्सलवाद से मुक्त कर दिया जाए। इतनी बड़ी संख्या में सैन्यबलों की अज्ञात क्षेत्र में पहुंच का मतलब है कि अब इस उग्रवाद से अंतिम लड़ाई होने वाली है। जिस तरह से नरेन्द्र मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर से आतंक और अलगाववाद खत्म करने की निर्णायक लड़ाई लड़ी थी, वैसी ही स्थिति अब छत्तीसगढ़ में अनुभव होने लगी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि छत्तीसगढ़ में नक्सली तंत्र कमजोर हुआ है, लेकिन उसकी शक्ति अभी शेष है। अब तक पुलिस व गुप्तचर एजेंसियां इनका सुराग लगाने में नाकाम होती रही थीं, लेकिन नक्सलियों पर शिकंजा कसने के बाद से इनको भी सूचनाएं मिलने लगी हैं। इसी का नतीजा है कि सैन्यबल इन्हें निशाना बनाने में लगातार कामयाब हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ के ज्यादातर नक्सली आदिवासी हैं। इनका कार्यक्षेत्र वह आदिवासी बहुल इलाका है, जिससे ये खुद आकर नक्सली बने हैं इसलिए इनका सुराग सुरक्षाबलों को लगा पाना मुश्किल होता है, लेकिन ये इसी आदिवासी तंत्र से बने मुखबिरों से सूचनाएं आसानी से हासिल कर लेते हैं। नक्सली समस्या से निपटने के लिए राज्य व केंद्र सरकार दावा कर रही हैं कि विकास इस समस्या का निदान है। यदि छत्तीसगढ़ सरकार के विकास संबंधी विज्ञापनों में दिए जा रहे आंकड़ों पर भरोसा करें तो छत्तीसगढ़ की तस्वीर विकास के मानदण्डों को छूती दिख रही है, लेकिन इस अनुपात में यह दावा बेमानी है कि समस्या पर अंकुश विकास की धारा से लग रहा है? क्योंकि इसी दौरान बड़ी संख्या में महिलाओं को नक्सली बनाए जाने के प्रमाण भी मिले हैं। बावजूद कांग्रेस के इन्हीं नक्सली क्षेत्रों से ज्यादा विधायक जीतकर आते रहे हैं। हालांकि नक्सलियों ने कांग्रेस पर 2013 में बड़ा हमला बोलकर लगभग उसका सफाया कर दिया था। कांग्रेस नेता महेन्द्र कर्मा ने नक्सलियों के विरुद्ध 'सलवा जुडूम' को 2005 में खड़ा किया था। सबसे पहले बीजापुर जिले के ही कुर्तु विकासखण्ड के आदिवासी ग्राम अंबेली के लोग नक्सलियों के खिलाफ खड़े होने लगे थे। नतीजतन नक्सलियों की महेन्द्र कर्मा से ठन गई। इस हमले में कर्मा के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल, कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष नंदकुमार पटेल और हरिप्रसाद समेत एक दर्जन नेता मारे गए थे, लेकिन कांग्रेस ने 2018 के विधानसभा चुनाव में अपनी खोई शक्ति फिर से हासिल कर ली थी, बावजूद नक्सलियों पर पूरी तरह लगाम नहीं लग पाई। 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को अपदस्थ कर भाजपा अब फिर सत्ता में है। उसके बाद से ही नक्सलियों के सफाए का सिलसिला चल रहा है।

दरअसल, देश में तथाकथित शहरी बुद्धिजीवियों का एक तबका ऐसा भी रहा है, जो माओवादी हिंसा को सही ठहराकर संवैधानिक लोकतंत्र को मुखर चुनौती देकर नक्सलियों का हिमायती बना हुआ था। यह न केवल उनको वैचारिक खुराक देकर उन्हें उकसाने का काम करता था, बल्कि उनके लिए धन और हथियार जुटाने के माध्यम भी खोलता था। बावजूद इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जब ये राष्ट्रघाती बुद्धिजीवी पुख्ता सबूतों के आधार पर गिरफ्तार किए गए तो बौद्धिकों और वकीलों के एक गुट ने देश के सर्वोच्च न्यायालय को भी प्रभाव में लेने की कोशिश की। माओवादियों के खिलाफ जाता है, उसकी बोलती बंद कर दी जाती है, लेकिन अब इस चरमपंथ पर पूर्ण अंकुश लगाता दिखाई दे रहा है।

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ्र 09 पटना झ्र 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादक: श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार मैनेजिंग एडिटर: डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादक: डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादक: तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

इमरान हाशमी को अपनी असफल फिल्मों पर नहीं है कोई पछतावा

इमरान हाशमी बॉलीवुड इंडस्ट्री के जाने माने अभिनेता हैं। उन्होंने अपने करियर में कई शानदार फिल्में की हैं। उनके फिल्मों की अपनी एक अलग शैली रही है और उन्हें काफी पसंद भी किया गया है। इस इंडस्ट्री में, जहां कई सितारे एक या दो फिल्मों के बाद गायब हो जाते हैं, इमरान पिछले दो दशकों से इस इंडस्ट्री में सक्रिय हैं। इस दौरान उन्हें कई बदलाव और उतार-चढ़ाव देखे हैं। इस बीच उनकी कई फिल्में असफल भी हुईं। हालांकि, अभिनेता इन सभी चीजों को लेकर कोई पछतावा नहीं करते।

इमरान हाशमी लगातार अपनी फिल्मों से दर्शकों का मनोरंजन करते आ रहे हैं। इस दौरान उनकी कई फिल्मों को दर्शकों ने काफी पसंद किया। वहीं, कुछ फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। इसे लेकर उन्होंने हाल में ही एक इंटरव्यू में बात की है। उन्होंने कहा कि उन्हें पीछे मुड़कर देखने और पछतावा करने की कोई जरुरत नहीं है। वह अपनी असफल फिल्मों को गलती नहीं मानते। उन्होंने कहा कि हर फिल्म की अपनी एक अलग यात्रा होती है, ऐसे में वह उन्हें गलती का नाम नहीं दे सकते।

अभिनेता ने अपनी बात को विस्तार से कहते हुए बताया कि वह किसी चीज को पछतावा के नजर से नहीं देखते। उन्होंने आगे कहा कि उनकी कुछ फिल्में अपने समय से आगे थीं। इस वजह से जब वो रिलीज हुईं, तो लोगों के द्वारा अच्छी तरह से स्वीकार नहीं की गई। इस पर दावा करते हुए उन्होंने कहा कि अब वो ही फिल्में काफी सफल होंगी। उन्होंने आगे कहा कि एक अभिनेता के तौर पर, उन्हें ये करना था, इसलिए उन्होंने किया, क्योंकि इन फिल्मों की स्क्रिप्ट उन्हें काफी पसंद आई थी। अभिनेता ने कहा कि वह आगे बस ऐसी फिल्में करते रहना चाहते हैं, जो उन्हें पसंद आती हैं। वह खुद को सिनेमा के प्रति जुनूनी बताते हुए कहते हैं कि वह बस दर्शकों का मनोरंजन करते रहना चाहते हैं। बात करें इमरान के वर्क फ्रंट की तो वह इन दिनों अपनी वेब सीरीज शो टाइम को लेकर चर्चा में हैं। शो टाइम के सभी एपिसोड 12 जुलाई से डिज्नी+ हॉटस्टार पर रिलीज हुए हैं। इस सीरीज को सुमित रॉय द्वारा बनाया गया है। मिहिर देसाई और अर्चित कुमार ने इसे निर्देशित किया है। इसमें इमरान हाशमी, महिमा मकवाना, मौनी रॉय, राजीव खंडेलवाल, श्रिया सरन, विशाल वशिष्ठ, नीरज माधव और विजय राज प्रमुख भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं।

खुद को चुनौती देते रहना है बेहद जरूरी

संदीप रेड्डी वंगा की फिल्म 'एनिमल' में रणबीर कपूर के साथ भूमिका अदा करने के बाद अभिनेत्री तृप्ति डिमरी के प्रशंसकों ने उन्हें नेशनल क्रश घोषित कर दिया था। इस फिल्म से उन्हें काफी लोकप्रियता मिली। इससे पहले तृप्ति 'लैला मजनू', 'बुलबुल', 'कला' जैसी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। अब अभिनेत्री ने कॉमेडी की दुनिया में कदम रखा है। उनकी फिल्म 'बैड न्यूज' 15 जुलाई को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। यह तृप्ति की पहली कॉमेडी फिल्म होगी। अभिनेत्री की फिल्म 'बैड न्यूज' को रिलीज होने में बस कुछ दिन ही बचे हैं। इस फिल्म में उनके साथ विक्की कौशल और एमी विर्क भी नजर आएंगे। प्रशंसक बड़ी ही बेसब्री के साथ फिल्म का इंतजार कर रहे हैं। फिल्म की स्टार कास्ट जोर-शोर से इसके प्रमोशन में जुटी है। वहीं, एक बातचीत में अभिनेत्री ने कॉमेडी को सबसे मुश्किल जॉनर बताया है। 'बुलबुल' और 'कला' जैसी ड्रामा फिल्मों का हिस्सा रह चुकी अभिनेत्री ने कॉमेडी फिल्म में काम करने को लेकर अपने अनुभव साझा करते हुए एक बातचीत के दौरान कहा, 'मैंने हमेशा ड्रामा जॉनर में बहुत सारी फिल्में की हैं, लेकिन मुझे लगता है कि एक अभिनेता के रूप में, अलग-अलग चीजें करते रहना और खुद को चुनौती देते रहना बहुत जरूरी है। मुझे शुरू से ही कॉमेडी थोड़ी मुश्किल लगी है।' अभिनेत्री ने कहा कि एक तरह से यह उनके लिए अच्छा था। उन्होंने आगे कहा कि यह मुश्किल था, लेकिन कुल मिलाकर सीखने का एक अच्छा अनुभव था। उन्होंने एक्शन, ड्रामा, कॉमेडी और हर तरह की भूमिकाएं अदा करने की इच्छा जाहिर की।

बैड न्यूज की टीम का जताया आभार

इसी बातचीत के दौरान 'एनिमल' अभिनेत्री ने निर्देशक आनंद तिवारी का धन्यवाद दिया। उन्होंने निर्देशक को फिल्म में उन पर भरोसा करने के लिए आभार जताया, क्योंकि किसी ने उन्हें उस स्तर पर कॉमेडी करते नहीं देखा है। तृप्ति ने कहा, 'मेरे लिए यह मुश्किल था, खासकर विक्की कौशल और एमी विर्क के साथ, क्योंकि वे बहुत प्रतिभाशाली हैं और उनकी कॉमिक टाइमिंग बहुत अच्छी है।'

तृप्ति के वर्क फ्रंट की बात करें तो 'बैड न्यूज' के बाद वह कार्तिक आर्यन और विद्या बालन के साथ 'भूल भुलैया 3' में नजर आएंगी। डिमरी के पास 'विक्की विद्या का वो वाला वीडियो', और शाजिया इकबाल की 'धड़क 2' भी है।

कटरीना कैफ की प्रेग्नेंसी की अफवाहों पर बोले विक्की कौशल

बॉलीवुड एक्टर विक्की कौशल ने वाइफ कटरीना कैफ की प्रेग्नेंसी को लेकर उड़ रही अफवाहों पर अपना रिएक्शन दिया है। विक्की अपनी अपकमिंग फिल्म बैड न्यूज के प्रमोशन के सिलसिले में दिल्ली गए थे जहां प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान मीडिया ने उनसे कटरीना की प्रेग्नेंसी के बारे में सवाल किए। विक्की ने इन सवालों के जवाब में कहा, अभी आप बैड न्यूज एन्जॉय कीजिए, जब गुड न्यूज आएगी तो हम आपके साथ जरुर शेयर करेंगे। इससे पहले भी कटरीना का लंदन से एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें उनके पति विक्की उनका हाथ पकड़कर वॉक करते नजर आ रहे थे।

फिल्म किंग में हुई अभिषेक की कास्टिंग, थ्रिलर फिल्म में निभाएंगे विलेन का रोल

शाहरुख खान इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म किंग की तैयारियों में जुटे हुए हैं। हाल ही में शाहरुख, अनंत-राधिका की शादी का हिस्सा बनने लंदन में चल रही शूटिंग छोड़कर भारत आए थे। अब रिपोर्ट्स हैं कि इस फिल्म में अभिषेक बच्चन की भी कास्टिंग हो चुकी है। अभिषेक फिल्म में विलेन की भूमिका निभाएंगे। हाल ही में आई रिपोर्ट के अनुसार, अभिषेक बच्चन ने फिल्म साइन कर ली है। वो फिल्म किंग में नेगेटिव रोल प्ले करने वाले हैं, हालांकि उनका असल किरदार कैसा होगा, इस पर कोई जानकारी नहीं मिली है। सोर्स की मानें तो वो एक सोफिस्टिकेटेड और कॉम्प्लेक्स विलेन के रोल में दिखेंगे। फिल्म में उन्हें और शाहरुख को आमने-सामने दिखाया जाने वाला है।

2 फिल्मों में साथ नजर आ चुके हैं अभिषेक-शाहरुख

फिल्म किंग से पहले अभिषेक बच्चन और शाहरुख खान 2 फिल्मों में साथ नजर आ चुके हैं। दोनों सबसे पहले साल 2006 की फिल्म कभी अलविदा न कहना में साथ नजर आए थे। इसके बाद दोनों फिल्म हैप्पी न्यू ईयर में भी साथ दिखे हैं। अभिषेक बच्चन ब्लॉकबस्टर फिल्म कभी खुशी कभी गम में भी एक कैमियो रोल निभाने वाले थे, हालांकि क्रिएटिव डिफरेंस के चलते उन्होंने फिल्म छोड़ दी थी। इसके अलावा अभिषेक, शाहरुख की फिल्म ओम शांति ओम में भी कैमियो कर चुके हैं।

2026 में रिलीज हो सकती है फिल्म किंग

कहानी, कहानी 2, जाने जा जैसी बेहतरीन फिल्मों के निर्देशक रहे सुजोय घोष फिल्म किंग को डायरेक्ट करने वाले हैं। ये एक क्राइम थ्रिलर फिल्म होने वाली है, जिसे एक ान-पैक्ड बनाया जाएगा। साल 2025 के आखिर तक फिल्म बनक तैयार हो जाएगी, जिसके बाद इसे 2026 में रिलीज किया जाएगा।

श्रद्धा कपूर, राजकुमार राव स्टारर स्त्री 2 का ट्रेलर 18 जुलाई को होगा लॉन्च

पहली स्त्री ने दर्शकों को एक मजेदार हॉरर-कॉमेडी की सैर कराई थी। एक छोटे से शहर में सेट की गई इस फिल्म में बदला लेने वाली आत्मा का वास है जिसे स्त्री के नाम से जाना जाता है। इस फिल्म में डर और हास्य को बड़ी चतुराई से मिलाया गया है, जिससे दर्शकों का मनोरंजन तो हुआ ही, साथ ही अंधेरे के बाद बाहर निकलने को लेकर उनमें थोड़ी आशंका भी पैदा हुई। हालांकि, कहानी के विवरण अभी भी गुप्त रखे गए हैं, लेकिन ट्रेलर लॉन्च से यह पता चलता है कि स्त्री 2 में क्या होने वाला है। मूल स्त्री में श्रद्धा कपूर ने स्त्री नाम की एक दर्जी की भूमिका निभाई थी, जो शहर के रहस्य को जान जाती है, राजकुमार राव रहस्य में फंसे प्रेमी की भूमिका में थे और पंकज त्रिपाठी ने स्थानीय भविष्यवक्ता की भूमिका निभाई थी। फिल्म का निर्देशन अमर कौशिक ने किया था। स्त्री 2 का टीज़र जून 2024 में रिलीज़ किया गया था, जब मूल पात्र एक और डरावने साहसिक कार्य के लिए निकलते हैं और कई राक्षसी घटनाओं के बाद चंदेरी को बुरी आत्माओं से बचाने के मिशन पर निकलते हैं। दिनेश विजान की मैडॉक फिल्म्स और जियो स्टूडियो द्वारा निर्मित यह फिल्म 15 अगस्त, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

एयर होस्टेस बनना चाहती थीं ज्योति गौबा

ज्योति गौबा अपना 42वां जन्मदिन मना रही हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार उन्होंने प्रसिद्ध ब्रांडों सहित 600 से अधिक विज्ञापनों में काम किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, जब वह कॉलेज में थी, वह एक एयर-होस्टेस बनना चाहती थीं, लेकिन बाद में उन्होंने अभिनय को अपने करियर के रूप में चुना। उन्होंने अपने अभिनय करियर की शुरुआत 2008 में हिंदी फिल्म थोडा प्यार थोडा मैजिक से की थी ज्योति ने 2009 में टीवी सीरियल मात पिता के चरणों में स्वर्ग से अपने टेलीविजन करियर की शुरुआत की थी, जिसमे उन्होंने यशोदा की भूमिका निभाई थी। ज्योति ने स्टेट ऑफ सीज 26/11 और कोटा फैक्ट्री जैसी वेब सीरीज में भी काम किया है।

सोशल मीडिया ने मुझे स्क्रीन से परे एक पहचान दी

टीवी शो सुहागन चुड़ैल में भूमिका नि ाने वाली एक्ट्रेस आराधना शर्मा ने कहा कि उ अपनी जर्नी के बारे में अपने फैंस से जुड़ने लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना प द है। सोशल मीडिया के महत्व के बारे में ात करते हुए आराधना ने कहा, सोशल मीडिया वह जगह है जहां मैं अपने प्रशंसकों से जुड़ती हूं, अपनी जर्नी के बारे में बात करती हूं। लेकिन यह एक ऐसा प्लेटफार्म है, जहां मैं सीमाएं भी निर्धा रित करती हूं। एक्ट्रेस ने कहा, मुझे अपने दर्शक से जुड़ना पसंद है, लेकिन मैं प्रामाणिकता और सम्मान में विश्वास करती हूं। व्यूज के लिए सीम एं पार करना मेरी नजर में ठीक नहीं है। मेरा कंटें मेरे सच्चे व्यक्तित्व को दर्शाता है और मैं ऐसी सी भी चीज को नहीं करती जो मेरे मूल्यों य मेरे फॉलोअर्स के लिए मेरे सम्मान से सम ौता करती हो। यह सब संतुलन के बारे में है। मैं मीन से जुड़े रहते हुए स्पॉटलाइट का आनंद लेती हूं। आराधना ने इस प्लेटफार्म को गेम-चेंजर बताते हुए कहा, इसने मुझे स्क्रीन से परे एक पहचान दी है, ससे मैं प्रशंसकों से जुड़ सकती हूं और अपने जीवन और व्यक्तित्व के उन पहलुओं को प्रदर्शित कर सकती हूं, जो शायद मेरी भूमिकाओं में हमेशा सामने नहीं आते। एक्ट्रेस ने आगे कहा, व्यक्तिगत रूप से यह मेरे लिए डांस, फिटनेस और अन्य गतिविधियों जैसे अपने जुनून को अपने फैंस के साथ शेयर करने का एक माध्यम है। साथ ही यहां से मुझे काफी प्रेरणा भी मिलती है। मैंने इस मंच के माध्यम से बहुत से प्रतिभाशाली रचनाकारों और अच्छे लोगों की खोज की है। आराधना मानती हैं कि यह एक हद तक विश्वसनीय है लेकिन यह सफलता या प्रतिभा का एकमात्र पैमाना नहीं है। मेरे लिए मेरे दर्शकों के साथ मेरा जुड़ाव सबसे ज्यादा मायने रखता है।

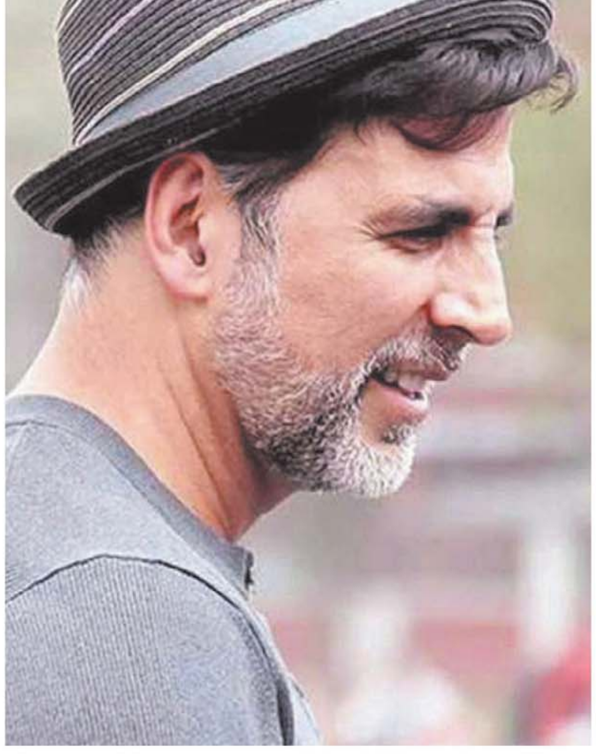

इन फिल्मों से फैंस का वेलकम करेंगे अक्षय कुमार, एक्शन से कॉमेडी फिल्मों के शो होंगे हॉउसफुल

बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षय कुमार इन दिनों सुर्खियों छाए हुए हैं। अभिनेता की फिल्म सरफिरा रिलीज हो चुकी है। फिल्म को दर्शकों का प्यार नहीं मिल सका है। हालांकि, प्रशंसकों के लिए अच्छी खबर यह है कि उनके पसंदीदा अभिनेता की कई फिल्में कतार में हैं, जिनसे खिलाड़ी कुमार दमदार वापसी करने की कोशिश करेंगे। आने वाले समय में अक्षय का गंभीर एक्शन अवतार से लेकर कॉमेडी रूप भी देखने को मिलेगा।

वेलकम टू द जंगल

वेलकम टू द जंगल इस साल की सबसे बड़ी मल्टीस्टारर फिल्म है। फिल्म में कई दिग्गज सितारे नजर आने वाले हैं। फिल्म की स्टारकास्ट को लेकर अंदाजा लगाया जा रहा है कि दर्शकों को इसमें कॉमेडी का फुल डोज मिलने वाला है। इस फिल्म का निर्देशन अहमद खान कर रहे हैं। फिल्म का निर्माण साजिद नाडियाडवाला कर रहे हैं।

सिंघम अगेन

इस लिस्ट में रोहित शेट्टी के निर्देशन में बनी अजय देवगन की फिल्म सिंघम अगेन भी शामिल है। सिंघम अगेन में इस बार बाकी दो फिल्मों से भी ज्यादा एक्शन देखने को मिलेगा। रोहित शेट्टी सिंघम अगेन के साथ एक महत्वाकांक्षी टीम लेकर आए हैं। फिल्म में अजय के साथ अक्षय कुमार भी नजर आएंगे। वे इस फिल्म में अपनी सूर्यवंशी की भूमिका दोहराएंगे। फिल्म में अजय और अक्षय के साथ करीना कपूर, दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह भी अहम भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे। यह फिल्म इस साल एक नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

खेल खेल में

अक्षय कुमार की फिल्म खेल खेल में भी रिलीज होने के लिए कतार में लगी हुई है। फिल्म में तापसी पन्नू, वाणी कपूर, एमी विर्क, फरदीन खान, आदित्य सील और प्रज्ञा जैसवाल जैसे कलाकार भी दिखेंगे। फिल्म में लोगों को कॉमेडी का फुल डोज मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। यह फिल्म 15 अगस्त 2024 को सिनेमाघरों में धमाल मचाने के लिए तैयार है।

हेरा फेरी 3-हाउसफुल 5

अक्षय कुमार कई कॉमेडी फिल्मों से भी दर्शकों को ठहाकों का डोज देंगे। अक्षय के पास कई कॉमेडी फिल्में भी कतार में हैं। अक्षय के पास हेरा फेरी 3 और हाउसफुल 5 हैं। हेरा फेरी 3 की बात करें तो इसका निर्देशन फरहाद सामजी करेंगे। अक्षय कुमार, परेश रावल और सुनील शेट्टी जैसे मूल कलाकारों के अलावा, फिल्म में संजय दत्त भी महत्वपूर्ण भूमिका में होंगे। वहीं साजिद नाडियाडवाला द्वारा निर्मित और तरुण मनसुखानी द्वारा निर्देशित फिल्म हाउसफुल 5 का बजट 350 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। इस तरह यह भारत की सबसे बड़ी कॉमेडी फिल्म साबित होगी।

बुमराह, यशस्वी चैम्पियंस ट्रॉफी से बाहर हुए , हर्षित राणा और वरुण शामिल

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम 19 फरवरी से होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 में मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के बिना ही उतरेगी। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने पूरी तरह से फिट नहीं होने के कारण बुमराह को अंतिम टीम से बाहर कर दिया है। उनकी जगह युवा तेज गेंदबाज हर्षित राणा को शामिल किया गया है। बुमराह के अलावा यशस्वी जायसवाल को भी टीम में जगह नहीं मिली है। वहीं स्पिनर वरुण चक्रवर्ती को टीम में शामिल किया गया है। वरुण ने इंग्लैंड के खिलाफ डेब्यू करते हुए अच्छा प्रदर्शन किया था। बुमराह के नहीं खेलने से भारतीय टीम को झटका लगा है पर चयन समिति के पास उन्हें बाहर करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

एक रिपोर्ट के अनुसार बुमराह को लेकर मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर, कोच गौतम गंभीर और कप्तान रोहित शर्मा के बीच लंबी बातचीत हुई। इन तीनों ने ही राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के प्रमुख नितिन पटेल की उस रिपोर्ट पर बात की जिसमें कहा गया कि बुमराह ने अपना रिहैब पूरा कर लिया है और स्कैन रिपोर्ट ठीक लग रही है पर ये अभी नहीं कहा जा सकता है कि वह टूर्नामेंट शुरू होने तक पूरी तरह फिट होकर गेंदबाजी कर पाएंगे या नहीं। ऐसे में चयनकर्ता उनको लेकर कोई खतरा मौल नहीं लेना चाहते थे। बुमराह को पांच सप्ताह के लिए कार्यभार से मुक्त रखने को कहा गया है। एनसीए प्रमुख ने फैसला अगरकर पर छोड़ दिया था क्योंकि कोई भी अनफिट खिलाड़ी को टीम में रखना नहीं चाहेगा। अगर मेडिकल टीम किसी खिलाड़ी की फिटनेस को लेकर हरी झंडी नहीं देती है, तो चयन समिति भी उसे शामिल करने का जोखित नहीं ले सकती। अगरकर, गंभीर और कप्तान रोहित के बीच अहमदाबाद में हुई बैठक के दौरान इस बात पर विचार किया गया कि क्या वे चैंपियंस ट्रॉफी में अनफिट बुमराह को लेंगे या हर्षित को रखेंगे। बुमराह को रखने में एक खतरा ये था कि अगर वह मैच में चोटिल हो जाते तो और भी नुकसान होगा। इससे पहले साल 2022 में टी20 विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक सीरीज के लिए चेतन शर्मा की समिति ने बुमराह को खेलने का अवसर दिया गया था पर उसका परिणाम नुकसानदेह रहा था।

चैंपियंस ट्रॉफी, 2025 के लिए भारतीय टीम-रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल (उप-कप्तान), विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, हर्षित राणा, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह, केएल राहुल (विकेटकीपर), ऋषभ पंत (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या, रविंद्र जडेजा, वरुण चक्रवर्ती।

ट्रैवलिंग रिजर्व- मोहम्मद सिराज, शिवम दुबे और यशस्वी जयसवाल।

कुंबले ने पत्नी के साथ संगम में लगाई डुबकी

प्रयागराज (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान अनिल कुंबले ने पत्नी चेतना रामतीर्था के साथ माघ पूर्णिमा के अवसर संगम में डुबकी लगाई। इसके बाद दोनो ने सूर्य को अर्घ्य दिया और पूरे विधि विधान से पूजा अर्चना की। उन्होंने नाव पर सवार होकर खींची तस्वीरें सोशल मीडिया में साझा कीं। इसमें माघ पूर्णिमा पर पूर्ण चंद्रमा की छवि भी नजर आ रही है। इस दिव्य आयोजन का हिस्सा बने कुंबले महाकुम्भ की भव्यता और आध्यात्मिक ऊर्जा से अभिभूत दिखे।

कुंबले ने संगम स्नान के बाद अपनी तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं। उन्होंने अपनी तस्वीरों के साथ केवल एक शब्द लिखा 'आशीर्वाद। इससे उनका तात्पर्य यही था कि त्रिवेणी संगम में स्नान कर उन्हें भी पुण्य की प्राप्ति हुई और तीर्थराज प्रयागराज का आशीष मिला है। कुंबले मंगलवार को ही प्रयागराज पहुंच गए थे। हालांकि त्रिवेणी स्नान के लिए उन्होंने माघ पूर्णिमा का पावन दिन चुना। इस दिन महाकुम्भ में वीवीआईपी प्रोटोकॉल जारी नहीं होता। इसलिए व सामान्य श्रद्धालु की तरह नाव पर सवार होकर त्रिवेणी संगम पहुंचे और संगम में स्नान किया।

रणतुंगा ने कहा, गावस्कर, वेंगसरकर और द्रविड़ से सलाह लें विराट

-बोले भारत की इस वर्तमान टीम को तीन दिन में हरा देते

दुबई (एजेंसी)। कोलंबो (ईएमएस)। श्रीलंका के पूर्व कप्तान अर्जुन रणतुंगा ने भारतीय क्रिकेट टी के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली की खराब फॉर्म को लेकर कहा है कि उन्हें पूर्व क्रिकेटरों उन्हें सुनील गावस्कर, दिलीप वेंगसरकर और राहुल द्रविड़ जैसे दिग्गजों से सलाह लेनी चाहिये। विराट पिछ्ले कुछ समय से रन बनाने में विफल रहे हैं। भारतीय टेस्ट टीम के लिए विराट के अलावा कप्तान रोहित शर्मा का खराब फार्म भी परेशानी का कारण बना है। इसी को लेकर रणतुंगा ने कहा कोहली अगर सुनील गावस्कर, दिलीप वेंगसरकर या राहुल द्रविड़ जैसे लोगों से बात करें तो अन्हें अवश्य ही लाभ होगा।

रणतुंगा ने भारतीय क्रिकेट टीम के हाल के खराब फार्म की जमकर आलोचना की है। रणतुंगा ने कहा कि हमारी 1996 की विश्व कप विजेता टीम वर्तमान भारतीय टीम को तीन दिनों में ही हरा देती। भारतीय टीम को टेस्ट में न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू धरती पर क्लीन स्वीप का सामना करना पड़ा था इसके बाद उसे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में भी हार झेलनी पड़ी। रणतुंगा ने कहा, वास और मुरली जैसे गेंदबाजों वाली मेरी टीम भारतीय टीम को तीन दिनों में ही हरा देती।

राणातुंगा की कप्तानी में हालांकि श्रीलंकाई टीम भारत को एक भी टेस्ट में नहीं हरा पाई। 13 मैचों में उन्हें 5 हार मिली। श्रीलंका की टीम ने 1982 में पहली बार भारत में आकर टेस्ट खेला था। तब से अभी तक दोनों टीमों के बीच भारत में 22 मुकाबले हुए हैं। इसमें श्रीलंका को एक भी जीत नहीं मिली है।

बुमराह को इसलिए चैम्पियंस ट्रॉफी में शामिल नहीं किया गया

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय टीम के मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी से बाहर हो गये हैं। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) चयन समिति ने बुमराह को इसलिए शामिल नहीं किया क्योंकि वह किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं लेना चाहती थी। चयन समिति को राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी ने जो रिपोर्ट दी उसमें कहा कि बुमराह अपनी पीट की एंठन से उबर गये हैं पर टूर्नामेंट शुरु होने से पहले वह पूरी तरह से फिट हो जाएंगे। ये कहा नहीं जा सकता है। ऐसे में चयनसमिति उन्हें शामिल कर कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थी। मेडिकल रिपोर्ट में साफ तौर पर कहा गया है कि तेज गेंदबाज ने अपना रिहैब पूरा कर लिया है हालांकि, बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी की मेडिकल टीम यह पुष्टि नहीं कर सकी कि वह चैंपियंस ट्रॉफी में गेंदबाजी के लिए तैयार हो पाएंगे या नहीं। ऐसे में अगरकर को

अंतिम फैसला लेना था। अगरकर ने बुमराह की एक एक फिट युवा हर्षित राणा को शामिल करना ज्यादा बेहतर समझा।

रिपोर्ट के अनुसार अगरकर बुमराह की फिटनेस को खतरे में नहीं डालना चाहते थे। बुमराह 2022 में पहले ही पीठ के निचले हिस्से की सर्जरी करवा चुके हैं। उन्हें सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अंतिम टेस्ट में गेंदबाजी करते समय एक और चोट लग गई। वह पहली पारी में 10 ओवर फेंकने के बाद बाहर हो गए थे। उन्हें एक महीने का पूरा आराम दिया गया। बुमराह इंग्लैंड के खिलाफ पूरी सफेद गेंद की घरेलू सीरीज के लिए चयन के लिए उपलब्ध नहीं थे।

बुमराह को 5 सप्ताह के लिए आराम करने के लिए कहा गया था, जिसके बाद एनसीए में उनका रिहैब स्ट्रेंथ एंड कंडीशनिंग ट्रेनर रजनीकांत और फिजियो तुलसी की देखरेख में हुआ। एनसीए ने कहा कि बुमराह की मेडिकल रिपोर्ट ठीक है, अधिकारी ने यह भी पुष्टि की कि बुमराह की स्कैन रिपोर्ट ठीक थी, लेकिन एनसीए प्रमुख नितिन पटेल ने अगरकर पर अंतिम निर्णय छोड़ दिया क्योंकि बुमराह का मैच की स्थिति में परीक्षण नहीं किया गया था। पटेल की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उन्होंने अपना रिहैब पूरा कर लिया है और स्कैन रिपोर्ट ठीक लग रही है पर ये नहीं कहा जा सकता है कि टूर्नामेंट शुरू होने तक वह गेंदबाजी के लिए फिट होंगे या नहीं। इसलिए चयनकर्ताओं ने कोई जोखिम नहीं लिया।

चैम्पियंस ट्रॉफी में तब अंतिम जोड़ी ने वेस्टइंडीज को जिताया था खिताब

लंदन । 19 फरवरी से शुरु होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 का प्रशंसक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। पाकिस्तान में खेल जाने वाली इस चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम के मैच दुबई में खेले जाएंगे। चैम्पियंस ट्रॉफी के इतिहास में एक से बढ़कर एक मुकाबले खेले गए हैं। इसमें साल 2004 का फाइनल सबसे यादगार कहा जा सकता है जब वेस्टइंडीज के निचले क्रम के बल्लेबाजों ने अपनी शानदार बल्लेबाजी से मैच पलट दिया। उस मैच में इंग्लैंड के हाथ आई जीत निकल गयी थी। ये मैच चैम्पियंस ट्रॉफी के इतिहास का अब तक का सबसे रोमांचक मैच माना जाता है। को लंदन के द ओवल इस मैच में इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.4 ओवरों में 217 रन बनाए थे। इसके बाद 218 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की शुरुआत अच्छी नहीं रही। उसकी आधी टीम 80 रनों के स्कोर तक पेवेलियन लौट गयी थी। वेस्टइंडीज का स्कोर 8 विकेट पर 147 रन था और वह हार की कगार पर थी पर इसके बाद नौवे नंबर के बल्लेबाज कर्टनी ब्राउन और दसवें नंबर-के इयान ब्रेडशॉ ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए 71 रनों की साझेदारी करके वेस्टइंडीज को जीत दिला दी थी। उस मैच में विकेटकीपर कर्टनी ब्राउन ने 55 गेंदों पर नॉटआउट 35 रन बनाए, जिसमें 2 चौके शामिल रहे. जबकि ब्रेडशॉ 51 गेंदों पर 34 रन बनाकर नॉटआउट लौटे।

ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर कुहनेमन अवैध गेंदबाजी एक्शन के आरोप में फंसे

सिडनी । ऑस्ट्रेलियाई स्पिनर मैथ्यू कुहनेमन संदेह के घेरे में हैं। कुहनेमन पर अवैध गेंदबाजी एक्शन के आरोप लगे हैं। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने कहा है कि श्रीलंका के खिलाफ गाले में हुए दो मैचों में उनके एक्शन पर सवाल उठे हैं। कुहनेमन ने इस सीरीज में 16 विकेट लिए लिए थे। अब उ ्हें ऐ जांच से गुजरना होगा जिससे तय होगा कि उनका एक्शन सही है या गलत। वहीं यदि मूल्यांकन के बाद उनके एक्शन को अवैध माना जाता है तो कुहनेमन को गेंदबा ा से निलंबित कर दिया जाएगा। इसके बाद वह तभी गेंदबाजी कर पायेंगे जब उनका एक्शन मूल्यांकन में सही पाया जाएगा। कुहनेमन अभी तस्मानिया के लिए घरेलू क्रि ट खेल सकते हैं पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गेंदबाजी नहीं कर पाएंगे। सीए ने अपने एक बयान में कहा, ऑस्ट्रेलियाई टीम को गाले में श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट व बाद मैच अधिकारियों ने उनके एक्शन को लेकर जानकारी दी। इस स्पिनर ने साल 2017 में अपने पदार्पण के बाद से 124 पेशेवर मैच खेले हैं, जिसमें पांच टेस्ट मै । और चार एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच शामिल हैं। उन्होंने 2018 से 55 बिग बैश लीग खेल खेले हैं। पेशेवर क्रिकेट के उन आठ वर्षों में यह पहली बार है जब उनके ए क्शन पर सवाल उठाया गया है। आईसीसी नियमों के अनुरूप आईसीसी इस मामले में स्वतंत्र विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम करेगा। इस मामले के सुलझने तक क्रिके ट ऑस्ट्रेलिया या इस स्पिनर के द्वारा कोई और टिप्पणी नहीं की जाएगी।

चैम्पियंस ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलियाई टीम की कप्तानी करेंगे स्मिथ

जोहांसबर्ग । आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलियाई टीम की कप्तानी अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ करेंगे। नियमिम कप्तान पैट कमिंस के चोटिल होकर बाहर होने से स्मिथ को कप्तानी की जिम्मेदारी दी गयी है। चैम्पियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से 9 मार्च तक पाकिस्तान और दुबई में खेली जाएगी। इस टूर्नामेंट के लिए पिछले महीने घोषित टीम में शामिल तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क, पैट कमिंस, जोश हेजलवुड, मिचेल मार्श चोटिल होकर बाहर हो गये हैं जबकि मार्कस स्टोइनिस ने एकदिवसीय से संन्यास ले लिया है। ऐसे में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने सीन एबॉट, बेन द्वार्शुइस, स्पेंसर जॉनसन, जेक फ्रेजर-मैकगर्क और तनवीर संघा को टीम में शामिल किया है। टीम की कप्तानी कर रहे स्मिथ विवादों में भी रहे हैं। उनपर क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने साल 2018 में गेंद से छेड़छाड़ मामले में शामिल होने के कारण दो साल का प्रतिबंध भी लगाया था। वहीं तेज गेंदबाज स्टार्क के बाहर होने से प्रशंसकों को झटक लगा है। मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने हालांकि कहा कि स्टार्क के फैसले का वह सम्मान करते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया अपना अभियान 22 फरवरी को लाहौर में इंग्लैंड के खिलाफ शुरू करेगी। इसके बाद उसे 25 फरवरी को रावलपिंडी में दूसरे ग्रुप बी मैच में दक्षिण अफ्रीका से खेलना है।

मैच फिक्सिंग के आरोप में बांग्लादेश की महिला क्रिकेटर पर पां साल का प्रतिबंध

दुबई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की भ्रष्टाचार रोधी इकाई ने बांग्लादेश की महिला क्रिकेटर शोहेली अख्तर को मैच फिक्सिंग का दोषी पाये जाने के कारण पांच साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया है। शोहेली भ्रष्टाचार के आरोपों में प्रतिबंधित होने वाली पहली महिला क्रिकेटर हैं। उन्हें 2023 टी20 विश्व कप के दौरान मैच फिक्स करने का दोषी पाया गया था।

ऑफ स्पिनर शोहेली ने बांग्लादेश की ओर से दो एकदिवसीय और 13 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले है। इस क्रिकेटर ने दक्षिण अफ्रीका में टी20 विश्व कप टूर्नामेंट के दौरान आईसीसी भ्रष्टाचार निरोधक संहिता के पांच प्रावधानों का उल्लंघन करने की बात मानी है। आरोप खिलाड़ी हालांकि बांग्लादेश की टीम का हिस्सा नहीं थीं। शोहेली ने अंतिम बार 2022 में बांग्लादेश की ओर से खेला था।

शोहेली ने संहिता के अनुच्छेद 2.1.1, 2.1.3, 2.1.4, 2.4.4 और 2.4.7 के उल्लंघन के आरोपों को स्वीकार किया और 10 फरवरी 2025 से शुरू होने वाले पांच साल के प्रतिबंध को मान लिया है। एसीयू की जांच 14 फरवरी, 2023 को आईसीसी द्वारा खिलाड़ी ए के रूप में पहचाने गए एक क्रिकेटर के साथ शोहेली की बातचीत पर केंद्रित थी। जांच के दौरान एसीयू ने पाया कि 14 फरवरी को महिला टी20 विश्व कप में बांग्लादेश बनाम ऑस्ट्रेलिया मैच से पहले शोहेली ने अपनी दोस्त और टीम की साथी से संपर्क किया जिसमें उसने उसे भविष्य में बांग्लादेश के मैचों में फिक्सिंग करने के लिए राजी करने की कोशिश की।

जांच के अनुसार शोहेली ने अपनी टीम की साथी को बताया कि उसका चचेरा भाई, जो उसके फोन पर सट्टा लगाता है, उससे पूछा कि क्या वह ऑस्ट्रेलिया मैच के दौरान हिट विकेट आउट होगी। शोहेली ने उक्त खिलाड़ी से यह भी कहा कि अगर वह फिक्सिंग करती है तो उसे 2 मिलियन बांग्लादेशी टका का भुगतान किया जाएगा, और यह पैसा उसके

चचेरे भाई द्वारा उसके सट्टे से हासिल जीत से आएगा। आईसीसी की जांच के अनुसार क्रिकेटर ने अपनी टीम की साथी को यह भी बताया कि अगर 2 मिलियन टका पर्याप्त नहीं है तो उसका चचेरा भाई उसे और अधिक भुगतान कर सकता है और उससे वादा किया कि पूरी गोपनीयता बनाए रखी जाएगी जिसमें उसके संदेशों को मिटाना भी शामिल है ताकि ो मौजूद न रहें। जिस खिलाड़ी से संपर्क किया ाया था, उसने इस मामले की जानकारी त्काल ही एसीयू को दी जिसके बाद से ही आरोपी क्रिकेटर जांच एजेंसी के निशाने पर थी।

कोबे ब्राएंट के स्नीकर्स 6.60 लाख डॉलर में बिके

खेल डैस्क । पूर्व बास्केटबॉल खिलाड़ी कोबे ब्रायंट ने 2013 के एक प्रतिष्ठित खेल के दौरान जो जूते पहने थे, वे नीलामी में 6.60 लाख डॉलर में बिके हैं। लॉस एंजिल्स लेकर्स के लिए खेलते हुए ब्रायंट गंभीर चोट के बावजूद गोल्डन स्टेट वॉरियर्स के खिलाफ शानदार खेल दिखाने में सफल रहे थे।

नीलामी करने वाली संस्था सोथबी ने बताया कि 'कोबे के करियर में 'द अकिलिस गेम' से ज्यादा 'माम्बा मानसिकता' का प्रतीक कोई क्षण नहीं है।' बता दें कि बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेमर की जनवरी 2020 में कैलिफोर्निया के कैलाबास में एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में 41 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी। इसमें उनकी 13 वर्षीय बेटी जियाना सहित 8 अन्य लोगों की मौत हो गई थी। ब्रायंट के लिए यह मुकाबला कभी न भूलने वाला साबित हुआ। खेल के दूसरे भाग में उनके घुटने पर चोट लगी। फिर चौथे क्वार्टर खत्म होने से 3 मिनट पहले ही वह गिर गए जिससे उनकी बाईं एड़ी पर चोट लगी। ब्रायंट ने उस चोट पर एक इंटरव्यू में कहा था कि जैसे ही मैंने कदम उठाया, मुझे यह पता चल गया। ऐसा महसूस हुआ कि पैर के पिछले हिस्से में लगे शॉक एब्जॉर्बर खत्म हो गए हैं। ब्रायंट इस मैच में कुछ मिनटों के लिए बेंच पर बैठे और फिर कोर्ट पर लौट आए और दो फ्री थ्रो किए। यह बास्केटबॉल कोर्ट पर ब्रायंट के सबसे प्रसिद्ध क्षणों में से एक था।

टीम में जगह नहीं मिलने से निराश शेल्डन जैक्सन ने क्रिके से संन्यास लिया

घरेलू क्रिकेट में 21 शतक के बाद भी नहीं मिला अवसर

मुम्बई । घरेलू क्रिकेट में शानदार रिकार्ड के बाद भी भारतीय टीम में अवसर नहीं मिलने से निराश बल्लेबाज शेल्डन जैक्सन ने खेल से संन्यास ले लिया है। शेल्डन ने रणजी ट्रॉफी क्वार्टर फाइनल में गुजरात से हार के सा ही । पने संन्यास की घोषणा कर दी। 38 साल के इस क्रिकेटर ने करीब 15 साल के अपने करियर में 105 प्रथम श्रेणी मैचों में 7200 से अधिक रन बनाए। इसमें 21 शतक और 39 अर्धशतक शामिला है। उनका सबसे अधिक स्कोर 186 रन रहा. शेल्डन ने अपने करि र का अंत 45 से ज्यादा की औसत के साथ किया, जिससे प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उनके प्रदर्शन की निरंतरता का पता चलता है। व एक विश्वसनीय बल्लेबाज होने के साथ अच्छे फील्डर भी रहे हैं।. सौराष्ट्र की तरफ से सीमित ओवरों की क्रिकेट में उन्होंने विकेटकी ंग भी की! उन्होंने गुजरात के खिलाफ खेले गए अपने अंतिम मैच में 14 और 27 रन बनाए। इस क्रिकेटर जैक्सन ने 2011 में सौर ट्र की तरफ से अपने प्रथम श्रेणी करियर की शुरुआत की। उनके शानदार प्रदर्शन से सौराष्ट्र ने 2012-13 के रणजी सत्र में पहली बार इस टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। घरेलू क्रिकेट में अपने शानदार प्रदर्शन के बला पर ही जैक्सन को वेस्टइंडीज दौरे के लि ए भारत ए टीम में भी जगह मिली थी। उन्होंने 2015-16 में सौराष्ट्र को रणजी चैंपियन बनने में भी अहम भूमिका निभाई थी। जैक्सन ने पिछले महीने ही सीमित ओवरों की क्रिकेट को अलविदा कह दिया था।

जब नेहरा ने कोच को घर गिफ्ट किया

नई दिल्ली । भारतीय भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व तेज गेंदबाज आशीष नेहरा अपने दौर के बेहतरीन गेंदबाजों में से एक माने जाते हैं। नेहरा संन्यास के बाद से ही कोच के तौर पर खेल से जुड़े हैं। हाल ही में एक नेहरा को लेकर एक ऐसी बात सामाने आई है जिसे जानने के बाद पता चलता है कि वह कितने बड़े दिलवाले हैं। सोशल मीडिया में इसका एक वीडियो भी आया है, इसमें बताया गया है कि नेहरा ने अपने कोच तारक सिन्हा को बेघर होता देख उन्हें नया मकान खरीदकर दिया था। तारक सिन्हा उनके बचपन के कोच थे।. भारतीय क्रिकेट को आशीष नेहरा, शिखर धवन, आकाश चोपड़ा, ऋषभ पंत, मनोज प्रभाकर और अंजुम चोपड़ा जैसे एक से बढ़कर एक स्टार खिलाड़ी देने वाले तारक का 2021 में निधन हो गया था। कमेंटेर पदमजीत सेहरावत ने कहा कि आशीष नेहरा ने अपने कोच का कठिन समय में साथ दिया था। सेहरावत ने कहा कि जब नेहरा को जब पता चला कि कोच तारक सिन्हा को किराए का घर खाली करने का नोटिस मिला है तो उन्होंने 3 दिन में नया घर खरीदकर उनको उपहार में दिया। पदमजीत ने बताया, फ़एक बार, नेहरा सोननेट क्रिकेट क्लब में ट्रेनिंग ले रहे थे और कोच तारक सिन्हा मैदान पर देर से पहुंचे। नेहरा ने अपने कोच से मजाक में कहा, 'आप अपने छात्रों को कैसे ट्रेनिंग देंगे, जब आप स्वयं ही देर से आते हैं? इसपर कोच ने कहा, 'आप एक भारतीय क्रिकेटर हैं आप एक बंगले में रहते हैं, और मैं किराए के घर में। मेरे मकान मालिक ने नोटिस भेजा है कि हमें दो दिनों के भीतर वह जगह खाली करनी होगी। मैं नया घर ढूंढने गया था, इसलिए देर हो गई।' उस मजाक के बाद अगले दो दिनों तक बारिश के कारण क्लब बंद रहा और तीसरे दिन नेहरा तीन घंटे देर से क्लब पहुंचे और उन्होंने कोच को मकान उपहार में दिया।

शुभमन गिल ने बनाया यूनिक रिकॉर्ड, एक ही मैदान पर तीनों फॉर्मेट में लगाए शतक, लिर ट में पहले भारतीय

अहमदाबाद (एजेंसी)। शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के आखिरी और तीसरे वनडे में शतक लगाकर यूनिक रिकार्ड अपने नाम कर लिया है। गिल अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में क्रिकेट के तीनों फॉर्मेट में एक ही मैदान पर शतक लगाने वाले भारतीय बन गए हैं। इस लिस्ट में अभी तक कोई भारतीय शामिल नहीं था।

गिल ने 31.2 ओवर में मार्क वुड की गेंद पर चौका लगाकर शतक पूरा किया और रिकॉर्ड अपने नाम किया। उन्होंने इसी मैदान पर टेस्ट शतक, टी20 शतक और अब वनडे शतक भी यहीं है। इस सूची में आईपीएल शतक भी शामिल है। यह एक बेहतरीन पारी है।

शुरुआत में गेंद सीम और स्विंग कर रही थी। उन्होंने अपना समय लिया लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे उस चरण से निपटने के लिए बेहतरीन स्थिति में थे और एक बार जब वे इससे आगे निकल गए तो उन्होंने दिखाया कि वे इस मैदान पर क्यों राज करते हैं। टीम के साथी और प्रशंसक उनके 7वें वनडे शतक का स्वागत करने के लिए खड़े हो गए। उन्होंने हेलमेट उतार दिया, बल्ला उठाया और जश्न मनाते हुए झुके।

तीनों प्रारूपों में एक ही स्थान पर शतक

फाफ डु प्लेसिस - वांडरर्स, जोहान्सबर्ग
डेविड वार्नर - एडिलेड ओवल
बाबर आजम - नेशनल स्टेडियम, कराची
क्विंटन डी कॉक - सुपरस्पोर्ट पार्क, सेंचुरियन
शुभमन गिल - मोटेरा, अहमदाबाद

गिल की पारी का अंत 34.3 ओवर में आदिल राशिद की गेंद पर बोल्ड हुए। गिल ने अपनी पारी के दौरान 102 गेंदों का सामना किया और 14 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 109 से अधिक की स्ट्राइक रेट से 112 रन बनाए। अपनी पारी के अंत के साथ ही गिल वनडे की पहली 50 पारियों में सर्वाधिक 2587 रन बनाने वाले खिलाड़ी भी बन गए हैं। इस मामले में उन्होंने हाशिम अमला का रिकॉर्ड तोड़ा जो इससे पहले 2486 रन बनाते हुए पहले स्थान पर थे।

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप की हमास को चेतावनी- शनिवार तक शेष सभी बंधकों को छोड़ दो, वरना सब बर्बाद हो जाएगा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने सोमवार को कहा कि अगर हमास ने शनिवार रात 12 बजे तक शेष बंधकों को रिहा नहीं किया तो सब कुछ बर्बाद हो जाएगा. बता दें, इन दिनों इजरायल और हमास के बीच सीजफायर चल रहा है. इस दौरान हमास इजरायल के बंधकों को रिहा कर रहा है. ट्रंप की यह चेतावनी उस समय आई है जब हमास ने इजरायल पर आरोप लगाते हुए कहा कि वह लगातार संघर्षविराम का उल्लंघन कर रहा है और वह बंधकों की रिहाई को रोक सकता है. डॉनल्ड ट्रंप ने साफ लफ्जों में कहा है कि गाजा में बंधक बनाए गए सभी 73 लोगों को हर हाल में शनिवार तक रिहा कर दिया जाए. अगर ऐसा नहीं हुआ तो हमास के खात्मे का प्रस्ताव रखा जाएगा. बता दें, ट्रंप ने ओवल ऑफिस में आयोजित एक प्रेस ब्रीफिंग में हमास द्वारा अपने वादे पूरे न करने पर बदले की कार्रवाई के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा कि हमास को पता चल जाएगा कि मैं क्या कहना चाहता हूं. 7 अक्टूबर 2023 को हमास आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए 251 लोगों में से 73 अभी भी उनके कब्जे में हैं. इजरायल ने उनमें से 34 को मृत घोषित कर दिया है. सीजफायर के मुताबिक हमास को शनिवार तक फिलिस्तीनी कैदियों और बंदियों के बदले में और बंधकों को रिहा करने की उम्मीद थी. ऐसा नहीं होने पर इजरायल के रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि हमास ने सीजफायर के नियमों का उल्लंघन किया है. इसके साथ-साथ सख्त कदम उठाने को कहा है. सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक बैठक भी बुलाई है।

निर्वासितों के साथ इंसानियत का व्यवहार होना चाहिए, भारतवंशी अमेरिकी सांसद की अपनी सरकार से अपील

वॉशिंगटन, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जल्द ही अमेरिका दौरे पर जाने वाले हैं। पीएम मोदी के अमेरिका दौरे और दोनों देशों के कुछ अहम मुद्दों पर भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद रो खन्ना ने बात की। उन्होंने अपनी सरकार से अपील की कि निर्वासित किए जा रहे लोगों के साथ इंसानियत वाला व्यवहार किया जाना चाहिए। रो खन्ना ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि पीएम मोदी और डोनाल्ड ट्रंप की आगामी मुलाकात में दोनों नेताओं के बीच अवैध अप्रवासियों के मुद्दे पर बातचीत हो सकती है। अवैध अप्रवासियों को निर्वासित किए जाने पर रो खन्ना ने कहा कि मेरा मानना है कि अगर निर्वासन होता है तो वो इंसानी तरीके से होना चाहिए और लोगों के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार होना चाहिए। उनका अमानवीय तरीके से उत्पीड़न नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने ये भी कहा कि बेशक, अमेरिका आने वाले लोगों को कानूनी तरीके से ही अमेरिका आना चाहिए और कानून का पालन करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि ये मुद्दा जल्द सुलझ जाएगा। रो खन्ना ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच व्यापार असंतुलन का भी मुद्दा है। अमेरिका का चीन, कनाडा और यूरोप के साथ भी व्यापार असंतुलन है। इनमें अमेरिका ज्यादा सामान खरीदता है, लेकिन ये देश अमेरिका से कम सामान खरीदते हैं। भारत के साथ भी अमेरिका का व्यापार असंतुलन है। रो खन्ना ने कहा कि इस व्यापार असंतुलन को खत्म किया जाना चाहिए। गौरतलब है कि रो खन्ना की यह टिप्पणी ऐसे वक्त आई है, जब बीती 5 फरवरी को ही 100 से ज्यादा अवैध अप्रवासियों को लेकर अमेरिकी सेना का विमान भारत पहुंचा। निर्वासित किए गए इन भारतीयों को हाथ-पैरों में बेड़ियां बंधी थीं और रास्ते में लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। इसे लेकर संसद में खूब हंगामा हुआ। जिस पर जवाब देते हुए केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बताया कि भारत सरकार, अमेरिकी सरकार के संपर्क में है ताकि ये सुनिश्चित कराया जा सके कि निर्वासितों के साथ गलत व्यवहार न हो।

जलवायु परिवर्तन पर योजनाओं की उम्मीद, लेकिन ज्यादातर देश नहीं दे पाए समय सीमा तक

वाशिंगटन, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र के जलवायु प्रमुख ने सोमवार की समय सीमा के तहत करीब 200 देशों से अपनी योजनाएं दाखिल करने को कहा था कि वे किस तरह से ऊष्मा-अवरोधक गैसों के उत्सर्जन में कटौती करेंगे। यह दस्तावेज़ इस सदी में सरकारों द्वारा तैयार किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण नीति दस्तावेजों में से एक माना गया है। हालांकि, अधिकांश देश समय सीमा तक अपनी योजनाएँ जमा नहीं कर पाएंगे। संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि जब तक वे इस पर काम कर रहे हैं, तब तक कोई समस्या नहीं है। बता दें कि अब तक 2015 के पेरिस जलवायु समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले 195 देशों में से केवल एक दर्जन देशों ने 2035 तक उत्सर्जन में कटौती के लिए अपनी योजनाएँ प्रस्तुत की हैं। इन देशों का कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन दुनिया के कुल उत्सर्जन का केवल 16.2 प्रतिशत है, और इसका अधिकांश हिस्सा संयुक्त राज्य अमेरिका से है। वहाँ, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने राष्ट्रपति जो बिडेन की योजना को खारिज कर दिया था।

पाकिस्तान : इस्लामाबाद में वकीलों का बड़ा प्रदर्शन

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में बड़ी संख्या में वकील सोमवार को सड़कों पर उतर आए। उन्होंने शीर्ष अदालत के आठ जजों के नामों को अंतिम रूप देने के लिए सुप्रीम कोर्ट में आयोजित बैठक के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। पाकिस्तान न्यायिक आयोग (जेसीपी) हाई कोर्ट के आठ जजों को सुप्रीम कोर्ट में प्रमोशन करने पर विचार कर रहा है। कई न्यायाधीश और हजारों वकील इस बैठक को स्थगित करने की मांग कर रहे हैं। इस्लामाबाद के कानूनी संगठन हाल ही में इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) में पांच जजों के ट्रांसफर का भी कड़ा विरोध कर रहे हैं और इस कदम को न्यायपालिका को विभाजित करने का प्रयास करार दे रहे हैं।

इस्लामाबाद में अधिकारियों और सुरक्षा बलों ने सुप्रीम कोर्ट की ओर जाने वाले सभी रास्तों को ब्लॉक कर दिया। विरोध प्रदर्शन के तीव्र होने की स्थिति में अतिरिक्त बलों को तैनात किया गया। वकीलों द्वारा बुलाए गए विरोध प्रदर्शन के जवाब में इस्लामाबाद पुलिस ने संघीय राजधानी में रेड जोन में कई प्रमुख प्रवेश बिंदुओं को भी बंद कर दिया।

विरोध प्रदर्शन के कारण इस्लामाबाद और रावलपिंडी के बीच कई मार्गों पर मेट्रो बस सेवाएं भी स्थगित कर दी गईं, जिससे यात्रियों को काफी असुविधा हुई। इस्लामाबाद में सुप्रीम कोर्ट के बाहर बड़ी संख्या में वकील एकत्रित हुए, न्यायपालिका की स्वतंत्रता के नारे लगाए और विरोध प्रदर्शन के समर्थन में बैनर लिए हुए थे। प्रदर्शनकारी वकीलों ने 26वें संविधान संशोधन को पूरी तरह से अस्वीकार्य बताया है। लाहौर उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन (एलसीबीए) ने भी सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें 26वें संविधान संशोधन का विरोध व्यक्त करते हुए जेसीपी बैठक को स्थगित करने की मांग की गई। बता दें पाकिस्तान के संविधान में 26वां संशोधन पिछले साल अक्टूबर में संसद द्वारा पारित किया गया। उसी दिन राष्ट्रपति की सहमति से यह लागू हो गया। संशोधन में 27 खंड शामिल हैं, जो न्यायिक, संसदीय और कार्यकारी ढांचे में परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। यह संशोधन पाकिस्तान शीर्ष न्यायाधीश की नियुक्ति में सांसद को अधिक शक्ति देता है।

जजों के ट्रांसफर का मामला तब और बढ़ गया जब न्यायमूर्ति सरफराज डोगर को लाहौर उच्च न्यायालय (एलएचसी) से आईएचसी में स्थानांतरित कर दिया गया और बाद में उनका नाम सुप्रीम कोर्ट में नियुक्ति के लिए जेसीपी को भेज दिया गया। इस मामले को इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) के कम से कम दो न्यायाधीशों ने उठाया, जिन्होंने न्यायमूर्ति डोगर की सिफारिश पर सवाल उठाते हुए सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश याह्या अफरीदी और आईएचसी के मुख्य न्यायाधीश आमिर फारूक से संपर्क किया।

पाकिस्तान के सर्वोच्च न्यायालय के कम से कम चार मौजूदा न्यायाधीशों ने 26वें संविधान संशोधन के खिलाफ याचिका पर निर्णय होने तक सोमवार को जेसीपी की बैठक स्थगित करने का प्रस्ताव रखा। विरोध के बावजूद, जेसीपी ने सोमवार को अपनी बैठक जारी रखने का फैसला किया, जिसके बाद वकीलों ने विरोध प्रदर्शन किया और आयोग द्वारा लिए गए किसी भी निर्णय का विरोध किया। वकीलों ने देश की न्यायपालिका को कमजोर करने और उसकी गरिमा को ठेस पहुंचाने के खतरनाक प्रयास के खिलाफ और अधिक विरोध प्रदर्शन करने की कसम खाई है।

विवादों में रहने वाले कान्ये वेस्ट को एक्स पर किया गया बैन

वाशिंगटन, एजेंसी। सोशल मीडिया पर कान्ये वेस्ट के हालिया व्यवहार ने उनके प्रशंसकों और आम जनता के बीच चिंता पैदा कर दी है. अमेरिकी रैपर और बिजनेसमैन कान्ये वेस्ट को ये के नाम से जाना जाता है. आपको बता दें कि बिजनेसमैन कान्ये वेस्ट को एलन मस्क की एक्स से बैन कर दिया गया है. शॉपिफाई पर बिक्री के लिए स्वस्तिक शर्ट को सूचीबद्ध करने से लेकर, यहूदियों और टेलर स्विफ्ट के खिलाफ घृणा से भरे भाषणों, सीन डिड्डी कॉम्ब्स का समर्थन करने वाले पोस्ट, ऑटिज्म को अजीब होने का कारण बताना, पत्नी बियांका सेंसरी की तस्वीरें पोस्ट करना और बहुत कुछ के कारण कान्ये वेस्ट के एक्स खाते को कथित तौर पर एलोन मस्क द्वारा बैन कर दिया गया है. वेस्ट का एक्स अकाउंट उनके बेबाक विचारों का मंच बन गया, जिसके कारण उनकी व्यापक आलोचना हुई. उन्होंने यहूदी विरोधी और नस्लवादी टिप्पणियों सहित कई विवादास्पद बयान पोस्ट किए. आपको बता दें कि 10 फरवरी को कान्ये वेस्ट का एक्स प्रोफाइल पर यह मैसेज दिखा कि यह अकाउंट मौजूद नहीं है. इसके अलावा 11 फरवरी की सुबह एक्स की आधिकारिक वेबसाइट पर अकाउंट करने पर भी यह खाता नहीं दिखा. हालांकि वेस्ट की ऑनलाइन गतिविधियों में गिरावट आई है, जिसके कारण कई लोगों ने उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सवाल उठाए हैं. हाल ही में पॉडकास्ट में, वेस्ट ने दावा किया कि वह बाइपॉलिटरी से नहीं, बल्कि ऑटिज्म से पीड़ित है. कान्ये के एक्स पोस्ट की ओर इशारा करते हुए एक यूजर की पोस्ट का जवाब देते हुए मस्क ने लिखा कि उसने जो पोस्ट किया है, उसके आधार पर उसका अकाउंट अब एनएसएफडब्ल्यू के रूप में वर्गीकृत है. आपको अब ऐसा नहीं देखना चाहिए।

अमेरिका में फिर विमान हादसा; एरिजोना के स्कॉट्सडेल एयरपोर्ट पर निजी जेट्स की टक्कर, एक की मौत

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में एक बार फिर विमान हादसा हुआ है। यहां एरिजोना के स्कॉट्सडेल एयरपोर्ट पर सोमवार दोपहर निजी जेट्स की आपस में टक्कर हो गई। इस दौरान कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई और अन्य घायल हो गए। स्कॉट्सडेल एयरपोर्ट पर विमानन विभाग और आउटरीच समन्वयक केली कुएस्टर के मुताबिक, एक मध्यम आकार का बिजनेस जेट निजी संपत्ति पर पार्क किए गए दूसरे मध्यम आकार के बिजनेस जेट से टकरा गया।

लैंडिंग गियर की खराबी की वजह से हादसा : केली कुएस्टर ने बताया कि लैंडिंग के दौरान एक जेट रनवे से उतर गया और पार्क किए गए गल्फस्ट्रीम 200 जेट से टकरा गया। प्रारंभिक जांच में आंशका जताई जा रही है कि आने वाले जेट का लैंडिंग गियर काम नहीं कर रहा होगा। इस वजह से यह टक्कर हुई। जेट ऑस्टिन (टेक्सास) से आया था।

स्कॉट्सडेल फायर डिपार्टमेंट के कैप्टन डेव फोलियो ने बताया कि घायलों में से दो को ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया और एक की हालत स्थिर है। उन्होंने कहा कि वे टक्कर में मारे गए व्यक्ति के शव की शिनाख्त के लिए काम कर रहे हैं। इसमें शामिल सभी लोगों के लिए हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं हैं। रनवे को बंद कर दिया गया है।

फिलिस्तीनियों को उनकी जमीन से हटाने की ताकत किसी के पास नहीं : तुर्की राष्ट्रपति

इस्तांबुल, एजेंसी। तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन ने कहा कि कोई भी ताकत फिलिस्तीनियों को उनकी मातृभूमि से बेदखल करने की ताकत नहीं रखती। एर्दोगन ने एशिया के तीन देशों के दौरे पर जाने से पहले रविवार को अतातुर्क एयर पोर्ट पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, कोई भी ताकत गाजावासियों को उनकी प्राचीन मातृभूमि से बाहर नहीं कर सकती। गाजा, पश्चिमी तट और पूर्वी यरुशलम सभी फिलिस्तीनियों के हैं। एर्दोगन ने कहा, इजरायल और हमास के बीच युद्धविराम समझौते के बावजूद हम देख रहे हैं कि इजरायली सरकार के पास और भी खतरनाक योजनाएं हैं। उन्होंने कहा, जायोनी लॉबी के दबाव में गाजा के मुद्दे पर नए अमेरिकी प्रशासन के सुझाव हमारे लिए कोई महत्व नहीं रखते। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, 4 जनवरी को वाशिंगटन में इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपना गाजा प्लान पेश किया। ट्रंप ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका युद्ध से तबाह गाजा पट्टी पर कब्जा करेगा और फिलिस्तीनियों को कहीं और बसाए जाने के बाद इसे आर्थिक रूप से विकसित करेगा। उन्होंने गाजा का विकास करने का प्रस्ताव रखते वक्त यह स्पष्ट कहा था कि फिलिस्तीनियों का विस्थापन स्थायी होगा। हालांकि बाद में व्हाइट हाउस में इस पर सफाई दी थी कि गाजा से कोई भी विस्थापन अस्थायी होगा।

ट्रंप ने गुरुवार को ट्रूथ सोशल प्लेटफॉर्म पर एक बार फिर अपना विचार दोहराया। उन्होंने लिखा, लड़ाई के अंत में इजरायल गाजा पट्टी को संयुक्त राज्य अमेरिका को सौंप दिया देगा। उन्होंने यह भी दावा किया कि इस क्षेत्र के पुनर्निर्माण के लिए ज़मीन पर किसी अमेरिकी सैनिक की ज़रूरत नहीं होगी। 6 जनवरी को नेतन्याहू ने इजरायल के चैनल 14 के साथ एक साक्षात्कार में कहा, सऊदी अरब में एक फिलिस्तीनी राज्य स्थापित किया जा सकता है। वहां उनके पास बहुत सारी जमीन है। ट्रंप और नेतन्याहू दोनों की टिप्पणियों ने क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विरोध बढ़ा दिया है। कई देशों ने फिलिस्तीनियों को उनकी मातृभूमि से निकालने और दो-राज्य के समाधान के लिए उनके समर्थन को नकारा है।

सलमान रुश्दी पर हमले के मामले में हादी मटर का मुकदमा शुरू : न्यूयॉर्क, एजेंसी। सलमान रुश्दी पर हमले के मामले में हादी मटर का मुकदमा शुरू हो गया है। सोमवार को अभियोजक ने बताया कि हमला इतना तेज और अचानक हुआ कि रुश्दी और उनके साथी वक्ता हेनरी रीज़ पहले तो समझ ही नहीं पाए कि क्या हो रहा है। रुश्दी को अगस्त 2022 में न्यूयॉर्क के चौटाउक्वा इंस्टीट्यूशन में एक व्याख्यान देने से पहले चाकू मारा गया था, जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे और एक आंख से अंधे हो गए थे।

अभियोजक जेसन श्मिट ने बताया कि मटर ने मंच पर चढ़कर रुश्दी पर लगभग 30 फीट दौड़ लगाई और उन पर बार-बार चाकू से वार किया। श्मिट ने कहा, यह सब इतनी तेजी से हुआ कि हमले के शिकार व्यक्ति, श्री रुश्दी और उनके बगल में बैठे व्यक्ति, श्री रीज़ को भी यह एहसास नहीं हुआ कि क्या हो रहा है। रुश्दी को हादी मटर के मुकदमे के दौरान गवाही देने की उम्मीद है, जो हमले के बाद पहली बार दोनों को आमने-सामने लाएगा।

मुख्य चुनाव आयुक्त का दावा - किसी के साथ नहीं, किसी के विरोध में नहीं, हम हैं निष्पक्ष

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश के मुख्य चुनाव आयुक्त एएमएम नासिर उद्दीन ने कहा कि आयोग का किसी भी राजनीतिक दल का समर्थन या विरोध करने का इरादा नहीं है। स्थानीय मीडिया से बात करते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ने कहा कि उन्होंने निष्पक्ष रहने की शपथ ली। नासिर उद्दीन ने कहा कि हम राजनीति में शामिल नहीं होना चाहते। हम किसी राजनीतिक दल के पक्ष में या उसके खिलाफ खड़े नहीं होना चाहते। हम निष्पक्ष रहना चाहते हैं। देश के प्रमुख समाचार पत्र द डेली स्टार की रिपोर्ट के अनुसार, रविवार को राजधानी के निर्वाचन भवन में रिपोर्टर्स फोरम फॉर इलेक्शन एंड डेमोक्रेसी (आरएफईडी) की वार्षिक आम बैठक और पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने ये टिप्पणियां कीं।

नासिर उद्दीन ने यह भी कहा कि चुनाव आयोग पर राजनीतिक नियंत्रण इसकी भूमिका की आलोचना का मुख्य कारण है। उन्होंने स्वतंत्र, निष्पक्ष और विश्वसनीय तरीके से चुनाव कराने के लिए आयोग की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। मुख्य चुनाव आयुक्त का यह बयान संघर्ष से ग्रस्त बांग्लादेश में लोकतंत्र की बहाली के लिए अहम है । पिछले साल अगस्त में एक उग्र आंदोलन के बाद शेख हसीना को सत्ता छोड़ देश से भागने पड़ा था। इसके बाद से देश में बड़े पैमाने पर हुई हिंसा जहां लोकतंत्र को गहरा झटका दिया वहीं इसने एक धर्मनिरपेक्ष राज्य होने की संभावना को भी कमजोर कर दिया। बता दें कि बांग्लादेश में 2025 के अंत या 2026 की शुरुआत में चुनाव होने वाले हैं जिसे देश में मौजूदा संकट का एकमात्र व्यवहारिक समाधान माना जा रहा है बांग्लादेश के मौजूदा नाजुक हालात में मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली वर्तमान कार्यवाहक सरकार के लिए निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए व्यवस्था बहाल करना एक बड़ी चुनौती है। अगस्त में पैदा हुए राजनीतिक और सुरक्षा शून्य ने पहले ही छात्र समूहों और कट्टरपंथी जमात-ए-इस्लाम जैसे कई ताकतों को जन्म दे दिया है। बंग्लादेश के संस्थापक माने जाने वाले शेख मुजीबुर रहमान के ऐतिहासिक निवास धानमंडी 32 का हाल ही में हुआ विनाश देश में एक कमजोर व्यवस्था का स्पष्ट बयान है।

अब ब्रिटेन में ट्रंप जैसा ऐक्शन, 19 हजार प्रवासी बाहर किए; मारे जा रहे देश भर में छापे

लंदन, एजेंसी। अमेरिका ने हाल ही में ब्राजील, भारत, मेक्सिको समेत कई देशों के अवैध प्रवासियों को बाहर निकाला है। अब बिना दस्तावेज के आए प्रवासियों और अपराधियों के खिलाफ डोनाल्ड ट्रंप जैसा ही ऐक्शन ब्रिटेन में भी शुरू हुआ है। ब्रिटेन में लेबर पार्टी के सत्ता में आने के बाद से करीब 19000 अवैध प्रवासियों और अपराधियों को देश से बाहर कर गया है। इन लोगों को डिपोर्ट करने का एक वीडियो भी ब्रिटिश सरकार की ओर से जारी किया गया है। पूरे देश में ही अवैध प्रवासियों के खिलाफ यह अभियान चलाया गया है। इसके लिए छापेमारी की गई है, जिसमें बड़ी संख्या में अवैध प्रवासी पाए गए। इन लोगों को डिपोर्ट किया गया है।

इस अभियान के तहत भारतीय रेस्तरां, नेल बार, स्टोर और कार वॉश में छापेमारी की गई है। इनमें बड़ी संख्या में अवैध प्रवासियों को काम पर रखे जाने की शिकायतें मिली थीं। ब्रिटिश होम मिनिस्टर वेटे कूपर ने कहा कि उनके विभाग ने जनवरी में बड़े पैमाने पर छापेमारी की है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार आने के बाद से कुल 19000 लोगों को डिपोर्ट किया गया है। जनवरी महीने में ही 828 परिसरों पर रेड मारी गई है और 609 लोगों को गिरफ्तार किया गया। बीते साल की जनवरी के मुकाबले यह 73 फीसदी ज्यादा नंबर था। 7 लोगों को तो अकेले हंबरसाइड स्थित भारतीय रेस्तरां में छापा मारकर अरेस्ट किया गया। इसके

अलावा 4 को हिरासत में लिया गया है।

इसके अलावा ब्रिटिश संसद में नया बिल भी पेश किया गया है। इस विधेयक में सीमा सुरक्षा, शरण और अवैध प्रवासियों को बाहर करने का प्रस्ताव रखा गया है। ब्रिटिश सांसदों का कहना है कि इस विधेयक को लाने से बड़ी संख्या में आपराधिक गैंगों को खत्म करने में मदद मिलेगी। पीएम कीर स्टारमर की सरकार का कहना है कि पूर्व की सरकारों ने सीमा सुरक्षा से समझौता किया था। अब इस पर सख्त कदम उठाए जाएंगे। ब्रिटिश सरकार ने उन संस्थानों को भी फाइल लगाने का फैसला लिया है, जो अवैध प्रवासियों को नौकरी देंगे। ऐसे मामलों में प्रति व्यक्ति 60 हजार पाउंड का फाइन लगाने का फैसला लिया गया है। अब तक कुल 1000 नोटिस जारी किए गए हैं। बीते साल जुलाई में हुए आम चुनाव के बाद से ही अब तक 16,400 लोगों को बाहर किया जा चुका है।

हिंसा फैलाने वाले शैतानों के खिलाफ सरकार की बड़ी कार्रवाई, 1300 से ज्यादा गिरफ्तार

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश के सुरक्षा बलों ने शनिवार को शुरू किए गए एक बड़े एक्शन में सोमवार तक 1,300 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है। इस कार्रवाई का उद्देश्य पिछले कुछ दिनों से देश में जारी हिंसा की नई लहर को दबाना है। देशव्यापी अभियान को ऑपरेशन डेविल हंट नाम दिया गया है। मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के परिवार और उनकी अवामी लीग पार्टी के प्रमुख सदस्यों से जुड़ी संपत्तियों को निशाना बनाए जाने के बाद यह ऑपरेशन शुरु किया।

हिंसा तेज से पूरे देश में फैल गई, भीड़ ने अवामी लीग के प्रतीकों को निशाना बनाया और राजनीतिक गुटों के बीच तनाव बढ़ गया। शुक्रवार रात गाजीपुर जिले में छात्रों और नागरिकों पर हमले के बाद अंतरिम सरकार ने शनिवार को ऑपरेशन डेविल हंट का आदेश दिया। ऑपरेशन में शामिल संयुक्त बलों में सेना के जवान, पुलिस और विशेष इकाइयां शामिल हैं। अब तक, अधिकारियों ने पिछले चार दिनों में देश में फैली अशांति और हिंसा के सिलसिले में 1,300 लोगों को गिरफ्तार किया है।

अंतरिम सरकार ने देश को अस्थिर करने की कोशिश कर रहे सभी शैतानों को जड़ से उखाड़ फेंकने की कसम खाई है। हिंसा के दौरान सबसे भयावह घटनाओं में से एक तब हुई जब प्रदर्शनकारियों ने राजधानी ढाका में स्थित बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर रहमान के ऐतिहासिक आवास में आग लगा दी। यह घर देश के इतिहास में अहम जगह रखता है क्योंकि यहीं से रहमान ने 1971 में पाकिस्तान से बांग्लादेश की स्वतंत्रता की घोषणा की थी। ऑपरेशन डेविल हंट की निगरानी एक कमांड सेंटर स्थापित किया गया

है। मुख्य सलाहकार के कार्यालय ने पुष्टि की है कि ऑपरेशन पूरे जोरों पर है, साथ ही कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जा रहे हैं। इस बीच, पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के नेतृत्व वाली विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने अंतरिम सरकार से बढ़ती भीड़ संस्कृति को नियंत्रित करने और शांति बहाल करने की अपील की है।

बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार मस्कट में एस जयशंकर से कर सकते हैं मुलाकात : रिपोर्ट

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार में विदेश मामलों के सलाहकार तौहीद हुसैन जल्द विदेश मंत्री एस. जयशंकर से मुलाकात कर सकते हैं। दोनों नेताओं की मुलाकात अगले सप्ताह मस्कट में आयोजित होने वाले हिंद महासागर सम्मेलन के दौरान हो सकती है। यह जानकारी सोमवार को ढाका की स्थानीय मीडिया ने दी। बांग्लादेश के प्रमुख बंगाली दैनिक प्रोथोम एलो ने बताया, राजनयिक सूत्रों के अनुसार, इस बैठक के दौरान बांग्लादेश दोनों देशों के बीच संबंधों में तनाव को रोकने के उद्देश्य से एक संदेश देना चाहेगा। 8वां हिंद महासागर सम्मेलन 16-17 फरवरी को मस्कट, ओमान में होगा। इसका आयोजन ओमान के विदेश मंत्रालय के सहयोग से इंडिया फाउंडेशन कर रहा है। इस वर्ष सम्मेलन का विषय, समुद्री साझेदारी के नए क्षितिज की यात्रा है। विदेश मंत्री जयशंकर और हुसैन की पिछली मुलाकात सितंबर में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के दौरान हुई थी। यह अगस्त 2024 में पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के पद से हटने के बाद भारत और बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के बीच पहली उच्च स्तरीय बातचीत थी। बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद से भारत दोनों पड़ोसी देशों के बीच संबंधों को सामान्य बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। वहीं ढाका की वर्तमान सरकार बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समुदाय को सुरक्षा नहीं देने के कारण आलोचना का शिकार होना पड़ रहा है।

निशांत के राजनीति में आने का विरोध शुरु, कांग्रेस ने पोस्टर लगाकर कहा, राजा के बेटा राजा नहीं बनेगा

पटना। बिहार में सीएम नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार की राजनीति में एंट्री की चर्चा के बीच विरोध भी शुरू हो गया है। कांग्रेस ने पटना में बीजेपी दफ्तर के बाहर पोस्टर लगवाया है। इस पोस्टर में लिखा गया है कि राजा के बेटा राजा नहीं बनेगा। पोस्टर पर एक ओर नीतीश के बेटे निशांत कुमार की तस्वीर लगी है। वहीं दूसरी ओर पोस्टर लगवाने वाले रवि गोल्डन कुमार की फोटो लगी है। निशांत की तस्वीर के नीचे तीर का निशाना है, वहीं गोल्डन कुमार के नीचे कांग्रेस पार्टी का चिन्ह है। वहीं राजद प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा है बीजेपी अपने समर्थकों से माहौल बनवा रही है। ये पोस्टर भी वहीं लोग लगवा रहे हैं। इधर, जेडीयू और बीजेपी नेता मामले में कुछ भी बोलने से बच रहे हैं। निशांत के जेडीयू में आने की चर्चा पिछले साल से ही हो रही है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, कुछ नेता भी चाह रहे हैं कि वे राजनीति में आएं। हालांकि, पार्टी के बड़े नेता लगातार इस तरह की संभावनाओं को खारिज करते रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले भी निशांत की राजनीति में आने की चर्चा ने जोर पकड़ा था।

मध्यप्रदेश में आज से फिर लौटेगी सर्दी, राजस्थान में तीन दिन बाद बदलेगा मौसम

-भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन और जबलपुर में पारा आएगा नीचे

नई दिल्ली। देश के पहाड़ी इलाकों जम्मू-कश्मीर में बीते दो दिन से बारिश और बर्फबारी का दौर जारी है। इससे मैदानी इलाकों में ठंड बढ़ गई है। मध्यप्रदेश में 13 फरवरी से फिर एक बार ठंड का दौर शुरु होगा। दो दिन तक पारे में 2 से 3 डिग्री की गिरावट होगी। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन और जबलपुर में पारा 10 डिग्री से नीचे जा सकता है। वहीं राजस्थान में 3 दिन बाद मौसम बदलेगा। बादल छा सकते हैं। फिलहाल रात का टेम्प्रेचर बढ़ने से सर्दी में कमी आई है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 24 घंटे में कश्मीर के कुछ इलाकों में बर्फबारी-बारिश की संभावना है। मध्यप्रदेश में 13 फरवरी से सर्दी का एक और दौर आएगा। दो दिन तक पारे में 2 से 3 डिग्री की गिरावट होगी। प्रदेश के 5 बड़े शहर भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन और जबलपुर में पारा 10 डिग्री से नीचे जा सकता है। अभी प्रदेश में रातें ज्यादा ठंडी नहीं है। सुबह और रात में ही हल्की ठंड पड़ रही है। वहीं राजस्थान के कई शहरों में रात में सर्दी थोड़ी कम हुई है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक 15 फरवरी तक मौसम इसी तरह का रहेगा। जबकि 16-17 फरवरी से मौसम में फिर बदलाव हो सकता है। कुछ जगह बादल छा सकते हैं। जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर के बाद अब जयपुर में भी दिन का अधिकतम तापमान 30 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। हरियाणा में पश्चिमी विक्षोभ के कारण फिर मौसम बदलने जा रहा है। 14 से 16 फरवरी के बीच बूंदाबांदी के आसार हैं। इससे गर्मी से राहत मिलेगी। यमुनानगर, रोहतक, फरीदाबाद, पलवल, महेंद्रगढ़, नारनौल और गुरुग्राम सबसे गर्म रहे। वहीं हिसार में बढ़ रहे तापमान से थोड़ी राहत मिली है।

दिल्ली पुलिस कमिश्नर पत्र लिख, अमानतुल्लाह खान ने बताया....मैं भागा नहीं हूं

नई दिल्ली। दिल्ली के जामिया नगर में पुलिस टीम पर कथित रूप से हमला करने के आरोप में एफआईआर दर्ज होने के बाद आप नेता और विधायक अमानतुल्लाह खान ने दिल्ली पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखा है। अमानतुल्लाह ने अपने पत्र में लिखा है, मैं अपने विधानसभा क्षेत्र में हूं, मैं कहीं भागा नहीं हूं। दिल्ली पुलिस के कुछ लोग मुझे झूठे मामले में फंसा रहे हैं। जिस व्यक्ति को दिल्ली पुलिस गिरफ्तार करने आई थी, उस शख्स को पहले ही जमानत मिल चुकी है। जब उस व्यक्ति ने अपने कागजात दिखाए, तब पुलिस अपनी गलती छिपाने के लिए मुझे झूठे मामले में फंसा रही है। सीबीआई ने दिल्ली परिवहन विभाग के छह अधिकारियों को भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी के आरोप में गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बताया कि आप की हार के बाद राजधानी में यह पहली बड़ी कार्रवाई है।

महाकुंभ में ट्रेनों में बढ़ी भीड़ के चलते रेल मंत्री ने संभाली कमान, कर रहे मॉनिटरिंग

नई दिल्ली। महाकुंभ स्नान करने देशभर से श्रद्धालु अपने साधनों के अलावा ट्रेनों से पहुंच रहे हैं। भारतीय रेलवे महाकुंभ के लिए 7000 से ज्यादा ट्रेनें चला रहा है। इसके बावजूद श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। हाल ही में रेल मंत्रालय में बने वार रूम की कमान स्वयं रेल मंत्री ने संभाल ली है। आखिर ऐसी वजह क्या है? रेल मंत्रालय ने प्रयागराज स्टेशनों में भीड़ को देखते हुए वार रूम बनाया है, जहां से लाइव मोनिटरिंग की जा रही है। पिछले कुछ दिनों से देश के स्टेशनों से प्रयागराज जाने वालों की भीड़ बढ़ती ही जा रही है। भीड़ बढ़ने और सोशल मीडिया में दिग्भ्रमित करने वाली खबरों को देखते हुए रेल मंत्री को स्वयं मोर्चे पर उतरना पड़ा है। वह खुद वाररूम में मोनिटरिंग कर रहे हैं। दिन में कई बार वहां जाकर खुद प्रयागराज के स्टेशनों का हाल देखते हैं और जरूरी निर्देश देते हैं। इतना ही नहीं रेल मंत्रालय रोजाना प्रयागराज से चलने वाली ट्रेनों और यात्रियों के संबंध में बुलेटिन जारी कर रहा है। महाकुंभ में जाने वाले श्रद्धालुओं को किसी तरह की परेशानी न हो, इसे ध्यान रखते हुए रेलवे कर्मचारी और अधिकारी 24 घंटे निगरानी और व्यवस्था में लगे हैं।

दुनिया के सबसे भ्रष्ट देशों की सूची जारी, भारत में बढ़ा भ्रष्टाचार का स्तर

पाकिस्तान की रैंक 135वीं तो श्रीलंका 121वें स्थान पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने 2024 का भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (सीपीआई) जारी किया है, जिसमें दुनिया भर के 180 देशों और क्षेत्रों को भ्रष्टाचार के स्तर पर रैंक दी गई है। यह रिपोर्ट देशों को 0 से लेकर 100 अंक के बीच रैंक देती है। 0 अंक वाले देश सबसे भ्रष्ट माने जाते हैं, जबकि 100 अंक वाले देश को पूरी तरह पारदर्शी माना जाता है। 2024 में भारत की रैंकिंग 96वें स्थान पर थी, जो कि 2023 की तुलना में तीन स्थान नीचे है। भारत को इस साल 100 में से 38 अंक मिले हैं, जबकि 2023 में यह आंकड़ा 39 था। 2022 में भारत को 40 अंक मिले थे, जिसका मतलब है कि भारत में पिछले कुछ सालों में भ्रष्टाचार के स्तर में मामूली वृद्धि हुई है। 2024 की इस रैंकिंग में भारत का प्रदर्शन कमजोर रहा है, इससे पता चलता है कि भ्रष्टाचार की समस्या देश में अभी भी गंभीर है।

भारत के पड़ोसी देशों की स्थिति भी निराशाजनक है। पाकिस्तान की रैंक 135वीं है, जो कि बेहद खराब स्थिति है। श्रीलंका 121वें स्थान पर है, जो राजनीतिक और आर्थिक संकटों के कारण भ्रष्टाचार के उच्च स्तर को दर्शाता है। वहीं, बांग्लादेश भी निचे है, जो 149वीं रैंक पर है। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि दक्षिण एशिया के देशों में भ्रष्टाचार की समस्या बहुत गंभीर बनी हुई है। चीन इस साल 76वां पर है, जो कि कुछ हद तक बेहतर है। चीन में भ्रष्टाचार के खिलाफ कुछ कदम उठाए गए हैं, लेकिन फिर भी यह समस्या पूरी तरह से हल नहीं हो पाई है।

2024 के सीपीआई में यह देखा गया है कि भ्रष्टाचार की समस्या वैश्विक स्तर पर बढ़ी है। रिपोर्ट के मुताबिक दो तिहाई से ज्यादा देशों को 100 में से 50 से कम अंक मिले हैं, जिससे यह साफ होता है कि भ्रष्टाचार एक बड़ी वैश्विक चुनौती है। वैश्विक औसत भी 43 अंक पर स्थिर है, जो पिछले कई सालों से बना हुआ है। इस स्थिति का असर दुनिया के करोड़ों लोगों पर पड़ रहा है, क्योंकि भ्रष्टाचार मानव अधिकारों को कमजोर कर रहा है और विकास को प्रभावित कर रहा है।

रिपोर्ट में एक और अहम बिंदु पर ध्यान दिया गया है, और वह है वैश्विक हीटिंग। दुनिया भर में भ्रष्टाचार के कारण देशों में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी लाने और पर्यावरणीय संकटों से निपटने के लिए जरूरी कदमों को अमल में नहीं लाया जा रहा है। यह स्थिति वैश्विक तापमान वृद्धि और पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ावा दे रही है, जो कि दुनिया के लिए बड़ा खतरा है।

2024 की रैंकिंग में डेनमार्क को सबसे अधिक अंक प्राप्त हुए हैं यानी वह सबसे पारदर्शी देश है। इसके बाद फिनलैंड और सिंगापुर हैं। ये देश भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त उपायों और पारदर्शिता के कारण शीर्ष स्थान पर रहे हैं। वहीं, सबसे खराब स्थिति वाले देशों में सोमालिया, दक्षिण सूडान और

सीरिया शामिल हैं, जिनकी रैंकिंग सबसे नीचे है।

भारत की रैंकिंग में गिरावट यह दर्शाती है कि देश में भ्रष्टाचार पर काबू पाने के लिए अभी और प्रयास करने की जरुरत है। सरकारी नीतियों में पारदर्शिता, जवाबदेही और कड़ी निगरानी करना जरुरी है ताकि लोगों का विश्वास बढ़े और भ्रष्टाचार की समस्या को समाप्त किया जा सके।

मैं उन्हें मारकर डॉन बनना चाहता हूं, योगी को मारने की धमकी देने वाले युवक का बयान

मुरैना (ईएमएस)। मध्य प्रदेश के मुरैना जिले के एक गांव के 20 वर्षीय युवक ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जान से मारने की धमकी दी है। घटना तब सामने आई जब युवक ने सोशल मीडिया के द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के विजिलेंस विभाग का फोन नंबर पाकर कॉल कर दिया। युवक ने फोन पर अधिकारियों से कहा कि वहां सीएम योगी को मारना चाहता है, ताकि वह डॉन बन सके। युवक ने फोन पर यूपी प्रशासन के अधिकारियों से कहा कि मेरी योगी आदित्यनाथ से बात करवा दीजिए। जब अधिकारियों ने पूछा कि वह ऐसा क्यों करना चाहता है, तब युवक ने जवाब दिया, मैं उन्हें मारकर डॉन बनना चाहता हूं। धमकी की सूचना मिलते ही उत्तर प्रदेश पुलिस ने तुरंत कार्रवाई की और एसटीएफ की दो टीमों को मुरैना भेजा। मंगलवार देर शाम जब टीम युवक के गांव पहुंची, तब उसके घर पर ताला लगा मिला। करीब 10 घंटे की तलाश के बाद युवक को पकड़ गया। युवक ने बताया कि यह सब सिर्फ मजाक में किया था। युवक ने बताया कि वह अक्सर फोन पर धमकियां देता है और कुछ ग्रामीणों ने कहा कि वह मानसिक रूप से अस्वस्थ है। दिलचस्प बात यह है कि आरोपी खुद ही थाने पहुंच गया और मुरैना पुलिस को पूरे मामले की जानकारी दी। थाने के टीआई ने यूपी एसटीएफ के अधिकारियों को सूचित किया कि जिस युवक की तलाश थी, वह अब थाने में मौजूद है। इस घटना ने स्थानीय लोगों में भी चर्चा का विषय बना दिया है, क्योंकि कुछ ग्रामीणों ने बताया कि युवक अक्सर इसतरह फोन कॉल करता है।

आंध्र प्रदेश में महिलाओं के लिए वर्क फॉम होम का नियम लागू करेगी नायडू सरकार

अमरावती (एजेंसी)। देश में सप्ताह में 90 घंटे काम के बहस के बीच आंध्र प्रदेश सरकार महिलाओं के लिए वर्क फ्रॉम होम का नियम लागू करने की तैयारी में है। मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने इसकी घोषणा 11 फरवरी को पोस्ट में की। हालांकि सीएम नायडू ने योजना को कैसे लागू किया जाएगा, इसके लिए कोई प्लान नहीं बताया है। सीएम नायडू ने अपनी पोस्ट में सबसे पहले मैं साइंस और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं और युवतियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला और बालिका विज्ञान दिवस की बधाई देता हूं। आज हम लोग उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाते हैं। हमारी सरकार महिलाओं को इन क्षेत्रों में समान मौके सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने लिखा कि कोविड 19 महामारी के दौरान काम करने के तरीकों में बड़ा बदलाव आया है। तकनीकी के कारण वर्क फ्रॉम होम करना आसान हो गया है।

रिमोट वर्क, कोवर्किंग स्पेस (सीडब्ल्यूएस) और नेबरहुड वर्कस्पेस (एनडब्ल्यूएस) जैसी व्यवस्थाएं बिजनेस और काम करने वाले लोगों को अधिक बेहतर साबित होगा। साथ ही इससे काम की उत्पादकता भी बढ़ेगी। सीएम ने कहा कि इन पहल की वजह से वर्क और लाइफ को बैलेंस करने में मदद मिलेगी। इस मीनिंग फूल बनाने के लिए राज्य सरकार योजना पर काम कर रही है। आंध्र प्रदेश आईटी और जीसीसी नीति 4.0 इस दिशा में गेम-चेंजिंग कदम है। हमारी सरकार हर शहर, कस्बे और मंडल में आईटी ऑफिस स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन दे रहे हैं। साथ ही आईटी और जीसीसी कंपनियों का समर्थन कर भी कर रहे हैं, ताकि रोजगार उत्पन्न हो सके।

लालू के जंगलराज पर नीतीश का तंज....2005 से पहले कौन लड़का-लड़की आराम से रात 11 बजे तक बाहर घूमता था

-दो बार राजद के साथ जाकर हम बहुत बड़ी गलती किए

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना के बापू सभागार में बुधवार को संत रविदास की जयंती धूमधाम से मनाई गई है। कार्यक्रम में पहुंचे सीएम नीतीश कुमार ने कहा कि हमारी सरकार ने शुरुआत से ही अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए काफी काम किया। पहले वाला कोई कुछ करता था जी, यह सब हमलोग साथ में आने के बाद किए हैं।

सीएम ने राजद के साथ जाने पर कहा कि बीच में हम ही लोग जो दो बार डेढ़ साल अलग हुए। इसके बाद हमें पता चला कि ये लोग कभी कुछ नहीं करेगा। 2005 से पहले क्या होता था। शाम में कोई घर से बाहर निकलता था। अब बताइए लोग कितने देर तक बाहर घूमते हैं। रात में 10ः00 बजे

11:00 तक लड़का-लड़की सभी लोग आराम से बाहर घूमते हैं।

मुख्यमंत्री नीतिश ने पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपे ी का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी सरका : में केंद्रीय मंत्री थे। उन्होंने बिहार का मुख ्मंत्री बनाया। उस समय से ही सारा काम मि ाकर कर रहा हूं। अभी भी हम सभी जगह घूम रहे हैं। एक-एक चीज को देख रहे हैं।

वहीं, डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने कहा कि गांधी परिवार सोचता है कि कोई और इस देश का वित्त मंत्री या प्रधानमंत्री नहीं बने। लेकिन, गांधी परिवार को पता होना चाहिए कि देश में लोकतंत्र है, और लोकतंत्र में जनता तय करती है कि प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री कौन बनेगा। मंत्री अशोक चौधरी ने कहा कि आजादी के बाद किसी राज्य के दलित मुख्यमंत्री ने दलितों के लिए इतना काम नहीं किया, जितना काम नीतीश ने दलितों के लिए किया है। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय ने लोगों को संबोधित कर संत रविदास का जिक्र कर कहा कि सीएम नीतिश की ओर से दलितों के लिए काफी काम किया गया है। उन्होंने दलितों के विकास को लेकर कई योजनाएं चलाई है।

समारोह का आयोजन करवा रहे पूर्व मंत्री जनक राम ने कहा कि बिहार के विकास मित्र सहित संत रविदास के अनुयायी बड़ी संख्या में शामिल हुए हैं। संत रविदास के भक्तों में हर जाति के अनुयायी हैं।

चार साल बाद पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के बेटे अभिजीत ने की कांग्रेस में घर वापसी

कोलकाता (एजेंसी)। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के बेटे अभिजीत मुखर्जी ने चार साल बाद घर वापसी करते हुए कांग्रेस में शामिल हुए है। बुधवार को मुखर्जी फिर कांग्रेस में शामिल हो गए। 2021 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद वे तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए थे। 2012 और 2014 में जंगीपुर से सांसद रहे मुखर्जी 2019 में लोकसभा चुनाव में हार गए थे। बता दें कि उनकी बहन शर्मिष्ठा मुखर्जी ने हाल में ही कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ मोर्चा खोल रखा था। लेकिन अभिजीत के कांग्रेस में शामिल होने के बाद पार्टी ने राहत की सांस ली है।

65 वर्षीय अभिजीत बंगाल कांग्रेस मुख्यालय बिधान भवन में राज्य प्रभारी गुलाम अहमद मीर और प्रदेश अध्यक्ष शुभंकर सरकार की मौजूदगी में कांग्रेस में शामिल हुए। फिर से कांग्रेस जॉइन करने के बाद उन्होंने कहा कि वह एक सिपाही के रूप में पार्टी में शामिल हुए हैं और पार्टी नेतृत्व के निर्देशों के अनुसार ही काम करुंगा। प्रदेश अध्यक्ष सरकार ने कहा कि अभिजीत के कांग्रेस

जॉइन करने से पार्टी को मजबूती मिलेगी।

अभिजीत पेशे से एक इंजीनियर हैं। राजनीति में आने से पहले उन्होंने बड़ी कॉर्पोरेट फर्मों में काम किया। प्रणब मुखर्जी के राष्ट्रपति बनने के बाद अभिजीत 2012 के उपचुनाव में बंगाल के जंगीपुर से सांसद बने थे। 2014 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी की लहर के बाद भी उन्हें जीत मिली थी। मगर वह 2019 के चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के खलीलुर रहमान से हार गए। यह उनके राजनीतिक जीवन का एक बड़ा मोड़ था। 2021 के विधानसभा चुनाव में टीएमसी की जीत के बाद उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। तब उन्होंने बीजेपी को रोकने का श्रेय ममता बनर्जी को देकर कांग्रेस पर उपेक्षा करने का आरोप लगाया था।

टीएमसी में भी अभिजीत संगठन या सरकार में कोई बड़ी भूमिका में दिखाई नहीं दिए। मुखर्जी अपनी विवादित बयानों को लेकर सुर्खियों में रहे हैं। उन्होंने 2012 में निर्भया कांड के बाद देश भर में हो रहे प्रदर्शन में शामिल महिलाओं को डेंटेड एंड पेंटेड कहकर एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया था। हालांकि आलोचना के बाद उन्होंने सार्वजनिक तौर से माफी भी मांगी थी।

भारतीय सैनिकों के कथित अपमान पर राहुल गांधी तलब, अगली सुनवाई 24 मार्च को

लखनऊ (एजेंसी)। उप्र की राजधानी लखनऊ की एक अदालत ने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान कथित तौर पर भारतीय सैनिकों का कथित रुप से अपमान करने वाला बयान देने के मामले में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं सांसद राहुल गांधी को तलब किया है। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (एसीजेएम एल) आलोक वर्मा ने मामले की अगली सुनवाई के लिए 24 मार्च की तारीख तय की है। इससे पहले सीमा सड़क संगठन के सेवानिवृत्त निदेशक (भारतीय सेना में कर्नल के समकक्ष) उदय शंकर श्रीवास्तव की ओर से अधिवक्ता विवेक तिवारी ने राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि की याचिका दायर की थी।

अपनी याचिका में उन्होंने कहा कि 16 दिसंबर 2022 को राहुल गांधी ने 'भारत जोड़ो' यात्रा के दौरान मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए नौ दिसंबर (2022) को अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर भारत तथा चीनी सेना के बीच हुई झड़प का जिक्र किया। उन्होंने दावा किया कि राहुल ने कहा, ''लोग भारत जोड़ो यात्रा के बारे में बहुत कुछ पूछेंगे, लेकिन चीनी सैनिकों द्वारा हमारे सैनिकों की पिटाई के बारे में एक बार भी नहीं पूछेंगे।÷ विदित हो कि नौ दिसंबर को सीमा पर चीन और भारत की सेनाओं के बीच हुए विवाद के बाद 12 दिसंबर को भारतीय सेना ने आधिकारिक बयान जारी कर कहा था कि चीनी सेना भारतीय सीमा पर अतिक्रमण कर रही था, जिसका भारतीय सेना ने करारा जवाब दिया और इससे चीनी सेना वापस अपने इलाके में चली गई।

इसमें यह भी कहा गया था कि इस झड़प में दोनों पक्षों को मामूली चोटें आईं। परिवाद में आरोप लगाते हुए कहा गया कि राहुल गांधी के झूठे बयान से परिवादी को आघात पहुंचा है और लोग वादी के ऊपर भारतीय सेना को लेकर कटाक्ष करते हैं। अधिवक्ता ने कहा मामले में अदालत ने गांधी को तलब किया है और अगली तारीख 24 मार्च तय की है।

पीएम मोदी ट्रंप को सौंपेंगे लॉरेंस के भाई समेत इन 12 गैंगस्टरों की कुंडली

नई दिल्ली। अमेरिका में छिपे गैंगस्टरों की शामत आने वाली है, जो अमेरिका में बैठकर भारत में कांड करते हैं। मोदी सरकार ने उनकी कुंडली तैयार कर ली है। एक्शन का पूरा प्लान भी बन गया है। पीएम मोदी अमेरिका पहुंचेंगे तो गैंगस्टरों का काला चिट्ठा भी पहुंच जाएगा। गृह मंत्रालय के निर्देश पर भारत की सुरक्षा एजेंसियों ने अमेरिका में बैठे 12 गैंगस्टरों की लिस्ट और कुंडली तैयार कर ली है। सूत्रों का कहना है कि पीएम मोदी जब अमेरिका में रहेंगे तो ट्रंप प्रशासन से यह लिस्ट शेयर की जा सकती है। अमेरिका को उन गैंगस्टरों की कुंडली से वाकिफ कराने का मकसद उन सभी पर एक्शन है। सूत्रों की मानें तो सुरक्षा एजेंसियों को उम्मीद है कि इससे सफलता मिलेगी। उन अपराधियों को भारत लाने का रास्ता भी साफ होगा। अब सवाल है कि आखिर इसमें किन-किन गैंगस्टरों के नाम हैं। भारत सरकार का यह कदम ऐसे वक्त में आया है, पिछले साल दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ था। पिछले साल भारत-अमेरिका के बीच एक समझौता हुआ था। उसमें दोनों देश में जो अपराधी छिपे हैं, उस पर शिकंजा कसने के लिए सहयोग की बात थी। पिछले 8 महीने से भारत और अमेरिका के सीनियर अधिकारियों के बीच इस मुद्दे पर कई अहम बैठक हो चुकी है। इस संधि के तहत भारत ने भी अमेरिका को इसी तरीके की जानकारी मुहैया करवाई है। बीते दिनों एनसीपी नेता और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दीकी की हत्या कर दी गई थी। इस मामले के मास्टरमाइंड गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई को पिछले साल नवंबर में अमेरिका में गिरफ्तार किया गया था। इमिग्रेशन अधिकारियों ने उसे फर्जी दस्तावेजों के साथ यात्रा करते हुए पाया था। वह तब से अमेरिका की जेल में है। पिछले महीने मुंबई की एक विशेष अदालत ने बाबा सिद्दीकी की हत्या के मामले में अनमोल और दो अन्य वांछित आरोपियों के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया था।

दिल्ली का सीएम तलाशने भाजपा में मंथन, नड्डा और शाह ने 1 घंटे लगाया दिमाग, रिजल्ट शून्य

नई दिल्ली(ईएमएस)। दिल्ली की जनता ने भाजपा के हाथ में सत्ता की चाबी सौंपी है। इसका मुखिया कौन होगा ये भाजपा को तय करना है। करीब 4 दिनों से इसी पर मंथन हो रहा है लेकिन सीएम कौन होगा इसका जवाब अभी तक नहीं मिला है। बीती रात भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय मंत्री अमित शाह के बीच करीब एक घंटे विचार विमर्श हुआ लेकिन रिजल्ट शून्य ही रहा। हालांकि ये बात अलग है कि अंदर ही अंदर पार्टी ने सीएम का नाम तय कर लिया हो। सूत्रों की मानें तो अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की इस बैठक में मुख्यमंत्री के नामों पर चर्चा हुई है। इस दौरान दोनों के बीच दिल्ली में सरकार गठन और मुख्यमंत्री के संभावित नामों पर चर्चा हुई। मीटिंग में यह बात तय हुई कि दिल्ली सरकार के गठन पर फैसला 16 फरवरी के बाद होगा। हालांकि, भाजपा के विधायक दलों की बैठक भी 16 फरवरी के बाद ही होगी। सूत्रों का यह भी कहना है कि सीएम कौन होगा, इस पर दोनों के बीच चर्चा हुई है। जिस दिन विधायक दलों की बैठक होगी, उसमें ही सदन का नेता चुना जाएगा। वही दिल्ली का नया मुख्यमंत्री होगा। सीएम की रेस में प्रवेश वर्मा, रेखा गुप्ता, शिखा राय और मोहन सिंह बिष्ट समेत कई नाम हैं। बहरहाल, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अभी फांस और अमेरिका की यात्रा पर हैं। वहां से लौटने के बाद भाजपा के विधायक दल की बैठक होने की संभावना है।

लंदन, बैंकॉक जाने से महंगा हुआ महाकुंभ जाना, आसमान पर पहुंचा हवाई किराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाकुंभ में बढ़ती भीड़ और लोगों की जरुरत के चलते कंपनिया इसका फायदा उठा रही हैं। खासतौर से एयरलाइंस कंपनियां कुछ ज्यादा ही इसका फायदा उठाने की कोशिश कर रही हैं। यही वजह है कि लंदन, बैंकॉक जाने से भी ज्यादा महंगा महाकुंभ जाना हो गया है। मौजूदा समय में दिल्ली से प्रयागराज के लिए हवाई किराया 80,000 रुपये तक पहुंच चुका है, जबकि लंदन की एकतरफा टिकट मात्र 3100 रुपये में मिल रही है। सामान्य दिनों में दिल्ली से प्रयागराज का हवाई किराया केवल 3,000 से 5,000 रुपये के बीच होता है। दिल?ली ही नहीं मुंबई, चेन्नई, कोलकाता और बेंगलुरु जैसे अन्य प्रमुख शहरों से भी प्रयागराज जाने वाली उड़ानों के किराए में भारी उछाल देखा गया है। इन शहरों से प्रयागराज के लिए टिकट की कीमतें मुख्य स्नान पर्वों के दौरान 18,000 रुपये से 41,106 रुपये तक पहुंच गई हैं। चेन्नई से प्रयागराज की एकतरफा टिकट की कीमत हाल ही में 70,996 रुपये तक दर्ज की गई थी।

दिल्ली से प्रयागराज की हवाई यात्रा अब अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से भी महंगी हो गई है। लंदन और बैंकॉक की एकतरफा फ्लाइट टिकट की तुलना में दिल्ली से प्रयागराज की टिकट ज?यादा महंगी हो गई है। महाकुंभ के प्रमुख स्नान पर्वों जैसे मौनी अमावस्या (29 जनवरी), बसंत पंचमी (3 फरवरी), माघी पूर्णिमा (12 फरवरी) और महाशिवरात्रि (26 फरवरी) के दौरान हवाई किराए में अप्रत्याशित बढ़ोतरी दर्ज की गई है। उदाहरण के लिए, 31 जनवरी को दिल्ली से प्रयागराज की एकतरफा टिकट का किराया 33,590 रुपये था, जबकि सामान्य किराया मात्र 5,000 रुपये होता है। भुवनेश्वर से प्रयागराज की उड़ान का किराया भुवनेश्वर से बैंकॉक तक की उड़ान की कीमत से चार गुना अधिक है। भुवनेश्वर से प्रयागराज की उड़ान की कीमत 39,50[illegible] है, जबकि भुवनेश्वर से बैंकॉक की उड़ान की कीमत [illegible]3,538 से शुरू है। वहीं, सामान्य दिनों में इस मार्ग के उड़ानों की कीमत तीन से चार हजार तक से शुरू हो जाती है। वहीं, महाकुंभ समाप्त होने के बाद की टिकट बहुत सस्ती मिल रही हैं। अकासा एयर की टिकट 4,[illegible]00 से थोड़ी ज्यादा है तो इंडिगो 4,059-9,888 में टिकट उपलब्ध करा रही है। स्पाइसजेट 4,121-13,[illegible]42 में, एयर इंडिया, 4,201-24,906 तो एलायंस एयर 5,114-5,639 में टिकट उपलब्ध करा रही है।